Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा

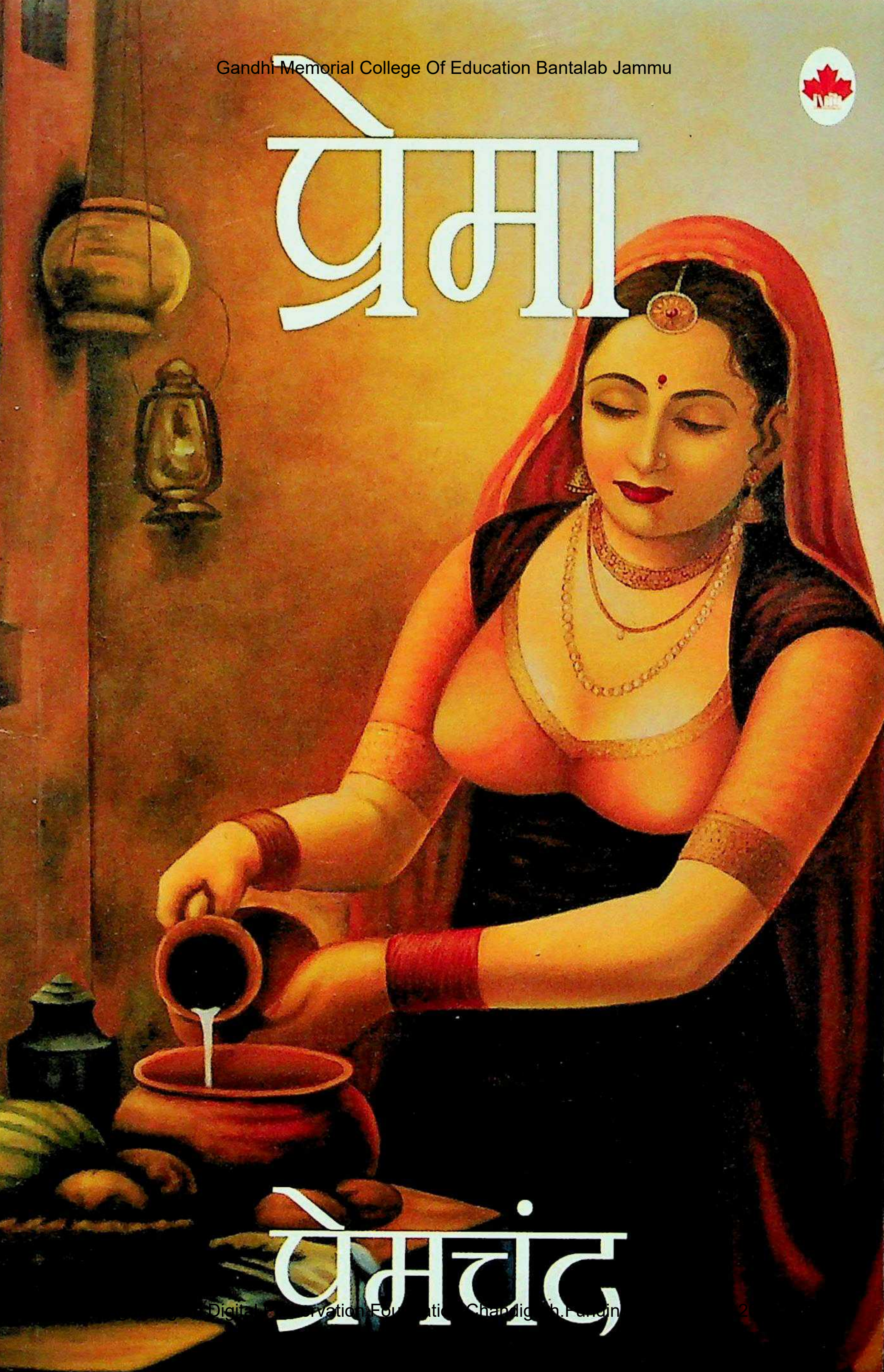

प्रेमचंद

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा

प्रेमचंद

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4527
Dated 19.3.2013

maple press

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
4527

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Reprint 2020

प्रेमा *by* Premchand

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this book may be reproduced in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording and or without permission of the publisher.

Published by

MAPLE PRESS PRIVATE LIMITED
office: A-63, Sector 58, Noida 201301, U.P., India
phone: +91 120 455 3581, 455 3583
email: info@maplepress.co.in
website: www.maplepress.co.in

Processed and Printed in India
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
ISBN: 978-93-89225-21-1

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

1. सच्ची उदारता	4
2. जलन बुरी बला है	13
3. झूठे मददगार	23
4. जवानी की मौत	29
5. अँय! यह गजरा क्या हो गया?	40
6. आज से कभी मंदिर न जाऊँगी	63
7. कुछ और बातचीत	73
8. तुम सचमुच जादूगर हो	82
9. विवाह हो गया	91
10. विरोधियों का विरोध	102
11. एक स्त्री के दो पुरुष नहीं हो सकते	116
12. शोकदायक घटना	121

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 1
सच्ची उदारता

संध्या का समय है, डूबने वाले सूर्य की सुनहरी किरणें रंगीन शीशों की आड़ से, एक अंग्रेजी ढंग पर सजे हुए कमरे में झाँक रही हैं जिससे सारा कमरा रंगीन हो रहा है। अंग्रेजी ढंग की मनोहर तस्वीरें, जो दीवारों से लटक रहीं है, इस समय रंगीन वस्त्र धारण करके और भी सुंदर मालूम होती है। कमरे के बीचों-बीच एक गोल मेज है जिसके चारों तरफ नर्म मखमली गद्दों की रंगीन कुर्सियाँ बिछी हुई है। इनमें से एक कुर्सी पर एक युवा पुरुष सर नीचा किये हुए बैठा कुछ सोच रहा है। वह अति सुंदर और रूपवान पुरुष है जिस पर अंग्रेजी काट के कपड़े बहुत भले मालूम होते है। उसके सामने मेज पर एक कागज है जिसको वह बार-बार देखता है। उसके चेहरे से ऐसा विदित होता है कि इस समय वह किसी गहरे सोच में डूबा हुआ है। थोड़ी देर तक वह इसी तरह पहलू बदलता रहा, फ़िर वह एकाएक उठा और कमरे से बाहर निकलकर बरांडे में टहलने लगा, जिसमें मनोहर फूलों और पत्तों के गमले सजाकर धरे हुए थे। वह बरांडे से फिर कमरे में आया और कागज का टुकड़ा उठाकर बड़ी बेचैनी के साथ इधर-उधर टहलने लगा। समय बहुत सुहावना था। माली फूलों की क्यारियों में पानी दे रहा था। एक तरफ साईस घोड़े को टहला रहा था। समय और स्थान दोनों ही बहुत रमणीक थे। परन्तु वह अपने विचार में ऐसा लवलीन हो रहा था कि उसे इन बातों की बिलकुल सुधि न थी। हाँ, उसकी गर्दन आप ही आप हिलाती थी और हाथ भी आप ही आप इशारे करते थे- जैसे वह किसी से बातें कर रहा हो। इसी बीच में एक बाइसिकिल फाटक के अंदर आती हुई दिखायी दी और एक गोरा-चिट्टा आदमी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोट पतलून पहने, ऐनक लगाये, सिगार पीता, जूते चरमर करता, उतर पड़ा और बोला, गुड ईवनिंग, अमृतराय।

अमृतराय ने चौंककर सर उठाया और बोले- ओ! आप हैं मिस्टर दाननाथ, आइए बैठिए। आप आज जलसे में न दिखायी दिए।

दाननाथ- कैसा जलसा। मुझे तो इसकी खबर भी नहीं।

अमृतराय- (आश्चर्य से) ऐं! आपको खबर ही नहीं। आज आगरा के लाला धनुषधारीलाल ने बहुत अच्छा व्याख्यान दिया और विरोधियों के दाँत खट्टे कर दिए।

दाननाथ- ईश्वर जानता है मुझे ज़रा भी खबर न थी, नहीं तो मैं अवश्य आता। मुझे तो लाला साहब के व्याख्यानों को सुनने का बहुत दिनों से शौक है। मेरा अभाग्य था कि ऐसा अच्छा समय हाथ से निकल गया। किस बात पर व्याख्यान था?

अमृतराय- जाति की उन्नति के सिवा दूसरी कौन-सी बात हो सकती थी? लाला साहब ने अपना जीवन इसी काम के हेतु अर्पण कर दिया है। आज ऐसा सच्चा देशभक्त और निष्कास जाति-सेवक इस देश में नहीं है। यह दूसरी बात है कि कोई उनके सिद्धांतों को माने या न माने, मगर उनके व्याख्यानों में ऐसा जादू होता है कि लोग आप ही आप खिँचे चले आते है। मैंने लाला साहब के व्याख्यानों को सुनने का आनंद कई बार प्राप्त किया है। मगर आज की स्पीच में तो बात ही और थी। ऐसा जान पड़ता है कि उनकी जबान में जादू भरा है। शब्द वही होते है जो हम रोज काम में लाया करते हैं। विचार भी वही होते हैं जिनकी हमारे यहाँ प्रतिदिन चर्चा रहती है। मगर उनके बोलने का ढंग कुछ ऐसा अपूर्व है कि दिलों को लुभा लेता है।

दाननाथ को ऐसी उत्तम स्पीच को न सुनने का अत्यंत शोक हुआ। बोले- यार, मैं जन्म का अभागा हूँ। क्या अब फिर कोई व्याख्यान न होगा?

अमृतराय- आशा तो नहीं हैं क्योंकि लाला साहब लखनऊ जा रहे हैं, उधर से आगरा को चले जाएंगे। फिर नहीं मालूम कब दर्शन दें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाननाथ- अपने कर्म की हीनता की क्या कहूँ। आपने उस स्पीच की कोई नकल की हो तो ज़रा दीजिए। उसी को देखकर जी को ढारस दूँ।

इस पर अमृतराय ने वही कागज का टुकड़ा जिसको वे बार-बार पढ़ रहे थे दाननाथ के हाथ में रख दिया और बोले- स्पीच के बीच-बीच में जो बाते मुझको सवार हो जाती है तो आगा-पीछा कुछ नहीं सोचते, समझाने लगे- मित्र, तुम कैसी लड़कपन की बातें करते हो। तुमको शायद अभी मालूम नहीं कि तुम कैसा भारी बोझ अपने सर पर ले रहे हो। जो रास्ता अभी तुमको साफ दिखायी दे रहा है वह काँटो से ऐसा भरा है कि एक-एक पग धरना कठिन है।

अमृतराय- अब तो जो होना हो सो हो। जो बात दिल में जम गयी वह तम गयीं। मैं खूब जानता हूँ कि मुझको बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मगर आज मेरा हिसाब ऐसा बढ़ा हुआ है कि मैं बड़े से बड़ा काम कर सकता हूँ और ऊँचे से ऊँचे पहाड़ पर चढ़ सकता हूँ।

दाननाथ- ईश्वर आपके उत्साह को सदा बढ़ावे। मैं जानता हूँ कि आप जिस काम के लिए उद्योग करेंगे उसे अवश्य पूरा कर दिखायेंगे। मैं आपके इरादों में विघ्न डालना कदापि नहीं चाहता। मगर मनुष्य का धर्म है कि जिस काम में हाथ लगावे पहले उसका ऊँच-नीच खूब विचार ले। अब प्रच्छन बातों से हटकर प्रत्यक्ष बातों की तरफा आइए। आप जानते हैं कि इस शहर के लोग, सब के सब, पुरानी लकीर के फकीर हैं। मुझे भय है कि सामाजिक सुधार का बीज यहाँ कदापि फल-फूल न सकेगा। और फिर, आपका सहायक भी कोई नजर नहीं आता। अकेले आप क्या बना लेंगे। शायद आपके दोस्त भी इस जोखिम के काम में आपका हाथ न बँटा सके। चाहे आपको बुरा लगे, मगर मैं यह जरूर कहूँगा कि अकेले आप कुछ भी न कर सकेंगे।

अमृतराय ने अपने परम मित्र की बातों को सुनकर सा उठाया और बड़ी गंभीरता से बोले- दाननाथ। यह तुमको क्या हो गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या मैं तुम्हारे मुँह से ऐसी बोदेपन की बातें सुन रहा हूँ। तुम कहते हो अकेले क्या बना लोगे? अकेले आदमियों की कारगुजारियों से इतिहास भरे पड़े हैं। गौतम बुद्ध कौन था? एक जंगल का बसने वाला साधु, जिसका सारे देश में कोई मददगार न था। मगर उसके जीवन ही में आधा हिन्दोस्तान उसके पैरों पर सर धर चुका था। आपको कितने प्रमाण दूँ। अकेले आदमियों से कौमों के नाम चल रहे हैं। कौमें मर गयी हैं। आज उनका निशान भी बाकी नहीं। मगर अकेले आदमियों के नाम अभी तक जिंदा है। आप जानते हैं कि प्लेटों एक अमर नाम है। मगर आप में कितने ऐसे हैं जो यह जानते हों कि वह किस देश का रहने वाला है।

दाननाथ समझदार आदमी थे। समझ गये कि अभी जोश नया है और समझाना बुझाना सब व्यर्थ होगा। मगर फिर भी जी न माना। एक बार और उलझना आवश्यक अच्छी जान पड़ी मैंने उनको तुरंत नकल कर लिया। ऐसी जल्दी में लिखा है कि मेरे सिवा कोई दूसरा पढ़ भी न सकेगा। देखिए हमारी लापरवाही को कैसा आड़े हाथों लिया है:

सज्जनों। हमारी इस दुर्दशा का कारण हमारी लापरवाही है। हमारी दशा उस रोगी की-सी हो रही है जो औषधि को हाथ में लेकर देखता है मगर मुँह तक नहीं ले जाता। हाँ भाइयों, हम आँखे रचाते है मगर अंधे हैं, हम कान रखते हैं मगर बहरे हैं, हम जबान रखते हैं मगर गूँगे हैं। परंतु अब वह दिन नहीं रहे कि हमको अपनी जीत की बुराइयाँ न दिखायी देती हों। हम उनको देखते हैं और मन में उनसे घृणा भी करते हैं। मगर जब कोई समय आ जाता है तो हम उसी पुरानी लकीर पर जाते हैं और नई बातों को असंभव और अनहोनी समझकर छोड़ देते हैं। हमारे डोंगे का पार लगाना, जब कि मल्लाह ऐसे बाद और कादर है, कठिन ही नहीं प्रत्युत दुस्साध्य है।

अमृतराय ने बड़े ऊँचे स्वरों में उस कागज को पढ़ा। जब वह चुप हुए तो दाननाथ ने कहा- निःसंदेह बहुत ठीक कहा है। हमारी दशा के अनुकूल ही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमृतराय- मुझको रह-रहकर अपने ऊपर क्रोध आता है कि मैंने सारी स्पीच क्यों न नकल कर ली। अगर कहीं अंग्रेजी स्पीच होती तो सबेरा होते ही सारे समाचार पत्रों में छप जाती। नहीं तो शायद कहीं खुलासा रिपोर्ट छपे तो छपे। (रुककर) तब मैं जलसे से लौटकर आया हूँ तब से बराबर वही शब्द मेरे कान में गूँज रहे है। प्यारे मित्र। तुम मेरे विचारों को पहले से जानते हो, आज की स्पीच ने उनको और भी मजबूत कर दिया है। आज से मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं अपने को जाति पर न्यौछावर कर दूँगा। तन, मन, धन सब अपनी गिरी हुई जाति की उन्नति के निमित्त अर्पण कर दूँगा। अब तक मेरे विचार मुझ ही तक थे पर अब वे प्रत्यक्ष होंगे। अब तक मेरा हदय दुर्बल था, मगर आज इसमें कई दिलों का बल आ गया है। मैं खूब जानता हूँ कि मैं कोई उच्च-पदवी नहीं रखता हूँ। मेरी जायदाद भी कुछ अधिक नहीं है। मगर मैं अपनी सारी जमा जथा अपने देश के उद्धार के लिए लगा दूँगा। अब इस प्रतिज्ञा से कोई मुझको डिगा नहीं सकता। (जोश से) ऐ थककर बैठी हुई कौम। ले, तेरी दुर्दशा पर आँसू बहाने वालों में एक दुखियारा और बढ़ा। इस बात का न्याय करना कि तुझको इस दुखियारे से कोई लाभ होगा या नहीं, समय पर छोड़ता हूँ।

यह कहकर अमृतराय जमीन की ओर देखने लगे। दाननाथ, जो उनके बचपन के साथी थे; उनके स्वभाव से भलीभांति परिचित थे कि जब उनको कोई धुन मालूम हुआ। बोले- अच्छा मैंने मान लिया कि अकेले लोगों ने बड़े-बड़े काम किये हैं और आप भी अपनी जाति का कुछ न कुछ भला कर लेंगे मगर यह तो सोचिये कि आप उन लोगों को कितना दुख पहुँचायेंगे जिनका आपसे कोई नाता है। प्रेमा से बहुत जल्द आपका विवाह होने वाला है। आप जानते हैं कि उसके माँ-बाप परले सिरे के कट्टर हिन्दू है। जब उनको आपकी अंग्रेजी पोशाक और खाने-पीने पर शिकायत है तो बतलाइए जब आप सामाजिक सुधार पर कमर बांधेंगे तब उनका क्या हाल होगा। शायद आपको प्रेमा से हाथ धोना पड़े।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाननाथ का यह इशारा कलेजे में चुभ गया। दो-तीन मिनट तक वह सन्नाटे में जमीन की तरफ ताकते रहे। जब सर उठाया तो आँखे लाल थीं और उनमें आँसू डबडबाये थे। बोले- मित्र, कौम की भलाई करना साधारण काम नहीं है। यद्यपि पहले मैंने इस विषय पर ध्यान न दिया था, फिर भी मेरा दिल इस वक्त ऐसा मजबूत हो रहा है कि जाति के लिए हर एक दुख भोगने को मैं कटिबद्ध हूँ। इसमें संदेह नहीं कि प्रेमा से मुझको बहुत ही प्रेम था। मैं उस पर जान देता था और अगर कोई समय ऐसा आता कि मुझको उसका पति बनने का आनंद मिलता तो मैं साबित करता कि प्रेम इसको कहते हैं। मगर अब प्रेमा की मोहनी मूरत मुझ पर अपना जादू नहीं चला सकती। जो देश और जाति के नाम पर बिक गया उसके दिल में कोई दूसरी चीज जगह नहीं पा सकती। देखिए यह वह फोटो है जो अब तक बराबर मेरे सीने से लगा रहता था। आज इससे भी अलग होता हूँ यह कहते-कहते तस्वीर जेब से निकली और उसके पुरजे-पुरजे कर डाले, 'प्रेमा को जब मालूम होगा कि अमृतराय अब जाति पर जान देने लगा, उसके दिन में अब किसी नवयौवना की जगह नहीं रही तो वह मुझे क्षमा कर देगी।'

दाननाथ ने अपने दोस्त के हाथों से तस्वीर छीन लेना चाही। मगर न पा सके। बोले- अमृतराय बड़े शोक की बात है कि तुमने उस सुन्दरी की तस्वीर की यह दशा की जिसकी तुम खूब जानते हो कि तुम पर मोहित है। तुम कैसे निठुर हो। यह वही सुंदरी है जिससे शादी करने का तुम्हारे वैकुंठवासी पिता ने आग्रह किया था और तुमने खुद भी कई बार बात हारी। क्या तुम नहीं जानते कि विवाह का समय अब बहुत निकट आ गया है। ऐसे वक्त में तुम्हारा इस तरह मुँह मोड़ लेना उस बेचारी के लिए बहुत ही शोकदायक होगा।

इन बातों को सुनकर अमृतराय का चेहरा बहुत मलिन हो गया। शायद वे इस तरह तस्वीर के फाड़ देने का कुछ पछतावा करने लगे। मगर जिस बात पर अड़ गये थे उस पर अड़े ही रहे। इन्हीं बातों में सूर्य अस्त हो गया। अंधेरा छा गया। दाननाथ उठ खड़े हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी बाइसिकिल संभाली और चलते-चलते यह कहा- मिस्टर राय! खूब सोच लो। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। आओ आज तुमको गंगा की सैर करा लायें। मैंने एक बजरा किराये पर ले रखा है। उस पर चाँदनी रात में बड़ी बहार रहेगी।

अमृतराय- इस समय आप मुझको क्षमा कीजिए। फिर मिलूँगा।

दाननाथ तो यह बातचीत करके अपने मकान को रवाना हुए और अमृतराय उसी अंधेरे में, बड़ी देर तक चुपचाप खड़े रहे। वह नहीं मालूम क्या सोच रहे थे। जब अंधेरा अधिक हुआ तो वह जमीन पर बैठ गये। उन्होंने उस तस्वीर के पुर्जे सब एक-एक करके चुन लिये। उनको बड़े प्यार से सीने में लगा लिया और कुछ सोचते हुए कमरे में चले गए।

बाबू अमृतराय शहर के प्रतिष्ठित रईसों में समझे जाते थे। वकालत का पेशा कई पुश्तों से चला आता था। खुद भी वकालत पास कर चुके थे। और यद्यपि वकालत अभी तक चमकी न थी, मगर बाप-दादे ने नाम ऐसा कमाया था कि शहर के बड़े-बड़े रईस भी उनका दाब मानते थे। अंग्रेजी कालिज में इनकी शिक्षा हुई थी और यह अंग्रेजी सभ्यता के प्रेमी थे। जब तक बाप जीते थे तब तक कोट-पतलून पहनते; तनिक डरते थे। मगर उनका देहांत होते ही खुल पड़े। ठीक नदी के समीप एक सुंदर स्थान पर कोठी बनवायी। उसको बहुत कुछ खर्च करके अंग्रेजी रीति पर सजाया। और अब उसी में रहते थे। ईश्वर की कृपा से किसी चीज की कमी न थी। धन-द्रव्य, गाड़ी-घोड़े सभी मौजूद थे।

अमृतराय को किताबों से बहुत प्रेम था। मुमकिन न था कि नयी किताब प्रकाशित हो और उनके पास न आवे। उत्तम कलाओं से भी उनकी तबीयत को बहुत लगाव था। गान-विद्या पर तो वे जान देते थे। गो कि वकालत पास कर चुके थे मगर अभी विवाह नहीं हुआ था। उन्होंने ठान लिया था कि जब वह वकालत खूब न चलने लगेगी तब तक विवाह न करूँगा। उस शहर के रईस लाला बदरी प्रसाद साहब उनको कई साल से अपनी इकलौती लड़की प्रेमा के वास्ते, चुन बैठे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा अति सुंदर लड़की थी और पढ़ने-लिखने, सीने-पिरोने में निपुण थी। अमृतराय के इशारे से उसको थोड़ी सही अंग्रेजी भी पढ़ा दी गयी थी जिसने उसके स्वभाव में थोड़ी-सी स्वतंत्रता पैदा कर दी थी। मुंशी जी ने बहुत कहने-सुनने से दोनों प्रेमियों को चिट्ठी पत्री लिखने की आज्ञा दे दी थी। और शायद आपस में तस्वीरों की भी अदला-बदली हो गयी थी।

बाबू दाननाथ अमृतराय के बचपन के साथियों में से थे। कालिज मे भी दोनों का साथ रहा। वकालत भी साथ पास की और दो मित्रों में जैसी सच्ची प्रीति हो सकती है वह उनमें थी। कोई बात ऐसी न थी जो एक दूसरे के लिए उठा रखे। दाननाथ ने एक बार प्रेमा को महताबी पर खड़े देख लिया था। उसी वक्त से वह दिल में प्रेमा की पूजा किया करता था। मगर यह बात कभी उसकी जबान पर नहीं आयी। वह दिल ही दिल में घुटकर रह जाता। सैंकड़ों बार उसकी स्वार्थ दृष्टि ने उसे उभारा था कि तू कोई चाल चलकर बदरी प्रसाद का मन अमृतराय से फेर दे, परंतु उसने हर बार इस कमीनेपन के खयाल को दबाया था। वह स्वभाव का बहुत निर्मल और आचरण का बहुत शुद्ध था। वह मर जाना पसंद करता मगर किसी को हानि पहुँचाकर अपना मनोरथ कदापि पूरा नहीं कर सकता था। यह भी न था कि वह केवल दिखाने के लिए अमृतराय से मेल रखता हो और दिल में उनसे जलता हो। वह उनके साथ सच्चे मित्र भाव का बर्ताव करता था।

आज भी, जब अमृतराय ने उससे अपने इरादे जाहिर किये तब उसने सच्चे दिल से उनको समझाकर ऊँच-नीच सुझाया। मगर इसका जो कुछ असर हुआ हम पहले दिखा चुके है। उसने साफ-साफ कह दिया कि अगर तुम रिर्फामरों की मंडली में मिलोगे तो प्रेमा से हाथ धोना पडेगा। मगर अमृतराय ने एक न सुनी। मित्र का जो धर्म है वह दाननाथ ने पूरा कर दिया। मगर जब उसने देखा कि यह अपने अनुष्ठान पर अड़े ही रहेंगे तो उसको कोई वजह न मालूम हुई कि मैं यह सब बातें बदरी प्रसाद से बयान करके क्यों न प्रेमा का पति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनने का उद्योग करूँ। यहाँ से वह यही सब बातें सोचते-विचारते घर पर आये। कोट-पतलून उतार दिया और सीधे-सादे कपड़े पहिन मुंशी बदरी प्रसाद के मकान को रवाना हुए। इस वक्त उसके दिल की जो हालत हो रही थी, बयान नहीं की जा सकती। कभी यह विचार आता कि मेरा इस तरह जाना, लोगों को मुझसे नाराज न कर दे। मुझे लोग स्वार्थी न समझने लगें। फिर सोचता कि कहीं अमृतराय अपना इरादा पलट दें और आश्चर्य नहीं कि ऐसा ही हो, तो मैं कहीं मुँह दिखाने योग्य न रहूँगा। मगर यह सोचते-सोचते जब प्रेमा की मोहनी मूरत आँख के सामने आ गयी। तब यह सब शंकाएँ दूर हो गयी और वह बदरी प्रसाद के मकान पर बातें करते दिखायी दिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 2
जलन बुरी बला है

लाला बदरी प्रसाद अमृतराय के बाप के दोस्तों में थे और अगर उनसे अधिक प्रतिष्ठित न थे तो बहुत हेठे भी न थे। दोनों में लड़के-लड़की के ब्याह की बातचीत पक्की हो गयी थी। और अगर मुंशी धनपतराय दो बरस भी और जीते तो बेटे का सेहरा देख लेते। मगर कालवश हो गये। और यह अरमान मन में लिये वैकुण्ठ को सिधारे। हाँ, मरते-मरते उनके बेटे को यह नसीहत थी कि मु॰ बदरी प्रसाद की लड़की से अवश्य विवाह करना। अमृतराय ने भी लजाते-लजाते बात हारी थी। मगर मुंशी धनपतराय को मरे आज पाँच बरस बीत चुके थे। इस बीच में उन्होंने वकालत भी पास कर ली थी और अच्छे खासे अंग्रेज बन बैठे थे। इस परिवर्तन ने पब्लिक की आँखो में उनका आदर घटा दिया था। इसके विपरीत बदरी प्रसाद पक्के हिन्दू थे। साल भर, बारहों मास, उनके यहाँ श्रीमद्भागवत की कथा हुआ करती थी। कोई दिन ऐसा न जाता कि भंडार में सौ पचास साधुओं का प्रसाद न बनता हो। इस उदारता ने उनको सारे शहर में सर्वप्रिय बना दिया था। प्रतिदिन भोर होते ही, वह गंगा स्नान को पैदल जाया करते थे ओर रास्ते में जितने आदमी उनको देखते सब आदर से सर झुकाते थे और आपस में कानाफूसी करते कि दुखियारों का यह दाता सदा फलता फूलता रहे।

यद्यपि लाला बदरी प्रसाद अमृतराय की चाल-ढाल को पसंद न करते थे और कई बेर उनको समझाकर हार भी चुके थे, मगर शहर में ऐसा होनहार, विद्यावान, सुंदर और धनिक कोई दूसरा आदमी न था जो उनकी प्राण से अधिक प्रिय लड़की प्रेमा के पति बनने के योग्य हो। इस कारण वे बेबस हो रहे थे। लड़की अकेली थी, इसलिए दूसरे शहर में ब्याह भी न कर सकते थे। इस लड़की के गुण और सुंदरता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की इतनी प्रशंसा थी कि उस शहर के सब रईस उसे चाहते थे। जब किसी काम-काज के मौके पर प्रेमा सोलहों श्रृंगार करके जीती तो जितनी और स्त्रियाँ वहाँ होतीं उसके पैरों तले आँखे बिछाती। बड़ी बूढ़ी औरतें कहा करती थी कि ऐसी सुंदर लड़की कहीं देखने में नहीं आई। और जैसी प्रेमा औरतों में थी वैसे ही अमृतराय मर्दो में थे। ईश्वर ने अपने हाथ से दोनों का जोड़ मिलाया था।

हाँ, शहर के पुराने हिन्दू लोग इस विवाह के खिलाफ थे। वह कहते कि अमृतराय सब गुण अगर सही, मगर है तो ईसाई। उनसे प्रेमा जैसी लड़की का विवाह करना ठीक नहीं है। मुंशी जी के नातेदार लोग भी इस शादी के विरुद्ध थे। इसी खींचातानल में पाँच बरस बीत चुके थे। अमृतराय भी कुछ बहुत उद्यम न मालूम होते थे। मगर इस साल मुंशी बदरी प्रसाद ने भी हियाब किया, और अमृतराय भी मुस्तैद हुए और विवाह की साइत निश्चय की गयी। अब दोनों तरफ तैयारियाँ हो रही थी। प्रेमा की माँ अमृतराय के नाम पर बिकी हुई थी और लड़की के लिए अभी से गहने पाते बनवाने लगी थी, कि निदान आज यह महाभयानक खबर पहुँची कि अमृतराय ईसाई हो गया है और उसका किसी मेम से विवाह हो रहा है।

इस खबर ने मुंशी जी के दिल पर वही काम किया जो बिजली किसी हरे-भरे पेड़ पर गिरकर करती है। वे बूढ़े तो थे ही, इस धक्के को न सह सके और पछाड़ खाकर जमीन पर गिर पड़े। उनका बेसुध होना था कि सारा भीतर बाहर एक हो गया। तमाम नौकर-चाकर, अपने-पराये इकट्‌ठे हो गये और 'क्या हुआ'! 'क्या हुआ'! का शोर मचने लगा। अब जिसको देखिये यही कहता फिरता है कि अमृतराय ईसाई हो गया है। कोई कहता है थाने में रपट करो, कोई कहता है चलकर मारपीट करो। बाहर से दम ही दम में अंदर खबर पहुँची। वहाँ भी कुहराम मच गया। प्रेमा की माँ बेचारी बहुत दिनों से बीमार थी। और उन्हीं की जिद थी कि बेटी की शादी जहाँ तक जल्द हो जाय अच्छा है। यद्यपि वह पुराने विचार की बूढ़ी औरत थी और उनको प्रेमा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का अमृतराय के पास प्रेम पत्र भेजना एक आँख न भाता था। तथापि जब से उन्होंने उनको एक बार अपने आँगन में खड़े देख लिया था तब से उनको यही धुन सवार थी कि मेरी आँखों की तारा का विवाह हो तो उन्हीं से हो। वह इस वक्त बैठी हुई बेटी से बातचीत कर रही थी कि बाहर से यह खबर पहुँची। वह अमृतराय को अपना दामाद समझने लगी थी- और कुछ तो न हो सका बेटी को गले लगाकर रोने लगी। प्रेमा ने आँसू को रोकना चाहा, मगर न रोक सकी। उसकी बरसों की संचित आशा रूपी बेल- क्षण मात्र में कुम्हला गयी। हाय! उससे रोया भी न गया। चित्त व्याकुल हो गया। माँ को रोती छोड़ वह अपने कमरे में आयी, चारपाई पर धम से गिर पड़ी। जबान से केवल इतना निकला कि नारायण, अब कैसे जीऊँगी और उसके भी होश जाते रहे। तमाम घर की लौंड़ियाँ उस पर जान देती थी। सब की सब एकत्र हो गयीं। और अमृतराय को 'हत्यारे' और 'पापी' की पद्वियाँ दी जाने लगी।

अगर घर में कोई ऐसा था कि जिसको अमृतराय के ईसाई होने का विश्वास न आया तो वह प्रेमा के भाई बाबू कमला प्रसाद थे। बाबू साहब बड़े समझदार आदमी थे। उन्होंने अमृतराय के कई लेख मासिक पत्रों में देखे थे, जिनमें ईसाई मत का खंडन किया गया था। और 'हिन्दू धर्म की महिमा' नाम की जो पुस्तक उन्होंने लिखी थी उसकी तो बड़े-बड़े पंडितों ने तारीफ की थी। फिर कैसे मुमकिन था कि एकदम उनके खयाल पलट जाते और वह ईसाई मत धारण कर लेते। कमला प्रसाद यही सोच रहे थे कि दाननाथ आते दिखायी दिये। उनके चेहरे से घबराहट बरस रही थी। कमला प्रसाद ने उनको बड़े आदर से बैठाया और पूछने लगे- यार, यह खबर कहाँ से उड़ी? मुझे तो विश्वास नहीं आता।

दाननाथ- विश्वास आने की कोई बात भी तो हो। अमृतराय का ईसाई होना असंभव है। हाँ वह रिफार्म मंडली में जा मिले हैं, मुझसे भूल हो गयी कि यही बात तुमसे न कही।

कमला प्रसाद- तो क्या तुमने लाला जी से यह कह दिया?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाननाथ ने संकोच से सर झुकाकर कहा- यही तो भूल हो गई। मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे। आज शाम को जब अमृतराय से मुलाकात करने गया तो उन्होंने बात-बात में कहा कि अब मैं शादी न करूँगा। मैंने कुछ न सोचा-विचारा और यह बात आकर मुंशी जी से कह दी। अगर मुझको यह मालूम होता कि इस बात का यह बतंगड़ हो जायगा तो मैं कभी न कहता। आप जानते हैं कि अमृतराय मेरे परम मित्र है। मैंने जो यह संदेशा पहुँचाया तो इससे किसी की बुराई करने का आशय न था। मैंने केवल भलाई की नीयत से यह बात कही थी। क्या कहूँ, मुंशी जी तो यह बात सुनते ही जोर से चिल्ला उठे- 'वह ईसाई हो गया। मैंने बहुतेरा अपना मतलब समझाया मगर कौन सुनता है। वह यही कहते मूर्छा खाकर गिर पड़े।'

कमला प्रसाद यह सुनते ही लपककर अपने पिता के पास पहुँचे। वह अभी तक बेसुध थे। उनको होश में लाये और दाननाथ का मतलब समझाया और फिर घर में पहुँचे। उधर सारे मुहल्ले की स्त्रियाँ प्रेमा के कमरे में एकत्र हो गयी थीं और अपने-अपने विचारानुसार उसको सचेत करने की तरकीबें कर रही थी। मगर अब तक किसी से कुछ न बन पड़ा। निदान एक सुंदर नवयौवना दरवाजे से आती दिखायी दी। उसको देखते ही सब औरतों ने शोर मचाया जो पूर्णा आ गयी, अब रानी को चेत आ जायेगी। पूर्णा एक ब्राह्मणी थी। इसकी उम्र केवल बीस वर्ष की होगी। यह अति सुशीला और रूपवती थी। उसके बदन पर सादी साड़ी और सादे गहने बहुत ही भले मालूम होते थे। उसका विवाह पंडित बसंत कुमार से हुआ था जो एक दफ्तर में तीस रुपये महीने के नौकर थे। उनका मकान पड़ोस ही में था। पूर्णा के घर में दूसरा कोई न था। इसलिए जब दस बजे पंडित जी दफ्तर को चले जाते तो वह प्रेमा के घर चली आती और दोनों सखिया शाम तक अपने-अपने मन की बातें सुना करतीं। प्रेमा उसको इतना चाहती थी कि यदि वह कभी किसी कारण से न आ सकती तो स्वयं उसके घर चली जाती। उसे देखे बिना उसको कल न पड़ती थी। पूर्णा का भी यही हाल था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा ने आते ही सब स्त्रियों को वहाँ से हटा दिया, प्रेमा को इत्र सुंघाया केवड़े और गुलाब का छींटा मुख पर मारा। धीरे-धीरे उसके तलवे सहलाये, सब खिड़कियाँ खुलवा दीं। इस तरह जब ठंडक पहुँची तो प्रेमा ने आँखे खोल दीं और चौंककर उठ बैठी। बूढ़ी माँ की जान में जान आई। वह पूर्णा की बलायें लेने लगी और थोड़ी देर में सब स्त्रियाँ प्रेमा को आशीर्वाद देते हुए सिंधारी। पूर्णा रह गई। जब एकांत हुआ तो उसने कहा- प्यारी प्रेमा। आँखे खोलो। यह क्या गत बना रखी है।

प्रेमा ने बहुत धीरे से कहा- हाय! सखी मेरी तो सब आशाएँ मिट्टी में मिल गयीं।

पूर्णा- प्यारी ऐसी बातें न करो। जरा दिल को संभालो और बताओ तुमको यह खबर कैसे मिली?

प्रेमा- कुछ न पूछो सखी, मैं बड़ी अभागिनी हूँ (रोकर) हाय, दिल बैठा जाता है। मैं कैसे जीऊँगी।

पूर्णा- प्यारी जरा दिल को ढारस तो दो। मैं अभी सब पता लगाये देती हूँ। बाबू अमृतराय पर जो दोष लोगों ने लगाया है वह सब झूठ है।

प्रेमा- सखी, तुम्हारे मुँह में घी शक्कर। ईश्वर करें तुम्हारी बातें सच हों। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह फिर बोली- कहीं एक दम के लिए मेरी उस कठकलेजिये से भेंट हो जाती तो मैं उनका क्षेम कुशल पूछती। फिर मुझे मरने का रंज न होता।

पूर्णा- यह कैसी बात कहती हो सखी, मरे वह जो तुमको देख न सके। मुझसे कहो मैं तांबे के पत्र पर लिख दूँ कि अमृतराय अगर ब्याह करेंगे तो तुम्हीं से करेंगे। तुम्हारे पास उनके बीसियों पत्र पड़े है। मालूम होता है किसी ने कलेजा निकाल के धर दिया है। एक-एक शब्द से सच्चा प्रेम टपकता है। ऐसा आदमी कभी दगा नहीं कर सकता।

प्रेमा- यही सब सोच-सोचकर तो आज चार बरस से दिल को ढारस दे रही हूँ। मगर अब उनकी बातों का मुझे विश्वास नहीं रहा। तुम्हीं बताओ, मैं कैसे जानूँ कि उनको मुझसे प्रेम है? आज चार बरस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के दिन बीत गये। मुझे तो एक-एक दिन काटना दूभर हो रहा है और वहाँ कुछ खबर ही नहीं होती। मुझे कभी-कभी उनके इस टालमटोल पर ऐसी झुँझलाहट होती है कि तुमसे क्या कहूँ। जी चाहता है उनको भूल जाऊँ। मगर कुछ बस नहीं चलता। दिल बेहया हो गया।

यहाँ अभी यही बातें हो रही थी कि बाबू कमला प्रसाद कमरे में दाखिल हुए। उनको देखते ही पूर्णा ने घूँघट निकाल ली और प्रेमा ने भी चट आँखो से आँसू पोंछ लिए और संभल कर बैठी।

कमला प्रसाद- प्रेमा, तुम भी कैसी नादान हो। ऐसी बातों पर तुमको विश्वास क्योंकर आ गया? इतना सुनना था कि प्रेमा का मुखड़ा गुलाब की तरह खिल गया। हर्ष के मारे आँखे चमकने लगी। पूर्णा ने आहिस्ता से उसकी एक उंगली दबायी। दोनों के दिल धड़कने लगे कि देखें यह क्या कहते है।

कमला प्रसाद- बात केवल इतनी हुई कि घंटा भर हुआ, लाला जी के पास बाबू दाननाथ आये हुए थे। शादी ब्याह की चर्चा होने लगी तो बाबू साहब ने कहा कि मुझे तो बाबू अमृतराय के इरादे इस साल भी पक्के नहीं मालूम होते। शायद वह रिफार्म मंडली में दाखिल होने वाले है। बस इतनी-सी बात लोगों ने कुछ का कुछ समझ लिया। लाला जी इधर बेहोश होकर गिर पड़े। अम्मा उधर बदहवास हो गयी। अब जब तक उनको संभालू कि सारे घर में कोलाहल होने लगा। ईसाई होना क्या कोई दिल्लगी है। और फिर उनको इसकी जरूरत ही क्या है। पूजा पाठ तो वह करते नहीं तो उन्हें क्या कुत्ते ने काटा है कि अपना मत छोड़कर नक्कू बनें। ऐसी बे सर-पैर की बातों पर एतबार नहीं करना चाहिए। लो अब मुँह धो डालो। हँसी-खुशी की बातचीत की। मुझे तुम्हारे रोने-धोने से बहुत रंज हुआ। यह कहकर बाबू कमला प्रसाद बाहर चले गये और पूर्णा ने हँसकर कहा- सुना कुछ मैं जो कहती थी कि यह सब झूठ है। ले अब मुँह मीठा करावो।

प्रेमा ने प्रफुल्लित होकर पूर्णा को छाती से लिपटा लिया और उसके पतले-पतले होठों को चूमकर बोली- मुँह मीठा हुआ या और लोगी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा- यह मिठाइयाँ रख छोड़ो उनके वास्ते जिनकी निठुराई पर अभी कुढ़ रही थी। मेरे लिए तो आगरा वाले की दुकान की ताजी-ताजी अमृतियाँ चाहिए।

प्रेमा- अच्छा अब की उनको चिट्ठी लिखूँगी तो लिख दूँगी कि पूर्णा आपसे अमृतियाँ माँगती है। पूर्णा- तुम क्या लिखोगी, हाँ, मैं आज का सारा वृतांत लिखूँगी। ऐसा-ऐसा बनाऊँगी कि तुम भी क्या याद करो। सारी कलई खोल दूँगी।

प्रेमा- (लजाकर) अच्छा रहने दीजिए यह सब दिल्लगी। सच मानो पूर्णा, अगर आज की कोई बात तुमने लिखी तो फिर मैं तुमसे कभी न बोलूँगी।

पूर्णा- बोलो या न बोलो, मगर मैं लिखूँगी जरूर। इसके लिए तो उनसे जो चाहूँगी ले लूँगी। बस इतना ही लिख दूँगी कि प्रेमा को अब बहुत न तरसाइए।

प्रेमा- (बात काटकर) अच्छा लिखिएगा तो देखूँगी। पंडित जी से कहकर वह दुर्गत कराऊँ कि सारी शरारत भूल जाओ। मालूम होता है उन्होंने तुम्हें बहुत सर चढ़ा रखा है।

अभी दोनों सखियाँ जी भरकर खुश न होने पायी थीं कि उनको रंज पहुँचाने का फिर सामान हो गया। प्रेमा की भावज अपनी ननद से हरदम जला करती थी। अपने सास-ससुर से यहाँ तक कि पति से भी, क्रुद्ध रहती कि प्रेमा में ऐसे कौन से चाँद लगे कि सारा घराना उन पर निछावर होने को तैयार रहता है। उनका आदर सब क्यों करते हैं मेरी बात तक कोइ नहीं पूछता। मैं उनसे किसी बात मे कम नहीं हूँ। गोरेपन में, सुंदरता में, श्रृंगार मे मेरा नंबर उनसे बराबर बढ़ा-चढ़ा रहता है। हाँ वह पढ़ी-लिखी है। मैं बौरी इस गुण को नहीं जानती। उन्हें तो मर्दों में मिलना है, नौकरी-चाकरी करना है, मुझ बेचारी के भाग में तो घर का काम-काज करना ही बदा है। ऐसी निरलज लड़की। अभी शादी नहीं हुई, मगर प्रेम-पत्र आते-जाते हैं, तस्वीरें भेजी जाती हैं। अभी आठ-नौ दिन होते है कि फूलों के गहने आये है। आँखों का पानी मर गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और ऐसी कुलवंती पर सारा कुनबा जान देता है। प्रेमा उनके ताने और उनकी बोली-ठोलियों को हँसी में उड़ा दिया करती और अपने भाई के खातिर भावज को खुश रखने की फिक्र में रहती थी। मगर भाभी का मुँह उससे हरदम फूला रहता। आज उन्होंने ज्योंही सुना कि अमृतराय ईसाई हो गये है तो मारे खुशी के फूली नहीं समायी। मुसकराते, मचलते, मटकते, प्रेमा के कमरे में पहुँची और बनावट की हँसी हँसकर बोली- क्यों रानी आज तो बात खुल गयी। प्रेमा ने यह सुनकर लाज से सर झुका लिया मगर पूर्णा बोली- सारा भाँडा फूट गया। ऐसी भी क्या कोई लड़की मर्दो पर फिसले। प्रेमा ने लजाते हुए जवाब दिया- जाओ। तुम लोगों की बला से। मुझसे मत उलझो।

भाभी- नहीं-नहीं, दिल्लगी की बात नहीं। मर्द सदा के कठकलेजी होते है। उनके दिल में प्रेम होता ही नहीं। उनका जरा-सा सर धमकें तो हम खाना-पीना त्याग देती है, मगर हम मर ही क्यों न जायँ उनको जरा भी परवाह नहीं होती। सच है, मर्द का कलेजा काठ का।

पूर्णा- भाभी, तुम बहुत ठीक कहती हो। मर्दो का कलेजा सचमुच काठ का होता है। अब मेरे ही यहाँ देखो, महीने में कम-से-कम दस-बारह दिन उस मुये साहब के साथ दौरे पर रहते हैं। मैं तो अकेली सुनसान घर में पड़े-पड़े कराहा करती हूँ। वहाँ कुछ खबर ही नहीं होती। पूछती हूँ तो कहते हैं, रोना-गाना औरतों का काम है। हम रोयें-गायें तो संसार का काम कैसे चले।

भाभी- और क्या, जानो संसार अकेले मर्दो ही के थामे तो थमा है। मेरा बस चले तो इनकी तरफ आँख उठाकर भी न देखूँ। अब आज ही देखो, बाबू अमृतराय का करतब खुला तो रानी ने अपनी कैसी गत बना डाली। (मुस्कराकर) इनके प्रेम का तो यह हाल है और वहाँ चार वर्ष से हीला हवाला करते चले आते है। रानी, नाराज न होना, तुम्हारे खत पर जाते हैं। मगर सुनती हूँ वहाँ से विरले ही किसी खत का जवाब आता है। ऐसे निमोहियों से कोई क्या प्रेम करें। मेरा तो ऐसों से जी जलता है। क्या किसी को अपनी लड़की भारी पडी है कि कुएँ में डाल दें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बला से कोई बड़ा मालदार है, बड़ा सुंदर है, बड़ी ऊँची पदवी पर है। मगर जब हमसे प्रेम ही न करें तो क्या हम उसकी धन-दौलत को लेकर चाटें? संसार में एक से एक लाल पड़े है। और, प्रेमा जैसी दुलहिन के वास्ते दुलहों का काल।

प्रेमा को यह बातें बहुत बुरी मालूम हुई, मगर मारे संकोच के कुछ बोल न सकी। हाँ, पूर्णा ने जवाब दिया- नहीं, भाभी, तुम बाबू अमृतराय पर अन्याय कर रही हो। उनको प्रेमा से सच्चा प्रेम है। उनमें और दूसरे मर्दों मे बड़ा भेद है।

भाभी- पूर्णा अब मुँह न खुलवाओ। प्रेम नहीं पत्थर करते हैं? माना कि वे बड़े विद्या वाले हैं और छुटपने में ब्याह करना पसंद नहीं करते। मगर अब तो दोनों में कोई भी कमसिन नहीं है। अब क्या बूढे होकर ब्याह करेंगे? मै तो बात सच कहूँगी उनकी ब्याह करने की चेष्ठा ही नहीं है। टालमटोल से काम निकालना चाहते हैं। यही ब्याह के लक्षण हैं कि प्रेमा ने जो तस्वीर भेजी थी वह टुकड़े-टुकड़े करके पैरों तले कुचल डाली। मैं तो ऐसे आदमी का मुँह भी न देखूँ।

प्रेमा ने अपनी भावज को मुस्कराते हुए आते देखकर ही समझ लिया था कि कुशल नहीं है। जब यह मुस्कराती है, तो अवश्य कोई न कोई आग लगाती है। वह उनकी बातचीत का ढंग देखकर सहमी जाती थी कि देखे यह क्या सुनावनी सुनाती है। भाभी की यह बात तीर की तरह कलेजे के पार हो गई। हक्का-बक्का होकर उसकी तरफ ताकने लगी, मगर पूर्णा को विश्वास न आया, बोली यह क्या अनर्थ करती हो, भाभी। भइया अभी आये थे उन्होंने इसकी कुछ भी चर्चा नहीं की। मैं तो जानती हूँ कि पहली बात की तरह यह भी झूठी है। यह असंभव है कि वह अपनी प्रेमा की तसवीर की ऐसी दुर्गत करे।

भाभी- तुम्हारे न पतियाने को मैं क्या करूँ, मगर यह बात तुम्हारे भइया खुद मुझसे कह रहे थे। और फिर इसमें बात ही कौन-सी है, आज ही तसवीर मंगा भेजो। देखो क्या जवाब देते हैं। अगर यह बात झूठी होगी तो अवश्य तसवीर भेज देंगे। या कम से कम इतना तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहेंगे कि यह बात झूठी है। अब पूर्णा को भी कोई जवाब न सूझा। वह चुप हो गयी। प्रेमा कुछ न बोली। उसकी आँखो से आँसुओ की धारा बह निकली। भावज का चेहरा ननद की इस दशा पर खिल गया। वह अत्यंत हर्षित होकर अपने कमरे में आई, दर्पण में मुँह देखा और आप ही आप मग्न होकर बोली– 'यह घाव अब कुछ दिनों में भरेगा।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 3
झूठे मददगार

बाबू अमृतराय रातभर करवटें बदलते रहे। ज्यों-ज्यों उन्होंने अपने नये इरादों और नई उमंगों पर विचार किया त्यों-त्यों उनका दिल और भी दृढ़ होता गया और भोर होते-होते देशभक्ति का जोश उनके दिल में लहरें मारने लगा। पहले कुछ देर तक प्रेमा से नाता टूट जाने की चिंता इस लहर पर बाँध का काम करती रही। मगर अंत में लहरें ऐसी उठीं कि वह बाँध टूट गया।

सुबह होते ही मुँह-हाथ धो, कपड़े पहन और बाइसिकिल पर सवार होकर अपने दोस्तों की तरफ चलें। पहले-पहल मिस्टर गुलजारी लाल बी.ए. एल.एल.बी. के यहाँ पहुँचे। यह वकील साहब बड़े उपकारी मनुष्य थे और सामाजिक सुधार का बड़ा पक्ष करते हैं। उन्होंने जब अमृतराय के इरादे ओर उनके पूरे होने की कल्पनाएँ सुनी तो बहुत खुश हुए और बोले- आप मेरी ओर से निश्चिंत रहिए और मुझे अपना सच्चा हितैषी समझिए। मुझे बहुत हर्ष हुआ कि हमारे शहर में आप जैसे योग्य पुरुष ने इस भारी बोझ को अपने सार लिया। आप जो काम चाहें मुझे सौंप दीजिए, मैं उसको अवश्य पूरा करूँगा और उसमें अपनी बड़ाई समझूँगा।

अमृतराय वकील साहब की बातों पर लट्टू हो गये। उन्होंने सच्चे दिल से उनको धन्यवाद दिया और कहा कि मैं इस शहर में एक सामाजिक सुधार की सभा स्थापित करना चाहता हूँ। वकील साहब इस बात पर उछल पड़े और कहा कि आप मुझे उस सभा का सदस्य और हितचिन्तक समझें। मैं उसकी मदद दिलोजान से करूँगा। अमृतराय इस अच्छे शगुन के होते हुएداننाथ के घर पहुँचे। हम पहले कह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुके हैं कि दाननाथ के घर पहुँचे। हम पहले कह चुके है कि दाननाथ उनके सच्चे दोस्तों में थे। वे दनको देखते ही बड़े आदर से उठ खड़े हुए और पूछा- क्यों भाई, क्या इरादे हैं?

अमृतराय ने बहुत गम्भीरत से जवाब दिया- मैं अपने इरादे आप पर प्रकट कर चुका हूँ और आप जानते हैं कि मैं जो कुछ कहता हूँ वह कर दिखाता हूँ। बस आपके पास केवल इतना पूछना के लिए आया हूँ कि आप इस शुभ कार्य में मेरी कुछ मदद करेंगे या नहीं? दाननाथ सामाजिक सुधार को पंसद तो करता था मगर उसके लिए हानी या बदनामी लेना नहीं चाहता था। फिर इस वक्त तो, वह लाला बदरी प्रसाद का कृपापात्र भी बनना चाहता था, इसलिए उसने जवाब दिया- अमृतराय तुम जानते हो कि मैं हर काम में तुम्हारा साथ देने को तैयार हूँ। रुपया पैसा समय, सभी से सहायता करूँगा, मगर छिपे-छिपे। अभी मैं इस सभा में खुल्लम-खुल्ला सम्मिलित होकर नुकसान उठाना उचित नहीं समझता। विशेष इस कारण से कि मेरे सम्मिलत होने से सभा को कोई बल नहीं पहुँचेगा।

बाबू अमृतराय ने अधिक वादानुवाद करना अनुचित समझा। इसमें सन्देह नहीं कि उनको दाननाथ से बहुत आशा थी। मगर इस समय वह यहाँ बहुत न ठहरे और विद्या के लिए प्रसिद्ध थे। जब अमृतराय ने उनसे सभा संबंध बातें कीं तो वह बहुत खुश हुए। उन्होंने अमृतराय को गले लगा लिया और बोले- मिस्टर अमृराय, तुमने मुझे सस्ते छोड़ दिया। मैं खुद कई दिन से इन्हीं बातों के सोच-विचार में डूबा हुआ हूँ। आपने मेरे सर से बोझ उतार लिया। जैसी योग्यता इस काम को करने की आप में है वह मुझमें नाम को भी नहीं। मैं इस सभा का मेम्बर हूँ।

बाबू अमृतराय को पंडित जी से इतनी आशा न थी। उन्होंने सोचा था कि अगर पंडित जी इस काम को पसंद करेंगे तो खुल्लम-खुल्ला शरीक होते झिझकेंगे। मगर पंडित जी की बातों ने उनका दिल बहुत बढ़ा दिया। यहाँ से निकले तो वह अपनी ही आँखों में दो इंच ऊँचे मालूम होते थे। अपनी अर्थसिद्धि के नशे में झूमते-झामते और मूँछों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताव देते एन.बी. अगरवाल साहब की सेवा में पहुँचें मिस्टर अगरावाला अंग्रेजी और संस्कृत के पंडित थे। व्याख्यान देने में भी निपुण थे और शहर में सब उनका आदर करते थे। उन्होंने भी अमृतराय की सहायता करने का वादा किया और इस सभा का ज्वाइण्ट सेक्रेटरी होना स्वीकार किया। खुलासा यह कि नौ बजते-बजते अमृतराय सारे शहर के प्रसिद्ध और नई रोशनी वाले पुरुषों से मिल आये और ऐसा कोई न था जिसने उनके इरादे की प्रशंसा न की हो, या सहायता करने का वादा न किया हो। जलसे का समय चार बजे शाम को नियत किया गया।

दिन के दो बजे से अमृतराय के बंगले पर जलसे की तैयारियाँ होने लगीं। फर्श बिछाये गये। छत में झाड़-फानूस, हाँडियाँ लटकायी गयीं। मेज और कुर्सियाँ सजाकर धरी गयी और सभासदों के लिए खाने-पीने का भी प्रबंध किया गया। अमृतराय ने सभा के लिए एक नियमावली बनायी। एक व्याख्यान लिखा और इन कामों को पूरा करके मेम्बरों की राह देखने लगे। दो बज गये, तीन बज गये, मगर कोई न आया। आखिर चार भी बजे, मगर किसी की सवारी न आयी। हाँ, इंजीनियर साहब के पास से एक नौकर यह संदेश लेकर आया कि मैं इस समय नहीं आ सकता।

अब तो अमृतराय को चिंता होने लगी कि अगर कोई न आया तो मेरी बड़ी बदनामी होगी और सबसे लज्जित होना पड़ेगा निदान इसी तरह पाँच बज गए और किसी उत्साही पुरुष की सूरत न दिखाई दी। तब तो अमृतराय को विश्वास हो गया कि लोगों ने मुझे धोखा दिया। मुंशी गुलजारी लाल से उनको बहुत कुछ आशा थी। अपना आदमी उनके पास दौड़ाया। मगर उसने लौटकर बयान किया कि वह घर पर नहीं है, पोलो खेलने चले गये। इस समय तक छः बजे और जब अभी तक कोई आदमी न पधारा तो अमृतराय का मन बहुत मलिन हो गया। ये बेचारे अभी नौजवान आदमी थे और यद्यपि बात के धनी और धुन के पूरे थे मगर अभी तक झूठे देशभक्तों और बने हुए उद्योगियों का उनको अनुभव न हुआ था। उन्हें बहुत दुःख हुआ। मन मारे हुए चारपाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर लेट गये और सोचने लगे की अब मैं कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रहा। मैं इन लोगों को ऐसा कटिल और कपटी नहीं समझता था। अगर न आना था तो मुझसे साफ-साफ कह दिया होता। अब कल तमाम शहर में यह बात फैल जाएगी कि अमृतराय रईसों के घर दौड़ते थे, मगर कोई उनके दरवाजे पर बात पूछने को भी न गया। जब ऐसे सहायक मिलेंगे तो मेरे किये क्या हो सकेगा। इन्हीं खयालों ने थोड़ी देर के लिए उनके उत्साह को भी ठंडा कर दिया।

मगर इसी समय उनको लाला धनुषधारी लाल की उत्साहवर्धक बातें याद आयीं। वही शब्द जिनसे उन्होंने लोगों के हौंसले बढ़ाए थे, उनके कानों में गूँजने लगे- मित्रों, अगर जाति की उन्नति चाहते हो तो उस पर सर्वस्व अर्पण कर दो। इन शब्दों ने उनके बैठते हुए दिल पर अंकुश का काम किया। चौंककर उठ बैठे, सिगार जला लिया और बाग की क्यारियों में टहलने लगे। चाँदनी छिटकी हुई थी। हवा के झोंके धीरे-धीरे आ रहे थे। सुन्दर फूलों के पौधे मन्द-मन्द लहरा रहे थे। उनकी सुगन्ध चारों ओर फैली हुई थी। अमृतराय हरी-हरी दूब पर बैठ गये और सोचने लगे। मगर समय ऐसा सुहावना था और ऐसा आनन्ददायक सन्नाटा छाया हुआ था कि चंचल चित्त प्रेमा की ओर जा पहुँचा। जेब से तसवीर के पुर्जे निकाल लिये और चाँदनी रात में उसे बड़ी देर तक गौर से देखते रहे। मन कहता था- ओ अभागे अमृतराय तू क्योंकर जियेगा। जिसकी मूरत आठों पहर तेरे सामने रहती थी, जिसके साथ आनन्द भोगने के लिए तू इतने दिनों विराहाग्नि में जला, उसके बिना तेरी जान कैसी रहेगी? तू तो वैराग्य लिये है। क्या उसको भी वैरागिन बनायेगा? हत्यारे उसको तुझसे सच्चा प्रेम है। क्या तू देखता नहीं कि उसके पत्र प्रेम में डूबे हुए रहते हैं। अमृतराय अब भी भला है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा। इन बातों को छोड़ो। अपने ऊपर तरस खाओ। अपने अरमानों को मिट्टी में न मिलाओ। संसार में तुम्हारे जैसे बहुत-से उत्साही पुरुष पड़े हुए हैं। तुम्हारा होना न होना दोनों बराबर है। लाला बदरी प्रसाद मुँह खोले बैठे हैं। शादी कर लो और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा के साथ प्रेम करो। (बेचैन होकर) हा मैं भी कैसा पागल हूँ। भला इस तस्वीर ने मेरा क्या बिगाड़ा था जो मैंने इसे फाड़ डाला। हे ईश्वर प्रेमा अभी यह बात न जानती हो।

अभी इसी उधेड़बुन में पड़े हुए थे कि नौकर ने हाथों में एक खत लाकर दिया। घबराकर पूछा- किसका खत है?

नौकर ने जवाब दिया- लाला बदरी प्रसाद का आदमी लाया है।

अमृतराय ने काँपते हुए हाथों से पत्री ली और पढ़ने लगे। उसमें लिखा था-

"बाबू अमृतराय, आशीर्वाद

हमने सुना है कि अब आप सनातन धर्म को त्याग करके ईसाईयों की उस मंडली में जा मिले हैं जिसको लोग भूल से सामाजिक सुधार सभा कहते हैं। इसलिए अब हम अति शोक के साथ कहते हैं कि हम आपसे कोई नाता नहीं कर सकते।

आपका शुभचिंतक
बदरी प्रसाद।"

इस चिट्ठी को अमृतराय ने कई बार पढ़ा और उनके दिल में अलग खींचातानी होने लगी। आत्म-स्वार्थ कहता था कि इस सुन्दरी को अवश्य ब्याहो और जीवन के सुख उठाओ। देशभक्ति कहती थी जो इरादा किया है उस पर अड़े रहो। अपना स्वार्थ तो सभी चाहते हैं। तुम दूसरों का स्वार्थ करो। इस अनित्य जीवन को व्यतीत करने का इससे अच्छा कोई ढंग नहीं है। कोई पन्द्रह मिनट तक यह लड़ाई होती रही। इसका निर्णय केवल दो अक्षर लिखने पर था। देशभक्त ने आत्म-स्वार्थ को परास्त कर दिया था। आखिर वहाँ से उठकर कमरे में गये और कई पत्र कागज खबर करने के बाद यह पत्र लिखा-

"महाशय, प्रणाम

कृपा पत्र आया। पढ़कर बहुत दुःख हुआ। आपने मेरी बहुत दिनों की बंधी हुई आशा तोड़ दी। खैर जैसा आप उचित समझें वैसा करें। मैंने जब से होश संभाला तब से मैं बराबर सामाजिक सुधार का पक्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर सकता हूँ। मुझे विश्वास है कि हमारे देश की उन्नती का इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है। आप जिसको सनातन धर्म समझे हुए बैठे हैं, वह अविद्या और असभ्यता का प्रत्यक्ष स्वरूप है।

आपका कृपाकांक्षी

अमृतराय।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 4
जवानी की मौत

समय हवा की तरह उड़ता चला जाता है। एक महीना गुजर गया। जाड़े का कूँच हुआ और गर्मी की लैनडोरी होली आ पहुँची। इस बीच में अमृतराय ने दो-तीन जलसे किये और यद्यपि सभासद दस से ज्यादा कभी न हुए मगर उन्होंने हियाव न छोड़ा। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि चाहे कोई आवे या न आवे, मगर नियत समय पर जलसा जरूर किया करूँगा। इसके उपरान्त उन्होंने देहातों में जा-जाकर सरल-सरल भाषाओं में व्याख्यान देना शुरू किया और समाचार पत्रों में सामाजिक सुधार पर अच्छे-अच्छे लेख भी लिखे। इनको तो इसके सिवाय कोई काम न था। उधर बेचारी प्रेमा का हाल बहुत बेहाल हो रहा था। जिस दिन उसे-उनकी आखिरी चिट्ठी पहुँची थी उसी दिन से उसकी रोगियों की-सी दशा हो रही थी। हर घड़ी रोने से काम था। बेचारी पूर्णा सिरहाने बैठे समझाया करती। मगर प्रेमा को जरा भी चैन न आता। वह बहुधा पड़े-पड़े अमृतराय की तस्वीर को घण्टों चुपचाप देखा करती। कभी-कभी जब बहुत व्याकुल हो जाती तो उसके जी मे आता कि मैं भी उनकी तस्वीर की वही गत करूँ जो उन्होंने मेरी तस्वीर की की है। मगर फिर तुरन्त यह खयाल पलट खा जाता। वह उस तसवीर को आँखों से लेती, उसको चूमती और उसे छाती से चिपका लेती। रात में अकेले चारपाई पर पड़े-पड़े आप ही आप प्रेम और मुहब्बत की बातें किया करती। अमृतराय के कुल प्रेम-पत्रों को उसने रंगीन कागज पर, मोटे अक्षरों, में नकल कर लिया था। जब जी बहुत बेचैन होता तो पूर्णा से उन्हें पढ़वाकर सुनती और रोती। भावज के पास तो वह पहले भी बहुत कम बैठती थी, मगर अब माँ से भी कुछ खिंची रहती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि वह बेटी की दशा देख-देख कुढ़ती और अमृतराय को इसका कारण समझकर कोसती। प्रेमा से यह कठोर वचन न सुने जाते। वह खुद अमृतराय का जिक्र बहुत कम करती। हाँ, अब पूर्णा या कोई और दूसरी सहेली उनकी बात चलाती तो उसको खूब कान लगाकर सुनती। प्रेमा एक ही मास में गलकर काँटा हो गयी। हाय अब उसको अपने जीवन की कोई आशा न थी। घर के लोग उसकी दवा-दारू में रुपया ठीकरी की तरह फूँक रहे थे मगर उसको कुछ फायदा न होता। कई बार लाला बदरी प्रसाद जी के जी में यह बात आई कि इसे अमृतराय ही से ब्याह दूँ। मगर फिर भाई-बहन के डर से हियाव न पड़ता। प्रेमा के साथ बेचारी पूर्णा भी रोगिणी बनी हुई थी।

आखिर होली का दिन आया। शहर में चारों ओर अबीर और गुलाल उड़ने लगा, चारों तरफ से कबीर और बिरादरी वालों के यहाँ से जनानी सवारियाँ आना शुरु हुई और उसे उनकी खातिर से बनाव-सिंगार करना, अच्छे-अच्छे कपड़ा पहनना, उनका आदर-सम्मान करना और उनके साथ होली खेलना पड़ा। वह हँसने, बोलने और मन को दूसरी बातों में लगाने के लिए बहुत कोशिश करती रही। मगर कुछ बस न चला। रोज अकेले में बैठकर रोया करती थी, जिससे कुछ तसकीन हो जाती। मगर आज शर्म के मारे रो भी न सकती थी। और दिन पूर्णा दस बजे से शाम तक बैठी अपनी बातों से उसका दिल बहलाया करती थी मगर आज वह भी सवेरे ही एक झलक दिखाकर अपने घर पर त्योहार मना रही थी। हाय पूर्णा को देखते ही वह उससे मिलने के लिए ऐसी झपटी जैसे कोई चिड़िया बहुत दिनों के बाद अपने पिंजरे से निकलकर भागी हो। दोनों सखियाँ गले मिल गयीं। पूर्णा ने कोई चीज माँगी- शायद कुमकुम होंगे। प्रेमा ने सन्दूक मंगाया। मगर इस सन्दूक को देखते ही उसकी आँखों में आँसू भर आये। क्योंकि यह अमृतराय ने पर साल होली के दिन उसके पास भेजा था। थोड़ी देर में पूर्णा अपने घर चली गयी मगर प्रेमा घंटो तक उस सन्दूक को देख-देख रोया करती थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा का मकान पड़ोस में ही था। उसके पति पण्डित बसंत कुमार बहुत सीधे मगर शौकीन और प्रेमी आदमी थे। वे हर बात स्त्री की इच्छानुसार करते। उन्होंने उसे थोड़ा-बहुत पढ़ाया भी था। अभी ब्याह हुए दो वर्ष भी न होने पाये थे, प्रेम की उमंगे दोनों के ही दिलों में उमड़ी हुई थी, और ज्यों-ज्यों दिन बीतते थे त्यों-त्यों उनकी मुहब्बत और भी गहरी होती जाती थी। पूर्णा हरदस पति की सेवा प्रसन्न रहती, जब वह दस बजे दिन को दफ्तर जाने लगते तो वह उनके साथ-साथ दरवाजे तक आती और जब तक पण्डित जी दिखायी देते वह दरवाजे पर खड़ी उनको देखा करती। शाम को जब उनके आने का समय होता तो वह फिर दरवाजे पर आकर राह देखने लगती। और ज्योंही वे आ जाते उनकी छाती से लिपट जाती। और अपनी भोली-भाली बातों से उनकी दिनभर की थकन धो देती। पंडित जी की तनख्वाह तीस रुपये से अधिक न थी। मगर पूर्णा ऐसी किफायत से काम चलाती कि हर महीने में उसके पास कुछ न कुछ बचा रहता था। पंडित जी बेचारे, केवल इसलिए कि बीवी को अच्छे से अच्छे गहने और कपड़े पहनावें, घर पर भी काम किया करते। जब कभी वह पूर्णा को कोई नयी चीज बनवाकर देते वह फूली न समाती। मगर लालची न थी। खुद कभी किसी चीज के लिए मुँह न खोलती। सच तो यह है कि सच्चे प्रेम के आनन्द ने उसके दिल में पहनने-ओढ़ने की लालसा बाकी न रखी थी।

आखिर आज होली का दिन आ गया। आज के दिन का क्या पूछना जिसने साल भर चीथड़ों पर काटा वह भी आज कहीं न कहीं से उधार ढूँढ़कर लाता है और खुशी मनाता है। आज लोग लँगोटी में फाग खेलते हैं। आज के दिन रंज करना पाप है। पंडित जी की शादी के बाद यह दूसरी होली पड़ी थी। पहली होली में बेचारे खाली हाथ थे। बीवी की कुछ खातिर न कर सके थे। मगर अब की उन्होंने बड़ी-बड़ी तैयारियाँ की थी। कोई डेढ़ सौ रुपया ऊपर से कमाया था, उसमें बीवी के वास्ते एक सुन्दर कंगन बनवाए था, कई उत्तम साड़ियाँ मोल लाये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे और दोस्तों को नेवता भी दे रखा था। इसके लिए भांति-भांति के मुरब्बे, आचार, मिठाइयाँ मोल लाये थे। और गाने-बजाने के सामान भी इकट्ठे कर रखे थे। पूर्णा आज बनाव-चुनाव किये इधर-उधर छबि दिखाती फिरती थी। उसका मुखड़ा कुन्दा की तरह दमक रहा था उसे आज अपने से सुन्दर संसार में कोई दूसरी औरत न दिखायी देती थी। वह बार-बार पति की ओर प्यार की निगाहों से देखती। पण्डित जी भी उसके श्रृंगार और फबन पर आज ऐसी रीझे हुए थे कि बेर-बेर घर में आते और उसको गले लगाते। कोई दस बजे होंगे कि पण्डित जी घर में आये और मुस्कराकर पूर्णा से बोले- प्यारी, आज तो जी चाहता है तुमको आँखों में बैठे लें। पूर्णा ने धीरे से एक ठोका देकर और रसीली निगाहों से देखकर कहा- वह देखो मैं तो वहाँ पहले ही से बैठी हूँ। इस छबि ने पण्डित जी को लुभा लिया। वह झट बीवी को गले से लगाकर प्यार करने लगे। इन्हीं बातों में दस बजे तो पूर्णा ने कहा- दिन बहुत आ गया है, जरा बैठ जाव तो उबटन मल दूँ। देर हो जायगी तो खाने में अबेर-सबेर होने से सर दर्द होने लगेगा।

पण्डित जी ने कहा- नहीं-नहीं दो। मैं उबटन नहीं मलवाऊँगा। लाओ धोती दो, नहा आऊँ।

पूर्णा- वाह उबटन नहीं मलवावैंगे। आज की तो यह रीति ही है। आके बैठ जाव।

पण्डित- नहीं, प्यारी, इस वक्त जी नहीं चाहता, गर्मी बहुत है।

पूर्णा ने लपककर पति का हाथ पकड़ लिया और चारपाई पर बैठकर उबटन मलने लगी।

पण्डित- मगर जरा जल्दी करना, आज मैं गंगा जी जाना चाहता हूँ।

पूर्णा- अब दोपहर को कहाँ जाओगे। महरी पानी लाएगी, यहीं पर नहा लो।

पण्डित- यहीं। प्यारी, आज गंगा में बड़ी बहार रहेगी।

पूर्णा- अच्छा तो जरा जल्दी लौट आना। यह नहीं कि इधर-उधर तैरने लगो। नहाते वक्त तुम बहुत दूर तक तैर जाया करते हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ी देर में पण्डित जी उबटन मलवा चुके और एक रेशमी धोती, साबुन, तौलिया और एक कमंडल हाथ मे लेकर नहाने चले। उनका कायदा था कि घाट से जरा अलग नहाया करते यह तैराक भी बहुत अच्छे थे। कई बार शहर के अच्छे तैराकों से बाजी मार चुके थे। यद्यपि आज घर से वादा करके चले थे कि न तैरेंगे मगर हवा ऐसी धीमी-धीमी चल रही थी और पानी ऐसा निर्मल था कि उसमें मद्धिम-मद्धिम हलकोरे ऐसे भले मालूम होते थे और दिल ऐसी उमंगों पर था कि जी तैरने पर ललचाया। तुरंत पानी में कूद पड़े और इधर-उधर कल्लोलें करने लगे। निदान उनको बीच धारा में कोई लाल चीजें बहती दिखायी दीं। गौर से देखा तो कमल के फूल मालूम हुए। सूर्य की किरणों से चमकते हूए वह ऐसे सुन्दर मालूम होते थे कि बसंत कुमार का जी उन पर मचल पड़ा। सोचा अगर ये मिल जायें तो प्यारी पूर्णा के कानों के लिए झुमके बनाऊँ। वे मोटे-ताजे आदमी थे। बीच धारे तक तैर जाना उनके लिए कोई बड़ी बात न थी। उनको पूरा विश्वास था कि मैं फूल ला सकता हूँ। जवानी दीवानी होती है। यह न सोचा था कि ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ूँगा त्यों-त्यों फूल भी बढ़ेंगे। उनकी तरफ चले और कोई पन्द्रह मिनट में बीच धारे में पहुँच गये। मगर वहाँ जाकर देखा तो फूल इतना ही दूर और आगे था। अब कुछ-कुछ थकान मालूम होने लगी थी। मगर बीच में कोई रेत ऐसा न था जिस पर बैठकर दम लेते। आगे बढ़ते ही गये। कभी हाथों से जोर मारते, कभी पैरों से जोर लगाते, फूलों तक पहुँचे। मगर उस वक्त तक हाथ-पाँव दोनों बोझल हो गये थे। यहाँ तक कि फूलों को लेने के लिए जब हाथ लपकाना चाहा तो उठ न सका। आखिर उनको दाँतों मे दबाया और लौटे। मगर जब वहाँ से उन्होंने किनारों की तरफ देखा तो ऐसा मालूम हुआ मानों हजार कोस की मंजिल है। बदन में जरा भी शक्ति बाकी न रही थी और पानी भी किनारे से धारें की तरफ बह रहा था। उनका हियाव छूट गया। हाथ उठाया तो वह न उठे। मानो वह अंग में थे ही नहीं। हाय उस वक्त बसंत कुमार के चेहरे पर जो निराशा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और बेबसी छायी हुई थी, उसके खयाल करने ही से छाती फटती है। उनको मालूम हुआ कि मैं डूबा जा रहा हूँ। उस वक्त प्यारी पूर्णा की सुधि आयी कि वह मेरी बाट देख रही होगी। उसकी प्यारी-प्यारी मोहनी सूरत आँखों के सामने खड़ी हो गयी। एक बार और हाथ फेंका मगर कुछ बस न चला। आँखों से आँसू बहने लगे और देखते-देखते वह लहरों में लोप हो गये। गंगा माता ने सदा के लिए उनको अपनी गोद मे लिया। काल ने फूल के भेष में आकर अपना काम किया।

उधर का हाल सुनिए। पंडित जी के चले जाने के बाद पूर्णा ने थालियाँ परसीं। एक बर्तन में गुलाल घोली, उसमें मिलाया। पंडित जी के लिए सन्दूक से नये कपड़े निकाले। उनकी आसतीनों में चुन्नटें डाली। टोपी सादी थी, उसमें सितारे टाँके। आज माथे पर केसर का टीका लगाना शुभ समझा जाता है। उसने अपने कोमल हाथों से केसर और चन्दन रगड़ा, पान लगाये, मेवे सरौते से कतर-कतर कटोरा में रखे। रात को ही प्रेमा के बगीचे से सुन्दर कलियाँ लेती आयी थी और उनको तर कपड़े में लपेटकर रख दिया था। इस समय वह खूब खिल गयी थीं। उनको तागे में गूँथकर सुन्दर हार बनाया और यह सब प्रबन्ध करके अपने प्यारे पति की राह देखने लगी। अब पंडित जी को नहाकर आ जाना चाहिए था। मगर नहीं, अभी कुछ देर नहीं हुई। आते ही होंगे, यही सोचकर पूर्णा ने दस मिनट और उनका रास्ता देखा। अब कुछ-कुछ चिंता होने लगी। क्या करने लगे? धूप कड़ी हो रही है। लौटने पर नहाया-बेनहाया एक हो जाएगा। कदाचित यार दोस्तों से बातें करने लगे हों। नहीं-नहीं मैं उनकों खूब जानती हूँ। नदी नहाने जाते हैं तो तैरने की सूझती है। आज भी तैर रहे होंगे। यह सोचकर उसने आधा घंटा और राह देखी। मगर जब वह अब भी न आये तब तो वह बेचैन होने लगी। महरी से कहा- 'बिल्लो जरा लपक तो जावा, देखो क्या करने लगे। बिल्लो बहुत अच्छे स्वाभव की बुढ़िया थी। इसी घर की चाकरी करते-करते उसके बाल पक गये थे। यह इन दोनों प्राणियों को अपने लड़कों के समान समझती थी। वह तुरंत लपकी हुई गंगा जी की तरफ चली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहाँ जाकर क्या देखती है कि किनारे पर दो-तीन मल्लाह जमा हैं। पंडित जी की धोती, तौलिया, साबुन कमंडल सब किनारे पर धरे हुए हैं। यह देखते ही उसके पैर मन-मन भर के हो गए। दिल धड़-धड़ करने लगा और कलेजा मुँह को आने लगा। या नारायण यह क्या गजब हो गया। बदहवास घबरायी हुई नजदीक पहुँची तो एक मल्लाह ने कहा- काहे बिल्लो, तुम्हारे पंडित नहाय आवा रहेन।

बिल्लो क्या जवाब देती उसका गला रुँध गया, आँखों से आँसू बहने लगे, सर पीटने लगी। मल्लाहों ने समझाया कि अब रोये-पीटे का होत है। उनकी चीज वस्तु लेव और घर का जाव। बेचारे बड़े भले मनई रहेन। बिल्लो ने पंडित जी की चीजें ली और रोते-पीटती घर की तरफ चली। ज्यों-ज्यों वह मकान के निकट आती त्यों-त्यों उसके कदम पीछे को हटे आते थे। हाय नारायण पूर्णा को यह समाचार कैसे सुनाऊँगी वह बिचारी सोलहों सिंगार किये पति की राह देख रही है। यह खबर सुनकर उसकी क्या गत होगी। इस धक्के से उसकी तो छाती फट जायगी। इन्हीं विचारों में डूबी हुई बिल्लो ने रोते हुए घर में कदम रखा। तमाम चीजें जमीन पर पटक दी और छाती पर दो हत्थड़ मार हाय-हाय करने लगी। बेचारी पूर्णा इस वक्त आईना देख रही थी। वह इस समय ऐसी मगन थी और उसका दिल उमंगों और अरमानों से ऐसा भरा हुआ था कि पहले उसको बिल्लो के रोने-पीटने का कारण समझ में न आया। वह हकबकाकर ताकने लगी कि यकायक सब माजरा उसकी समझ में आ गया। दिल पर एक बिजली कौंध गयी। कलेजा सन से हो गया। उसको मालूम हो गया कि मेरा सुहाग उठ गया। जिसने मेरी बाँह पकड़ी थी उससे सदा के लिए बिछड़ गयी। उसके मुँह से केवल इतना निकला- 'हाय नारायण' और वह पछाड़ खाकर धम से जमीन पर गिर पड़ी। बिल्लो ने उसको संभाला और पंखा झलने लगी। थोड़ी देर में पास-पड़ोस की सैंकड़ों औरतें जमा हो गयीं। बाहर भी बहुत आदमी एकत्र हो गये। राय हुई कि जाल डलवाया जाय। बाबू कमला प्रसाद भी आये थे। उन्होंने पुलिस को खबर की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा को ज्योंही इस आपत्ति की खबर मिली उसके पैर तले से मिट्टी निकल गयी। चटपट आढकर घबरायी हुई कोठे से उतरी और गिरती-पड़ती पूर्णा की घर की तरफ चली। माँ ने बहुत रोका मगर कौन सुनता है। जिस वक्त वह वहाँ पहुँची चारों ओर रोना-धोना हो रहा था। घर में ऐसा कोई न था जिसकी आँखों से आँसू की धारा न बह रही हो। अभागिनी पूर्णा का विलाप सुन-सुनकर लोगों के कलेजे मुँह को आये जाते थे। हाय पूर्णा पर जो पहाड़ टूट पड़ा वह सातवें बैरी पर भी न टूटे। अभी एक घंटा पहले वह अपने को संसार की सबसे भाग्यवान औरतों में समझती थी। मगर देखते ही देखते क्या का क्या हो गया। अब उसका-सा अभागा कौन होगा। बेचारी समझाने-बुझाने से जरा चुप हो जाती, मगर ज्योंही पति की किसी बात की सुधि आती त्योंही फिर दिल उमड़ आता और नयनों से नीर की झड़ी लग जाती, चित्त व्याकुल हो जाता और रोम-रोम से पसीना बहने लगता। हाय क्या एक-दो बात याद करने की थी। उसने दो वर्ष तक अपने प्रेम का आनन्द लूटा था। उसकी एक-एक बात उसका हँसना, उसका प्यार की निगाहों से देखना उसको याद आता था। आज उसने चलते-चलते कहा था- प्यारी पूर्णा, जी चाहता है, तुझे आँखों में बिठा लूँ। अफसोस है अब कौन प्यार करेगा। अब किसकी पुतलियों में बैठूँगी कौन कलेजे में बैठायेगा। उस रेशमी धोती और तौलिया पर दृष्टि पड़ी तो जोर से चीख उठी और दोनों हाथों से छाती पीटने लगी। निदान प्रेमा को देखा तो झपटकर उठी और उसके गले से लिपटकर ऐसी फूट-फूट कर रोयी कि भीतर तो भीतर बाहर मुंशी बदरी प्रसाद, बाबू कमला प्रसाद और दूसरे लोग आँखों पर रुमाल दिये बेअख्तियार रो रहे थे। बेचारी प्रेमा के लिए महीने से खाना-पीना दुर्लभ हो रहा था। विराहनल में जलते-जलते वह ऐसी दुर्बल हो गयी थी कि उसके मुँह से रोने की आवाज तक न निकलती थी। हिचकियाँ बंधी हुई थीं और आँखों से मोती के दाने टपक रहे थे। पहले वो समझती थी कि सारे संसार में मैं ही एक अभागेन हूँ। मगर इस समय वह अपना दुःख भूल गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और बड़ी मुश्किल से दिल को थामकर बोली- प्यारी सखी यह क्या गजब हो गया? प्यारी सखी ने इसके जवाब में अपना माथा ठोंका और आसमान की ओर देखा। मगर मुँह से कुछ न बोल सकी।

इस दुखियारी अबला का दुःख बहुत ही करुणायोग्य था। उसकी जिन्दगी को बेड़ा लगाने वाला कोई न था। उसके मैके में सिर्फ एक बूढ़े बाप से नाता था और वह बेचारा भी आजकल का मेहमान हो रहा था। ससुराल में जिससे अपनापन था वह परलोक सिधारा, न सास न ससुर न अपने न पराये। काई चुल्लू भर पानी देने वाला दिखाई न देता था। घर में इतनी जथा-जुगती भी न थी कि साल-दो साल के गुजारे भर को हो जाती। बेचारी पंडित जी को अभी-नौकरी ही करते कितने दिन हुए थे कि रुपया जमा कर लेते। जो कमाया वह खाया। पूर्णा को वह अभी वह बातें नहीं सूझी थी। अभी उसको सोचने का अवकाश ही न मिला था। हाँ, बाहर मरदाने में लोग आपस में इस विषय पर बातचीत कर रहे थे।

दो-ढ़ाई घण्टे तक उस मकान में स्त्रियों का ठट्टा लगा रहा। मगर शाम होते-होते सब अपने घरों को सिधारी। त्योहार का दिन था। ज्यादा कैसे ठहरती। प्रेमा को कुछ देर से मूर्छा पर मूर्छा आने लगी थी। लोग उसे पालकी पर उठाकर वहाँ से ले गये और दिया में बत्ती पड़ते-पड़ते उस घर में सिवाय पूर्णा और बिल्ली के और कोई न था। हाय यही वक्त था कि पंडित जी दफ्तर से आया करते। पूर्णा उस वक्त द्वार पर खड़ी उनकी राह देखा करती और ज्योंही वह ड्योढ़ी में कदम रखते वह लपककर उनके हाथों से छतरी ले लेती और उनके हाथ-मुँह धोने और जलपान की सामग्री इकट्ठी करती। जब तक वह मिष्ठान इत्यादि खाते वह पान के बीड़े लगा रखती। वह प्रेम रस का भूख, दिनभर का थका-माँदा, स्त्री की इन खातिरदारियों से गद्गद् हो जाता। कहाँ वह प्रीति बढ़ाने वाले व्यवहार और कहाँ आज का सन्नाटा? सारा घर भाँय-भाँय कर रहा था। दीवारें काटने को दौड़ती थीं। ऐसा मालूम होता कि इसके बसने वाले उजड़ गये। बेचारी पूर्णा आँगन में बैठी हुई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके कलेजे में अब रोने का दम नहीं है और न आँखों से आँसू बहते हैं। हाँ, कोई दिल में बैठा खून चूस रहा है। वह शोक से मतवाली हो गयी है। नहीं मालूम इस वक्त वह क्या सोच रही है। शायद अपने सिधारने वाले पिया से प्रेम की बातें कर रही है या उससे कर जोड़ के बिनती कर रही है कि मुझे भी अपने पास बुला लो। हमको उस शोकातुरा का हाल लिखते ग्लानि होती है। हाय, वह उस समय पहचानी नहीं जाती। उसका चेहरा पीला पड़ गया है। होठों पर पपड़ी छायी हुई हैं, आँखें सूज आयी हैं, सिर के बाल खुलकर माथे पर बिखर गये हैं, रेशमी साड़ी फटकर तार-तार हो गयी है, बदन पर गहने का नाम भी नहीं है चूड़ियाँ टूटकर चकनाचूर हो गयी है, लम्बी-लम्बी साँसें आ रही हैं। वह चिन्ता, उदासी और शोक का प्रत्यक्ष स्वरूप मालूम होती है। इस वक्त कोई ऐसा नहीं है जो उसको तसल्ली दे। यह सबकुछ हो गया मगर पूर्णा की आस अभी तक कुछ-कुछ बंधी हुई है। उसके कान दरवाजे की तरफ लगे हुए हैं कि कहीं कोई उनके जीवित निकल आने की खबर लाता हो। सच है वियोगियों की आस टूट जाने पर भी बंधी रहती है।

शाम होते-होते इस शोकदायक घटना की खबर सारे शहर में गूँज उठी। जो सुनता सिर धुनता। बाबू अमृतराय हवा खाकर वापस आ रहे थे कि रास्ते में पुलिस के आदमियों को एक लाश के साथ जाते देखा। बहुत-से आदमियों की भीड़ लगी हुई थी। पहले तो वह समझे कि कोई खून का मुकदमा होगा। मगर जब दरियाफ्त किया तो सब हाल मालूम हो गया। पण्डित जी की अचानक मृत्यु पर उनको बहुत रोज हुआ। वह बसंत कुमार को भली भांति जानते थे। उन्हीं की सिफारिश से पंडित जी को दफ्तर में वह जगह मिली थी। बाबू साहब लाश के साथ-साथ थाने पर पहुँचे। डॉक्टर पहले से ही आया हुआ था। जब उसकी जाँच के निमित्त लाश खोली गयी तो जितने लोग खड़े थे सबके रोंगटे खड़े हो गये और कई आदमियों की आँखों से आँसू निकल आये। लाश फूल गयी थी। मगर मुखड़ा ज्यों का त्यों था और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमल के सुन्दर फूल होंठों के बीच दाँतों तले दबे हुए थे। हाय, यह वही फूल थे जिन्होंने काल बनकर उसको डसा था। जब लाश की जाँच हो चुकी तब अमृतराय ने डॉक्टर साहब से लाश को जलाने की आज्ञा माँगी जो उनको सहज ही में मिल गयी। इसके बाद वह अपने मकान पर आये। कपड़े बदले और बाईसिकिल पर सवार होकर पूर्णा के मकान पर पहुँचे। देखा तो चौतरफा सन्नाटा छाया हुआ है। हर तरफ से सियापा बरस रहा है। यही समय पंडित जी के दफ्तर से आने का था। पूर्णा रोज इसी वक्त उनके जूते की आवाजें सुनने की आदी हो रही थी। इस वक्त ज्योंही उसने पैरों की चाप सुनी वह बिजली की तरह दरवाजे की तरफ दौड़ी। मगर ज्योंही दरवाजे पर आयी और अपने पति की जगह पर बाबू अमृतराय को खड़े पाया तो ठिठक गयी। शर्म से सर झुका लिया और निराश होकर उलटे पाँव वापस हुई। मुसीबत के समय पर किसी दुःख पूछने वालों की सूरत आँखों के लिए बहाना हो जाती है। बाबू अमृतराय एक महीने में दो-तीन बार अवश्य आया करते थे और पंडित जी पर बहुत विश्वास रखते थे। इस वक्त उनके आने से पूर्णा के दिल पर एक ताजा सदमा पहुँचा। दिल फिर उमड़ आया और ऐसा फूट-फूट कर रोयी कि बाबू अमृतराय, जो मोम की तरह नर्म दिल रखते थे, बड़ी देर तक चुपचाप खड़े बिसुरा किये। जब जरा जी ठिकाने हुआ तो उन्होंने महरी को बुलाकर बहुत कुछ दिलासा दिया और देहलीज में खड़े होकर पूर्णा को भी समझया और उसको हर तरह की मदद देने का वादा करके, चिराग जलते-जलते अपने घर की तरफ रवाना हुए। उसी वक्त प्रेमा अपनी महताबी पर हवा खाने निकली थी। उसकी आँखें पूर्णा के दरवाजे की तरफ लगी हुई थीं। निदान उसने किसी को बाइसिकिल पर सवार उधर से निकलते दखा। गौर से देखा तो पहचान गई और चौंककर बोली- 'अरे, यह तो अमृतराय हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 5
अँय! यह गजरा क्या हो गया?

पंडित बंसत कुमार का दुनिया से उठ जाना केवल पूर्णा ही के लिए जानलेवा न था, प्रेमा की हालत भी उसी की-सी थी। पहले वह अपने भाग्य पर रोया करती थी। अब विधाता ने उसकी प्यारी सखी पूर्णा पर विपत्ति डालकर उसे और भी शोकातुर बना दिया था। अब उसका दु:ख हटाने वाला, उसका गम गलत करने वाला काई न था। वह आजकल रात-दिन मुँह लपेटे चारपाई पर पड़ी रहती। न वह किसी से हँसती न बोलती। कई-कई दिन बिना दाना-पानी के बीत जाते। बनाव-सिंगार उसको जरा भी न भाता। सर के बाल दो-दो हफ्ते न गूँथे जाते। सुर्मादानी अलग पड़ी रोया करती। कंघी अलग हाय-हाय करती। गहने बिल्कुल उतार फेंके थे। सुबह से शाम तक अपने कमरे में पड़ी रहती। कभी जमीन पर करवटें बदलती, कभी इधर-उधर बौखलायी हुई घूमती, बहुधा बाबू अमृतराय की तस्वीर को देखा करती। और जब उनके प्रेम पत्र याद आते तो रोती। उसे अनुभव होता था कि अब मैं थोड़े दिनों की मेहमान हूँ।

पहले दो महीने तक तो पूर्णा को ब्रह्मणों के खिलाने-पिलाने और पति के मृतक-संस्कार से साँस लेने का अवकाश न मिला कि प्रेमा के घर जाती। इसके बाद भी दो-तीन महीने तक वह घर से बाहर न निकली। उसका जी ऐसा बुझ गया था कि कोई काम अच्छा न लगता। हाँ, प्रेमा माँ के मना करने पर भी दो-तीन बार उसके घर गयी थी। मगर वहाँ जाकर आप रोती और पूर्णा को भी रुलाती। इसलिए अब उधर जाना छोड़ दिया था। किन्तु एक बात वह नित्य करती। वह सन्ध्या समय महताबी पर जाकर जरूर बैठती। इसलिए नहीं कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसको समय सुहाना मालूम होता या हवा खाने को जी चाहता था, नहीं प्रत्युत केवल इसलिए कि वह कभी-कभी बाबू अमृतराय को उधर से आते-जाते देखती। हाय जिस वक्त वह उनको देखते उसका कलेजा बाँसों उछलने लगता। जी चाहता कि कूद पड़ूँ और उनके कदमों पर अपनी जान निछावर कर दूँ। जब तक वह दिखायी देते अकटकी बाँधे उनको देखा करती। जब वह आँखों से ओझल हो जाते तब उसके कलेजे में एक हूक उठती, आपे की कुछ सुधि न रहती। इसी तरह कई महीने बीत गये।

एक दिन वह सदा की भांति अपने कमरे में लेटी हुई करवटें बदल रही थी कि पूर्णा आयी। इस समय उसको देखकर ऐसा ज्ञात होता था कि वह किसी प्रबल रोग से उठी है। चेहरा पीला पड़ गया था, जैसे कोई फूल मुरझा गया हो। उसके कपोल जो कभी गुलाब की तरह खिले हुए थे अब कुम्हला गये थे। वे मृगी की-सी आँखें जिनमें किसी समय जवानी का मतवालापन और प्रेमी का रस भरा हुआ था अन्दर घुसी हुई थी, सिर के बाल कंधों पर इधर-उधर बिखरे हुए थे, गहने-पाते का नाम न था। केवल एक नैन सुख की साड़ी बदन पर पड़ी हुई थी। उसको देखते ही प्रेमा दौड़कर उसके गले से चिपट गयी और लाकर अपनी चारपाई पर बिठा दिया।

कई मिनट तक दोनों सखियाँ एक-दूसरे के मुँह को ताकती रहीं। दोनों के दिल में खयालों का दरिया उमड़ा हुआ था। मगर जबान किसी की न खुलती थी। आखिर पूर्णा ने कहा- आजकल जी अच्छा नहीं है क्या? गलकर काँटा हो गयी हो।

प्रेमा ने मुसकराने की चेष्टा करके कहा- नहीं सखी, मैं बहुत अच्छी तरह हूँ। तुम तो कुशल से रही?

पूर्णा की आँखों में आँसू डबडबा आये। बोली- मेरा कुशल-आनन्द क्या पूछती हो, सखी आनन्द तो मेरे लिए सपना हो गया। पाँच महीने से अधिक हो गये मगर अब तक मेरी आँखें नहीं झपकीं। जान पड़ता है कि नींद आँसू होकर बह गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा- ईश्वर जानता है सखी, मेरा भी तो यही हाल है। हमारी-तुम्हारी एक ही गत है। अगर तुम ब्याही विधवा हो तो मैं कुँवारी विधवा हूँ। सच कहती हूँ सखी, मैंने ठान लिया है कि अब परमार्थ के कामों में ही जीवन व्यतीत करूँगी।

पूर्णा- कैसी बातें करती हो, प्यारी मेरा और तुम्हारा क्या जोड़ा? जितना सुख भोगना मेरे भाग में बदा था भोग चुकी। मगर तुम अपने को क्यों घुलाये डालती हो? सच मानो, सखी, बाबू अमृतराय की दशा भी तुम्हारी ही-सी है। वे आजकल बहुत मलिन दिखायी देते हैं। जब कभी इधर की बात चलाती हूँ तो जाने का नाम ही नहीं लेते। मैंने एक दिन देखा, वह तुम्हारा काढ़ा हुआ रुमाल लिये हुए थे।

यह बातें सुनकर प्रेमा का चेहरा खिल गया। मारे हर्ष के आँखें जगमगाने लगी। पूर्णा का हाथ अपने हाथों में लेकर और उसकी आँखों से आँखें मिलाकर बोली- सखी, इधर की और क्या-क्या बातें आयी थीं?

पूर्णा- (मुस्कराकर) अब क्या सब आज ही सुन लोगी। अभी तो कल ही मैंने पूछा कि आप ब्याह कब करेंगे, तो बोले- 'जब तुम चाहो।' मैं बहुत लजा गई।

प्रेमा- सखी, तुम बड़ी ढीठ हो। क्या तुमको उनके सामने निकलते-पैठते लाज नहीं आती?

पूर्णा- लाज क्यों आती मगर बिना सामने आये काम तो नहीं चलता और सखी, उनसे क्या परदा करूँ उन्होंने मुझ पर जो-जो अनुग्रह किये हैं उनसे मैं कभी उऋण नहीं हो सकती। पहले ही दिन, जबकि मुझ पर वह विपत्ति पड़ी रात को मेरे यहाँ चोरी हो गयी। जो कुछ असबाब था पापियों ने मूस लिया। उस समय मेरे पास एक कौड़ी भी न थी। मैं बड़े फेर में पड़ी हुई थी कि अब क्या करूँ। जिधर आँख उठाती, अंधेरा दिखायी देता। उसके तीसरे दिन बाबू अमृतराय आये। ईश्वर करे वह युग-युग जियें; उन्होंने बिल्लो की तनख्वाह बांध दी और मेरे साथ भी बहुत सलूक किया। अगर वह उस वक्त आड़े न आते तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहने-पाते अब तक कभी के बिक गये होते। सोचती हूँ कि वह इतने बड़े आदमी होकर मुझ भिखारिन के दरवाजे पर आते हैं तो उनसे क्या परदा करूँ। और दुनिया ऐसी है कि इतना भी नहीं देख सकती। वह जो पड़ोस में पंडाइन रहती है, कई बार आई और बोली कि सर के बाल मुड़ा लो। विधवाओं को बाल नहीं रखने चाहिए। मगर मैंने अब तक उनका कहना नहीं माना। इस पर सारे मुहल्ले में मेरे बारे में तरह-तरह की बातें की जाती हैं। कोई कुछ कहता हैं, कोई कुछ। जितने मुँह उतनी बातें। बिल्लो आकर सब वृत्तान्त मुझसे कहती है। सब सुन लेती हूँ और रो-धोकर चुप हो जाती हूँ। मेरे भाग्य में दुख भोगना, लोगों की जली-कटी सुनना न लिखा होता तो यह विपत्ति ही काहे को पड़ती। मगर चाहे कुछ हो मैं इन बालों को मुँडवाकर मुण्डी नहीं बनना चाहती। ईश्वर ने सब कुछ तो हर लिया, अब क्या इन बालों से भी हाथ धोऊँ।

यह कहकर पूर्णा ने कंधों पर बिखरे हुए लम्बे-लम्बे बालों को ऐसी दृष्टि से देखा मानो वे कोई धन हैं। प्रेमा ने भी उन्हें हाथ से संभालकर कहा- नहीं सखी खबरदार, बालों को मुँडवाओगी तो हमसे-तुमसे न बनेगी। पंडाइन को बकने दो। वह पगला गई है। यह देखो नीचे की तरफ जो ऐठन पड़ गयी है, कैसी सुन्दर मालूम होती है यही कहकर प्रेमा उठी। बक्स में सुगन्धित तेल निकाला और जब तक पूर्णा हाय-हाय करे कि उसके सर की चादर खिसकाकर तेल डाल दिया और उसका सर जाँघ पर रखकर धीरे-धीरे मलने लगी। बेचारी पूर्णा इन प्यार की बातों को न सह सकी। आँखों में आँसू भरकर बोली- प्यारी प्रेमा यह क्या गजब करती हो। अभी क्या काम उपहास हो रहा है? जब बाल सँवारे निकलूँगी तो क्या गत होगी। अब तुमसे दिल की बात क्या छिपाऊँ। सखी, ईश्वर जानता है, मुझे यह बाल खुद बोझ मालूम होते हैं। जब इस सूरत का देखने वाला ही संसार से उठ गया तो यह बाल किस काम के। मगर मैं इनके पीछे पड़ोसियों के ताने सहती हूँ तो केवल इसलिए कि सर मुड़ाकर मुझसे बाबू अमृतराय के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामने न निकला जाएगा। यह कहकर पूर्णा जमीन की तरफ ताकने लगी। मानो वह लजा गयी है। प्रेमा भी कुछ सोचने लगी। अपनी सखी के सर में तेल मला, कंघी की, बाल गूँथे और तब धीरे से आईना लाकर उसके सामने रख दिया। पूर्णा ने इधर पाँच महीने से आईने का मुँह नहीं देखा था। वह समझती थी कि मेरी सूरत बिलकुल उतर गयी होगी मगर अब जो देखा तो सिवाय इसके कि मुँह पीला पड़ गया था और कोई भेद न मालूम हुआ। मध्यम स्वर में बोली- प्रेमा, ईश्वर के लिए अब बस करो, भाग से यह सिंगार बदा नहीं हैं। पड़ोसिन देखेंगी तो न जाने क्या अपराध लगा दें।

प्रेमा उसकी सूरत को टकटकी लगाकर देख रही थी। यकायक मुस्कराकर बोली- सखी, तुम जानती हो मैंने तुम्हारा सिंगार क्यों किया?

पूर्णा- मैं क्या जानूँ। तुम्हारा जी चाहता होगा।

प्रेमा- इसलिए कि तुम उनके सामने इसी तरह जाओ।

पूर्णा- तुम बड़ी खोटी हो। भला मैं उनके सामने इस तरह कैसे जाऊँगी। वह देखकर दिल में क्या कहेंगे। देखने वाले यों ही बेसिर-पैर की बातें उड़ाया करते हैं, तब तो और भी नहीं मालूम क्या कहेंगे।

थोड़ी देर तक ऐसे ही हँसी-दिल्ली की बातों-बातों में प्रेमा ने कहा- सखी, अब तो अकेले नहीं रहा जाता। क्या हर्ज है तुम भी यहीं उठ आओ। हम तुम दोनों साथ-साथ रहें।

पूर्णा- सखी, मेरे लिए इससे अधिक हर्ष की कौन-सी बात होगी कि तुम्हारे साथ रहूँ। मगर अब तो पैर फूँक-फूँककर धरना होता है। लोग तुम्हारे घर में ही राजी न होंगे। और अगर यह मान भी गये तो बिना बाबू अमृतराय की मर्जी के कैसे आ सकती हूँ। संसार के लोग भी कैसे अंधे हैं। ऐसे दयालु पुरुष को कहते हैं कि ईसाई हो गया हैं कहने वालों के मुँह से न मालूम कैसे ऐसी झूठी बात निकलती हैं। मुझसे वह कहते थे कि मैं शीघ्र ही एक ऐसा स्थान बनवाने वाला हूँ जहाँ अनाथ, विधवाएँ आकर रहेंगी। वहाँ उनके पालन-पोषण और वस्त्र का प्रबन्ध किया जाएगा और उनको पढ़ना-लिखना और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूजा-पाठ करना सिखाया जाएगा। जिस आदमी के विचार ऐसे शुद्ध हों उसको वह लोग ईसाई और अधर्मी बनाते हैं, जो भूलकर भी भिखमंगे को भीख नहीं देते। ऐसा अंधेर है।

प्रेमा- बहिन, संसार ऐसा ही है। हाय अगर वह मुझे अपनी लौंडी बना लेते तो मेरा भी जीवन सफल हो जाता। ऐसे उदारचित्त दाता की चेरी बनना भी कोई बड़ाई की बात है।

पूर्णा- तुम उनकी चेरी काहे को बनेगी। वह तो आप तुम्हारे सेवक बनने के लिए तैयार बैठे हैं। तुम्हारे लाला जी ही नहीं मानते। विश्वास मानो यदि तुमसे उनका ब्याह न हुआ तो कुँवारे ही रहेंगे।

प्रेमा- यहाँ यही ठान ली है कि चेरी बनूँगी तो उन्हीं की।

कुछ देर तक तो यही बातें हुई। जब सूर्य अस्त होने लगा तो प्रेमा ने कहा- चलो सखी, तुमको बगीचे की सैर करा लावें। जब से तुम्हारा आना-जाना छूटा तब से मैं उधर भूलकर भी नहीं गयी।

पूर्णा- मेरे बाल खोल दो तो चलूँ। तुम्हारी भावज देखेंगी तो ताना मारेंगी।

प्रेमा- उनके ताने का क्या डर, वह तो हवा, से उलझा करती हैं। दोनों सखियाँ उठी और हाथ दिये कोठे से उतरकर फुलवारी में आयी। यह एक छोटी-सी बगिया थी जिसमें भांति-भांति के फूल खिल रहे थे। प्रेमा को फूलों से बहुत प्रेम था। उसी ने अपने दिल बहलाव के लिए बगीचा बनवाया था। एक माली इसकी देख-भाल के लिए नौकर था। बाग के बीचों-बीच एक गोल चबूतरा बना हुआ था। दोनों सखियाँ इस चबूतरे पर बैठ गयी। इनको देखते ही माली बहुत-सी कलियाँ एक साफ कपड़े में लपेट कर लाया। प्रेमा ने उनको पूर्णा को देना चाहा। मगर उसने बहुत उदास होकर कहा- बहिन, मुझे क्षमा करो, इनकी बू बास तुमको मुबारक हो। सोहाग के साथ मैंने फूल भी त्याग दिये। हाय जिस दिन वह काल रूपी नदी में नहाने गये थे उस दिन ऐसे ही कलियों का हार बनाया था। (रोकर) वह हार धरा का धरा रह गया। तब से मैंने फूलों को हाथ नहीं लगाया। यह कहते-कहते वह यकायक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौंक पड़ी और बोली- सखी अब मैं जाऊँगी। आज इतवार का दिन है। बाबू साहब आते होंगे।

प्रेमा ने रोनी हँसकर कहा- 'नहीं' सखी, अभी उनके आने में आधे घण्टे की देर है। मुझे इस समय का ऐसा ठीक परिचय मिल गया है कि अगर कोठरी में बन्द कर दो तो भी शायद गलती न करूँ। सखी कहते लाज आती है। मैं घण्टों बैठकर झरोखे से उनकी राह देखा करती हूँ। चंचल चित्त को बहुत समझती हूँ। पर मानता ही नहीं।

पूर्णा ने उसको ढारस दिया और अपनी सखी से गले मिल, शर्माती हुई घूँघट से चेहरे को छिपाये अपने घर की तरफ चली और प्रेमा किसी के दर्शन की अभिलाषा कर महताबी पर जाकर टहलने लगी।

पूर्णा के मकान पर पहुँचे ठीक आधी घड़ी हुई थी कि बाबू अमृतराय बाइसिकिल पर फर-फर करते आ पहुँचे। आज उन्होंने अंग्रेजी बाने की जगह बंगाली बाना धारण किया था, जो उन पर खूब सजता था। उनको देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह राजकुमार नहीं हैं बाजारों में जब निकलते तो सबकी आँखे उन्हीं की तरफ उठती थीं। रीति के विरुद्ध आज उनकी दाहिनी कलाई पर एक बहुत ही सुगन्धित मनोहर बेल का हार लिपटा हुआ था, जिससे सुगन्ध उड़ रही थी और इस सुगन्ध से लेवेण्डर की खुशबू मिलकर मानों सोने में सोहागा हो गया था। संदली रेशमी के बेलदार कुरते पर धानी रंग की रेशमी चादर हवा के मन्द-मन्द झोंकों से लहरा-लहरा कर एक अनोखी छवि दिखाती थी। उनकी आहट पाते ही बिल्लो घर में से निकल आई और उनको ले जाकर कमरे में बैठा दिया।

अमृतराय- क्यों बिल्लो, सब कुशल है?

बिल्लो- हाँ, सरकार सब कुशल है।

अमृतराय- कोई तकलीफ तो नहीं है?

बिल्लो- नहीं, सरकार कोई तकलीफ नहीं है।

इतने में बैठक का भीतर वाला दरवाजा खुला और पूर्णा निकली। अमृतराय ने उसकी तरफ देखा तो अचम्भे में आ गये और उनकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निगाह आप ही आप उसके चेहरे पर जम गई। पूर्णा मारे लज्जा के गड़ी जाती थी कि आज क्यों यह मेरी ओर ऐसे ताक रहे हैं। वह भूल गयी थी कि आज मैंने बालों में तेल डाला है, कंघी की है और माथे पर लाल बिन्दी भी लगायी है। अमृतराय ने उसको इस बनाव-चुनाव के साथ कभी नहीं देखा था और न वह समझे थे कि वह ऐसी रूपवती होगी।

कुछ देर तक तो पूर्णा सर नीचा किये खड़ी रही। यकायक उसको अपने गुँथे केश की सुधि आ गयी और उसने झट लजाकर सर और भी निहुरा लिया, घूँघट को बढ़ाकर चेहरा छिपा लिया। और यह खयाल करके कि शायद बाबू साहब इस बनाव सिंगार से नाराज हों वह बहुत ही भोलेपन के साथ बोली- मैं क्या करूँ, मैं तो प्रेमा के घर गयी थी। उन्होंने हठ करके सर में तेल डालकर बाल गूँथ दिये। मैं कल सब बाल कटवा डालूँगी। यह कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू भर आये।

उसके बनाव सिंगार ने अमृतराय पर पहले ही जादू चलाया था। अब इस भोलेपन ने और लुभा लिया। जवाब दिया- नहीं-नहीं, तुम्हें कसम है, ऐसा हरगिज न करना। मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हारी सखी ने तुम्हारे ऊपर यह कृपा की। अगर वह यहाँ इस समय होती तो इसके निहोरे में मैं उनको धन्यवाद देता।

पूर्णा पढ़ी-लिखी औरत थी। इस इशारे को समझ गयी और झेंपकर गर्दन नीचे कर ली। बाबू अमृतराय दिल में डर रहे थे कि कहीं इस छेड़ पर यह देवी रुष्ट न हो जाए। नहीं तो फिर मनाना कठिन हो जाएगा। मगर जब उसे मुसकराकर गर्दन नीची करते देखा तो और भी ढिठाई करने का साहस हुआ। बोले- मैं तो समझता था प्रेमा मुझे भूल गई होगी। मगर मालूम होता है कि अभी तक मुझ पर कुछ-कुछ स्नेह बाकी है।

अब की पूर्णा ने गर्दन उठायी और अमृतराय के चेहरे पर आँखें जमाकर बोली, जैसे कोई वकील किसी दुखियारे के लिए न्यायाधीश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अपील करता हो- बाबू साहब, आपका केवल इतना समझना कि प्रेमा आपको भूल गयी होगी, उन पर बड़ा भारी आपेक्ष है। प्रेमा का प्रेम आपके निमित्त सच्चा है। आज उनकी दशा देखकर मैं अपनी विपत्ति भूल गयी। वह गलकर आधी हो गयी है। महीनों से खाना-पीना नाम-मात्र है। सारे दिन अपनी कोठरी में पड़े-पड़े रोया करती हैं। घर वाले लाख समझाते हैं मगर नहीं मानतीं। आज तो उन्होंने आपका नाम लेकर कहा- सखी अगर चेरी बनूँगी तो उन्हीं की।

यह समाचार सुनकर अमृतराय कुछ उदास हो गये। यह अग्नि जो कलेजे में सुलग रही थी और जिसको उन्होंने सामाजिक सुधार के राख तले दबा रखा था इस समय क्षण भर के लिए धधक उठी, जी बेचैन होने लगा, दिल उकसाने लगा कि मुंशी बदरी प्रसाद का घर दूर नहीं है। दम भर के लिए चलो। अभी सब काम हुआ जाता है। मगर फिर देशहित के उत्साह ने दिल को रोका। बोले- पूर्णा, तुम जानती हो कि मुझे प्रेमा से कितनी मुहब्बत थी। चार वर्ष तक मैं दिल में उनकी पूजा करता रहा। मगर मुंशी बदरी प्रसाद ने मेरी दिनों की बंधी हुई आस केवल इस बात पर तोड़ दी कि मैं सामाजिक सुधार का पक्षपाती हो गया। आखिर मैंने भी रो-रोकर उस आग को बुझाया और अब तो दिल एक दूसरी ही देवी की उपासना करने लगा है। अगर यह आशा भी यों ही टूट गयी तो सत्य मानो, बिना ब्याह ही रहूँगा।

पूर्णा का अब तक यह खयाल था कि बाबू अमृतराय प्रेमा से ब्याह करेंगे। मगर अब तो उसको मालूम हुआ कि उनका ब्याह कहीं और लग रहा है तब उसको कुछ आश्चर्य हुआ। दिल से बातें करने लगी। प्यारी प्रेमा, क्या तेरी प्रीति का ऐसा दुखदायी परिणाम होगा। तेरे माँ-बाप, भाई-बंदु तेरी जान के ग्राह हो रहे हैं। यह बेचारा तो अभी तक तुझ पर जान देता है। चाहे वह अपने मुँह से कुछ भी न कहे, मगर मेरा दिल गवाही देता है कि तेरी मुहब्बत उसके रोम-रोम में बसी है। मगर जब तेरे मिलने की कोई आशा ही न हो तो बेचारी क्या करे मजबूर होकर कहीं और ब्याह करेगा। इसमें इसका क्या दोष है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन में इस तरह विचार कर बोली- बाबू साहब, आपको अधिकार है जहाँ चाहो संबंध करो। मगर मैं तो यही कहूँगी कि अगर इस शहर में आपके जोड़ की कोई है तो वह प्रमा है।

अमृत॰- यह क्यों नहीं कहतीं कि यहाँ उनके योग्य कोई वर नहीं, इसीलिए तो मुंशी बदरी प्रसाद ने मुझे छुटकार किया।

पूर्णा- यह आप कैसी बात कहते हैं। प्रेमा और आपका जोड़ ईश्वर ने अपने हाथ से बनाया है।

अमृत॰- जब उनके योग्य मैं था। अब नहीं हूँ।

पूर्णा- अच्छा आजकल किसके यहाँ बातचीत हो रही है?

अमृत॰- (मुस्कराकर) नाम अभी नहीं बताऊँगा। बातचीत तो हो रही है। मगर अभी कोई पक्की उम्मीदें नहीं हैं।

पूर्णा- वाह ऐसा भी कहीं हो सकता है? यहाँ ऐसा कौन रईस है जो आपसे नाता करने में अपनी बड़ाई न समझता हो।

अमृत॰- नहीं कुछ बात ही ऐसी आ पड़ी है।

पूर्णा- अगर मुझसे कोई काम हो सके तो मैं करने को तैयार हूँ। जो काम मेरे योग्य हो बता दीजिए।

अमृत॰- (मुस्कराकर) तुम्हारी मरजी बिना तो वह काम कभी पूरा हो ही नहीं सकता। तुम चाहो तो बहुत जल्द मेरा घर बस सकता है।

पूर्णा बहुत प्रसन्न हुई कि मैं भी अब इनके कुछ काम आ सकूँगी। उसकी समझ में इस वाक्य के अर्थ नहीं आये कि 'तुम्हारी मर्जी बिना तो वह काम पूरा हो ही नहीं सकता। उसने समझा कि शायद मुझसे यही कहेंगे कि जा के लड़की को देख आवे। छः महीने के अन्दर ही अन्दर वह इसका अभिप्राय भली भांति समझ गयी।

बाबू अमृतराय कुछ देर तक यहाँ और बैठे। उनकी आँखें आज इधर-उधर से घूमकर आतीं और पूर्णा के चेहरे पर गड़ जाती। वह कनखियों से उनकी ओर ताकती तो उन्हें अपनी तरफ ताकते पाती। आखिर वह उठे और चलते समय बोले- पूर्णा, यह गजरा आज तुम्हारे वास्ते लाया हूँ। देखो इसमें से कैसी सुगन्ध उड़ रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा भौंचक हो गयी। यह आज अनोखी बात कैसे; एक मिनट तक तो वह इस सोच-विचार में थी कि लूँ या न लूँ। उन गजरों का ध्यान आया जो उसने अपने पति के लिए होली के दिन बनाये थे। फिर उन कलियों का खयाल आया। उसने इरादा किया मैं न लूँगी। जबान ने कहा- मैं इसे लेकर क्या करूँगी, मगर हाथ आप ही आप बढ़ गया। बाबू साहब ने खुश होकर गजरा उसके हाथ में पहनाया, उसको खूब नजर भरकर देखा। फिर बाहर निकल आये और पैरगाड़ी पर सवार हो रवाना हो गये। पूर्णा कई मिनट तक सन्नाटे में खड़ी रही। वह सोचती थी कि मैंने तो गजरा लेने से इंकार किया था। फिर यह मेरे हाथ में कैसे आ गया। जी चाहा कि फेंक दे। मगर फिर यह खयाल पलट गया और उसने गजरे को हाथ में पहन लिया। हाय उस समय भी भोली-भाली पूर्णा के समझ में न आया कि इस जुमले का क्या मतलब है कि तुम चाहो तो बहुत जल्द मेरा घर बस सकता है।

उधर प्रेमा महताबी पर टहल रही थी। उसने बाबू साहब को आते देखा था। उनकी सज-धज उसकी आँखों में खुब गयी थी। उसने उन्हें कभी इस बनाव के साथ नहीं देखा था। वह सोच रही थी कि आज इनके हाथ में गजरा क्यों है। उसकी आँखें पूर्णा के घर की तरफ लगी हुई थीं। उसका जी झुँझलाता था कि वह आज इतनी देर क्यों लगा रहे हैं? एकाएक पैरगाड़ी दिखाई दी। उसने फिर बाबू साहब को देखा। चेहरा खिला हुआ था। कलाइयों पर नजर पड़ गयी, अँय वह गजरा क्या हो गया?

पूर्णा ने गजरा पहन तो लिया मगर रातभर उसकी आँखों में नींद नहीं आयी। उसकी समझ में यह बात न आती थी कि अमृतराय ने उसे गजरा क्यों दिया। उसे ऐसा मालूम होता था कि पंडित बसंत कुमार उसकी तरफ बहुत क्रोध से देख रहे हैं। उसने चाहा कि गजरा उतार कर फेंक दूँ मगर नहीं मालूम क्यों उसके हाथ काँपने लगे। सारी रात उसने आँखों में काटी। प्रभात हुआ, अभी सूर्य भगवान ने भी कृपा न की थी कि [illegible] और चौबाइन और बाबू कमला प्रसाद की वृद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महराजिन और पड़ोस की सेठानी जी कई दूसरी औरतों के साथ पूर्णा के मकान में आ उपस्थित हुई। उसने बड़े आदर से सबको बिठाया, सबके पैर छुएँ उसके बाद यह पंचायत होने लगी।

पंडाइन (जो बुढ़ापे की वजह से सूखकर छोहारे की तरह हो गयी थी)- क्यों दुलहिन, पंडित जी को गंगा लाभ हुए कितने दिन बीते?

पूर्णा- (डरते-डरते) पाँच महीने से कुछ अधिक हुआ होगा।

पंडाइन- और अभी से तुम सबके घर आने-जाने लगीं। क्या नाम कि कल तुम सरकार के घर चली गयी थीं। उनकी कुँवारी कन्या के पास दिनभर बैठी रहीं। भला सोचो तुमने कोई अच्छा काम किया। क्या नाम कि तुम्हारा और उनका अब क्या साथ। जब वह तुम्हारी सखी थीं, तब थीं। अब तो तुम विधवा हो गयीं। तुमको कम से कम सालभर तक घर से बाहर पाँव न निकालना चाहिए। तुम्हारे लिए सालभर तक हँसना-बोलना मना है। हम यह नहीं कहते कि तुम दर्शन को न जाव या स्नान को न जाव। स्नान-पूजा तो तुम्हारा धर्म ही है। हाँ, किसी सोहागिन या किसी कुँवारी कन्या पर तुमको अपनी छाया नहीं डालनी चाहिए।

पंडाइन चुप हुई तो महाराजिन टुइयाँ की तरह चहकने लगीं- क्या बतलाऊँ, बड़ी सरकार और दुलहिन दोनों लहू का घूँट पीकर रह गई। ईश्वर जाने बड़ी सरकार तो बिलख-बिलख रो रही थीं कि एक तो बेचारी लड़की के यों हर जान के लाले पड़े हैं। दूसरी अब राँड बेवा के साथ उठना-बैठना है। नहीं मालूम नारायण क्या करने वाले है। छोटी सरकार मारे क्रोध के काँप रही थी। आँखों से ज्वाला निकल रही थी। मैंने उनको समझाया कि आज जाने दीजिए वह बेचारी तो अभी बच्ची है। खोटे-खरे का मर्म क्या जाने? सरकार का बेटा जिये, जब बहुत समझाया तब जाके मानीं। नहीं तो कहती थीं मैं अभी जाकर खड़े-खड़े निकाल देती हूँ। सो बेटा, अब तुम सोहागिनों के साथ बैठने योग्य नहीं रहीं। अरे ईश्वर ने तो तुम पर विपत्ति डाल दी। जब अपना प्राण-प्रिय ही न रहा तो अब कैसा हँसना-बोलना। अब तो तुम्हारा धर्म यही है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि चुपचाप अपने घर मे पड़ी रहो। जो कुछ रूखा-सूखा मिले खाओ पियो और सरकार का बेटा जिये, जहाँ तक हो सके, धर्म के काम करो।

महाराजिन के चुप होते ही चौबाइन गरजने लगीं। यह एक मोटी भदेसिल और अधेड़ औरत थी- भला इनसे पूछा कि अभी तुम्हारे दुल्हे को उठे पाँच महीने भी न बीते, अभी से तुम कंघी-चोटी करने लगीं। क्या कि तुम अब विधवा हो गई। तुमको अब सिंगार-पेटार से क्या सरोकार ठहरा। क्या नाम कि मैंने हजारों औरतों को देखा है जो पति के मरने के बाद गहना-पाता नहीं पहनती। हँसना-बोलना तक छोड़ देती है। यह न कि आज तो सुहाग उठा और कल सिंगार-पटार होने लगा। मैं लल्लो-पत्तों की बात नहीं जानती। कहूँगी सच। चाहे किसी को तीता लगे या मीठा। बाबू अमृतराय का रोज-रोज आना ठीक नहीं है। है कि नहीं, सेठानी जी?

सेठानी जी बहुत मोटी थीं और भारी-भारी गहनों से लदी थी। माँस के लोथड़े हड्डियों से अलग होकर नीचे लटक रहे थे। इसकी भी एक बहू राँड़ हो गयी थी जिसका जीवन इसने व्यर्थ कर रखा था। इसका स्वभाव था कि बात करते समय हाथों को मटकाया करती थी। महाराजिन की बात सुनकर- 'जो सच बात होगी सब कोई कहेगा। इसमें किसी का क्या डर। भला किसी ने कभी राँड बेवा को भी माथे पर बिंदी देते देखा है। जब सोहाग उठ गया तो फिर सिंदूर कैसा। मेरी भी तो एक बहू विधवा है। मगर आज तक कभी मैंने उसको लाल साड़ी नहीं पहनने दी। न जाने इन छोकरियों का जी कैसा है कि विधवा हो जाने पर भी सिंगार पर जी ललचाया करता है। अरे इनको चाहिए कि बाबा अब राँड हो गई। हमको निगोड़े सिंगार से क्या लेना।

महाराजिन- सरकार का बेटा जिये तुम बहुत ठीक कहती हो सेठानी जी। कल छोटी सरकार ने जो इनको माँग में सेंदूर लगाये देखा तो खड़ी ठक रह गयी। दाँतों तले उंगली दबायी कि अभी तीन दिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की विधवा और यह सिंगार। सो बेटा, अब तुमको समझ-बूझकर काम करना चाहिए। तुम अब बच्ची नहीं हो।

सेठानी- और क्या, चाहे बच्ची हो या बूढ़ी। जब बेराह चलेगी तो सब ही कहेंगे। चुप क्यों हो पंडाइन, इनके लिए अब कोई राह-बाट निकाल दो।

डाइन- जब यह अपने मन की हो गयीं तो कोई क्या राह-बाट निकाले। इनको चाहिए कि ये अपने लंबे-लंबे केश कटवा डाले। क्या नाम कि दूसरों के घर आना-जाना छोड़ दे। कंघी-चोटी कभी न करें पान न खायें। रंगीन साड़ी न पहनें और जैसे संसार की विधवायें रहती है वैसे रहें।

चौबाइन- और बाबू अमृतराय से कह दें कि यहाँ न आया करें। इस पर एक औरत ने जो गहने कपड़े से बहुत मालदार जान पड़ती थी, कहा- चौबाइन यह सब तो तुम कह गयी मगर जो कहीं बाबू अमृतराय चिढ़ गये तो क्या तुम इस बेचारी का रोटी-कपड़ा चला दोगी? कोई विधवा हो गयी तो क्या अब अपना मुँह सी लें।

महाराजिन- (हाथ चमकाकर) यह कौन बोला? ठसों। क्या ममता फड़कने लगी?

सेठानी- (हाथ मटकाकर) तुझे किसने बुलाया जो आ के बीच में बोल उठी। राँड तो हो गयी हो, काहे नहीं जा के बाजर में बैठती हो।

चौबाइन- जाने भी दो सेठानी जी, इस बौरी के मुँह क्या लगती हो।

सेठानी- (कड़ककर) इस मुई को यहाँ किसने बुलाया। यह तो चाहती है जैसी मैं बेहयास हूँ वैसा ही संसार हो जाय।

महाराजिन- हम तो सीख दे रही थीं तो इसे क्यों बुरा लगा? यह कौन होती है बीच में बोलने वाली?

चौबाइन- बहिन, उस कुटनी से नाहक बोलती हो। उसको तो अब कुटनापा करना है।

इस भांति कटूक्तियों द्वारा सीख देकर यह सब स्त्रियाँ यहा से पधारीं। महाराजिन भी मुंशी बदरी प्रसाद के यहाँ खाना पकाने गयीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनसे और छोटी सरकार से बहुत बनती थी। वह इन पर बहुत विश्वास रखती थी। महाराजिन ने जाते ही सारी कथा खूब नमक-मिर्च लगाकर बयान की और छोटी सरकार ने भी इस बात को गाँठ बाँध लिया और प्रेमा को जलाने और सुलगाने के लिए उसे उत्तम समझकर उसके कमरे की तरफ चली।

यों तो प्रेमा प्रतिदिन सारी रात जगा करती थी। मगर कभी-कभी घंटे आधे घंटे के लिए नींद आ जाती थी। नींद क्या आ जाती थी, एक ऊँघ-सी आ जाती थी, मगर जब से उसने बाबू अमृतराय को बंगालियों के भेस में देखा था और पूणा के घर से लौटते वक्त उसको उनकी कलाई पर गजरा न नजर आया था तब से उसके पेट में खलबली पड़ी हुई थी कि कब पूर्णा आवे और कब सारा हाल मालूम हो। रात को बेचैनी के मारे उठ-उठ घड़ी पर आँखे दौड़ाती कि कब भोर हो। इस वक्त जो भावज के पैरों की चाल सुनी तो यह समझकर कि पूर्णा आ रही है, लपकी हुई दरवाजे तक आयी। मगर ज्योंही भावज को देखा ठिठक गई और बोली- कैसे चलीं, भाभी?

भाभी तो यह चाहती ही थीं कि छेड़-छाड़ के लिए कोई मौका मिले। यह प्रश्न सुनते ही तिनक कर बोली- क्या बताऊँ कैसे चली? अब से जब तुम्हारे पास आया करूँगी तो इस सवाल का जवाब सोचकर आया करूँगी। तुम्हारी तरह सबका लोहू थोड़े ही सफेद हो गया है कि चाहे किसी की जान निकल जाय, घी का घड़ा ढलक जाए, मगर अपने कमरे से पाँव बाहर न निकाले।

प्रेमा ने वह सवाल यों ही पूछ लिया था। उसके जब यह अर्थ लगाये गये तो उसको बहुत बुरा मालूम हुआ। बोली- भाभी, तुम्हारे तो नाक पर गुस्सा रहता है। तुम जरा-सी बात का बतंगड़ बना देती हो। भला मैंने कौन-सी बात बुरा मानने की कही थी?

भाभी- कुछ नहीं, तुम तो जो कुछ कहती हो मानो मुँह से फूल झाड़ती हो। तुम्हारे मुँह में मिसरी घोली हुई है ना और सबके तो नाक पर गुस्सा रहता है, सबसे लड़ा ही करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा- (झल्लाकर) भावज, इस समय मेरा तो चित्त बिगड़ा हुआ है। ईश्वर के लिए मुझसे मत उलझो। मैं तो यों ही अपनी जान को रो रही हूँ। उस पर से तुम और भी नमक छिड़कने आयीं।

भाभी- (मटककर) हाँ रानी, मेरा तो चित्त बिगड़ा हुआ है, सर फिरा हुआ है। जरा सीधी-सादी हूँ न। मुझको देखकर भागा करो। मैं कटही कुतिया हूँ, सबको काटती चलती हूँ। मैं भी यारों को चुपके-चुपके चिट्ठी-पत्री लिखा करती, तसवीरें बदला करती तो मैं भी सीता कहलाती और मुझ पर भी घर भर जान देने लगता। मगर मान न मान मैं तेरा मेहमान। तुम लाख जतन करों, लाख चिट्ठियाँ लिखो मगर वह सोने की चिड़िया हाथ आने वाली नहीं। यह जली-कटी सुनकर प्रेमा से जब्त न हो सका। बेचारी सीधे स्वभाव की औरत थी। उसका वर्षो से विरह की अग्नि में जलते-जलते कलेजा और भी पक गया था। वह रोने लगी।

भावज ने जब उसको रोते देखा तो मारे हर्ष के आँखे जगमगा गयीं। हत्तेरे की। कैसा रुला दिया। बोली- बिलखने क्या लगीं, क्या अम्मा को सुनाकर देश निकाला करा दोगी? कुछ झूठ थोड़ी ही कहती हूँ। वही अमृतराय जिनके पास आप चुपके-चुपके प्रेम-पत्र भेजा करती थी अब दिन-दहाड़े उस राँड पूर्णा के घर आता है और घंटो वहीं बैठा रहता है। सुनती हूँ फूल के गजरे ला लाकर पहनाता है। शायद दो एक गहने भी दिये हैं।

प्रेमा इससे ज्यादा न सुन सकी। गिड़गिड़ाकर बोली- भाभी, मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ मुझ पर दया करो। मुझे जो चाहो कह लो। (रोकर) बड़ी हो, जी चाहे मार लो। मगर किसी का नाम लेकर और उस पर छठे रखाकर मेरे कदल को मत जलाओ। आखिर किसी के सर पर झूठ-मूठ अपराध क्यों लगाती हो।

प्रेमा ने तो यह बात बड़ी दीनता से कही। मगर छोटी सरकार 'छुद्दे रखकर' उस पर बिगड़ गयीं। चमककर बोलीं- हाँ, हाँ रानी, मैं दूसरों पर छुद्दे रखकर तुमको जलाने आती हूँ ना। मैं तो झूठ का व्यवहार करती हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे तुम्हारे सामने झूठ बोलने से मिठाई मिलती होगी। आज मुहल्ले भर में घर-घर यही चर्चा हो रही है। तुम तो पढ़ी लिखी हो, भला तुम्हीं सोचो एक तीस वर्ष के संडे मर्दवे का पूर्णा से क्या काम? माना कि वह उसका रोटी-कपड़ा चलाते हैं मगर यह तो दुनिया है। जब एक पर आ पड़ती है तो दूसरा उसके आड़ आता है। भले मनुष्यों का यह ढंग नहीं है कि दूसरों को बहकाया करें, और उस छोकरी को क्या कोई बहकायेगा वह तो आप मर्दों पर डोरे डाला करती है। मैंने तो जिस दिन उसकी सूरत देखी थी उसी दिन ताड़ गयी थी कि यह एक ही विष की गांठ है। अभी तीन दिन भी दूल्हे को मरे हुए नहीं बीते कि सबको झमकड़ा दिखाने लगी। दूल्हा क्या मरा मानो एक बला दूर हुई। कल जब वह यहाँ आई थी तो मैं बाल बंधा रही थी। नहीं तो डेउढ़ी के भीतर तो पैर धरने ही नहीं देती। चुड़ैल कहीं की, यहाँ आकर तुम्हारी सहेली बनती है। इसी से अमृतराय को अपना यौवन दिखाकर अपना लिया। कल कैसा लचक-लचक कर ठुमुक-ठुमुक् चलती थी। देख-देख कर आँखे फूटती थीं। खबरदार, जो अब कभी, तुमने उस चुड़ैल को अपने यहाँ बिठाया। मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहती। जबान वह बला है कि झूठ बात का भी विश्वास दिला देती है। छोटी सरकार ने जो कुछ कहा वह तो सब सच था। भला उसका असर क्यों न होता। अगर उसने गजरा लिये हुए जाते न देखा होता तो भावज की बातों को अवश्य बनावट समझती। फिर भी वह ऐसी ओछी नहीं थी कि उसी वक्त अमृतराय और पूर्णा को कोसने लगती और यह समझ लेती कि उन दोनों में कुछ साँठ-गाँठ है। हाँ, वह अपनी चारपाई पर जाकर लेट गयी और मुँह लपेटकर कुछ सोचने लगी।

प्रेमा को तो पलंग पर लेटकर भावज की बातों को तौलने दीजिए और हम मरदाने में चले। यह एक बहुत सजा हुआ लंबा चौड़ा दीवानखाना है। जमीन पर मिर्जापुर की खुबसूरत कालीनें बिछी हुई है। भांति-भांति की गद्देदार कुर्सियाँ लगी हुई हैं। दीवारें उत्तम चित्रों से भूक्षित है। पंखा झला जा रहा है। मुंशी बदरी प्रसाद एक आरामकुर्सी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर बैठे ऐनक लगाये एक अखबार पढ़ रहे है। उनके दायें-बायें की कुर्सियों पर कोई और महाशय रईस बैठे हुए हैं। वह सामने की तरफ मुंशी गुलजारी लाल हैं और उनके बगल में बाबू दाननाथ है। दाहिनी तरफ बाबू कमला प्रसाद मुंशी झम्मन लाल से कुछ कानाफूसी कर रहे हैं। बायीं और दो तीन और आदमी हैं जिनको हम नहीं पहचानते। कई मिनट तक मुंशी बदरी प्रसाद अखबार पढ़ते रहे। आखिर सर उठाया और सभा की तरफ देखकर बड़ी गंभीरता से बोले- बाबू अमृतराय के लेख अब बड़े ही निंदनीय होते जाते हैं।

गुलजारी लाल- क्या आज फिर कुछ जहर उगला?

बदरी प्रसाद- कुछ न पूछिए, आज तो उन्होंने खुली-खुली गालियाँ दी है। हमसे तो अब यह बर्दाश्त नहीं होता।

गुलजारी- आखिर कोई कहाँ तक बर्दाश्त करे। मैंने तो इस अखबार को पढ़ना तक छोड़ दिया।

झम्मन लाल- गोया अपनी-अपनी समझ में बड़ा भारी काम किया। अजी आपका धर्म यह है कि उन लेखों को काटिए, उनका उत्तर दीजिए। मैं आजकल एक कविता रच रहा हूँ, उसमे मैंने इनको ऐसा बनाया है कि यह भी क्या याद करेंगे।

कमला प्रसाद- बाबू अमृतराय ऐसे अधजीवे आदमी नहीं है कि आपके कविता, चौपाई से डर जाएँ। वह जिस काम में लिपटते हैं सारे जी से लिपटते हैं।

झम्मन॰- हम भी सारे जी से उनके पीछे पड़ जाएंगे। फिर देखें वह कैसे शहर में मुँह दिखाते हैं। कहो तो चुटकी बजाते उनको सारे शहर में बदनाम कर दूँ।

कमला॰- (जोर देकर) यह कौन-सी बहादुरी है। अगर आप लोग उनसे विरोध मोल लेना चाहते हैं। तो सोच-समझ कर लीजिए। उनके लेखों को पढ़िए, उनको मन में विचारिए, उनका जवाब लिखिए, उनकी तरह देहातों में जा-जाकर व्याख्यान दीजिए तब जा के काम चलेगा। कई दिन हुए मैं अपने इलाके पर से आ रहा था कि एक गाँव में मैंने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दस-बारह हजार आदमियों की भीड़ देखी। मैंने समझा पैठ हैं। मगर जब एक आदमी से पूछा तो मालूम हुआ कि बाबू अमृतराय का व्याख्यान था। और यह काम अकेले वही नहीं करते, कॉलिज के कई होनहार लड़के उनके सहायक हो गये हैं और यह तो आप लोग सभी जानते हैं कि इधर कई महीने से उनकी वकालत अंधा-धुंध बढ़ रही है।

गुलजारी लाल- आप तो सलाह इस तरह देते हैं गोया आप खुद कुछ न करेंगे।

कमला प्रसाद- न, मैं इस काम में। आपका शरीक नहीं हो सकता। मुझे अमृतराय के सब सिद्धांतो से मेल है, सिवाय विधवा-विवाह के।

बदरी प्रसाद- (डपटकर) बच्चा, कभी तुमको समझ न आयेगी। ऐसी बातें मुँह से मत निकाला करो।

झमन लाल- (कमला प्रसाद से) क्या आप विलायत जाने के लिए तैयार हैं?

कमला प्रसाद- मैं इसमें कोई हानि नहीं समझता।

गुलजारी लाल- (हँसकर) यह नये बिगड़े हैं। इनको अभी अस्पताल की हवा खिलाइए।

बदरी प्रसाद- (झल्लाकर) बच्चा, तुम मेरे सामने से हट जाओ। मुझे रोज होता है।

कमला प्रसाद को भी गुस्सा आ गया। वह उठकर जाने लगे कि दो-तीन आदमियों ने मनाया और फिर कुर्सी पर लाकर बिठा दिया। इसी बीच में मिस्टर शर्मा की सवारी आयी। आप वही उत्साही पुरुष हैं जिन्होंने अमृतराय को पक्की सहायता का वादा किया था। इनको देखते ही लोगों ने बड़े आदर से कुर्सी पर बिठा दिया। मिस्टर शर्मा उस शहर में म्यूनिसिपैलिटी के सेक्रेटरी थे।

गुलजारी लाल- कहिए पंडित जी क्या खबर है?

मिस्टर शर्मा- (मूँछों पर हाथ फेरकर) वह ताजा खबर लाया हूँ कि आप लोग सुनकर फड़क जाएंगे। बाबू अमृतराय ने दरिया के किनारे वाली हरी भरी जमीन के लिए दरखास्त है। सुनता हूँ वहाँ एक अनाथालय बनवायेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदरी प्रसाद- ऐसा कदापि नहीं हो सकता कमला प्रसाद। तुम आज उसी जमीन के लिए हमारी तरफ से कमेटी में दरखास्त पेश कर दो। हम वहाँ ठाकुरद्वारा और धर्मशाला बनावायेंगे।

मिस्टर शर्मा- आज अमृतराय साहब के बंगले पर गये थे। वहाँ बहुत देर तक बातचीत होती रही। साहब ने मेरे सामने मुसकराकर कहा- अमृतराय, मैं देखूँगा कि जमीन तुमको मिले।

गुलजारी लाल ने सर हिलाकर कहा- अमृतराय बड़े चाल के आदमी हैं। मालूम होता है, साहब को पहले से ही उन्होंने अपने ढंग पर लगा लिया है।

मिस्टर शर्मा- जनाब, आपको मालूम नहीं अंग्रेजों से उनका कितना मेलजोल है। हमको अंग्रेज मेम्बरों से कोई आशा नहीं रखना चाहिए। वह सब के सब अमृतराय का पक्ष करेंगे।

बदरी प्रसाद- (जोर देकर) जहाँ तक मेरा बस चलेगा मैं यह जमीन अमृतराय को न लेने दूँगा। क्या डर है, अगर और ईसाई मेम्बर उनके तरफदार हैं। यह लोग पाँच से अधिक नहीं। बाकी बाईस मेंबर अपने हैं। क्या हमको उनकी वोट भी न मिलेगी? यह भी न होगा तो मैं उस जमीन को दाम देकर लेने पर तैयार हूँ।

झम्मन लाल- जनाब, मुझको पक्का विश्वास है कि हमको आधे से ज्यादा वोट अवश्य मिल जायँगे।

एक बहुत ही उत्तम रीति से सजा हुआ कमरा है। उसमें मिस्टर वालटर साहब बाबू अमृतराय के साथ बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं। वालटर साहब यहाँ के कमिश्नर हैं और साधारण अंग्रेजों के अतिरिक्त प्रजा के बड़े हितैषी और बड़े उत्साही प्रजापालक हैं। आपका स्वभाव ऐसा निर्मल है कि छोटा-बड़ा कोई हो, सबसे हँसकर क्षेम-कुशल पूछते और बात करते हैं। वह प्रजा की अवस्था को उन्नत दशा में ले जाने का उद्योग किया करते है और यह उनका नियम है कि किसी हिन्दुस्तानी से अंग्रेजी में नहीं बोलेंगे। अभी पिछली साल जब प्लेग का डंका चारों ओर घनघोर बज रहा था, वालटर साहब, गरीब किसानों के घर जाकर उनका हाल-चाल देखते थे और अपने पास से उनको

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंबल बाँटते फिरते थे। और अकाल के दिनों में तो वह सदा प्रजा की ओर से सरकार के दरबार में वादानुवाद करने के लिए तत्पर रहते हैं। साहब अमृतराय की सच्ची देशभक्ति की बड़ी बड़ाई किया करते हैं और बहुधा प्रजा की रक्षा करने में दोनों आदमी एक-दूसरे की सहायता किया करते हैं।

वालटर- (मुसकराकर) बाबू साहब। आप बड़ा चालाक हैं आप चाहता है कि मुंशी बदरी प्रसाद से थैली-भर, रुपया लें। मगर आपका बात वह नहीं मान सकता।

अमृतराय- मैंने तो आपसे कह दिया कि मैं अनाथालय अवश्य बनवाऊँगा और इस काम में बीस हजार से कम न लगेगा। अगर आप मेरी सहायता करेंगे तो आशा है कि यह काम भी सफल हो जाए और मै भी बना रहूँ। और अगर आप कतरा गये तो ईश्वर की कृपा से मेरे पास अभी इतनी जायदाद है कि अकेले दो अनाथालय बनवा सकता हूँ। मगर हाँ, तब मैं और कामों में कुछ भी उत्साह न दिखा सकूँगा।

वालटर- (हँसकर) बाबू साहब! आप तो जरा से बात में नाराज हो गया। हम तो बोलता है कि हम तुम्हारा मदद दो हजार से कर सकता है। मगर बदरी प्रसाद से हम कुछ नहीं कहने सकता। उसने अभी अकाल में सरकार को पाँच हजार दिया है।

अमृतराय- तो यह दो हजार में लेकर क्या करूँगा? मुझे तो आपसे पंद्रह हजार की पूरी आशा थी। मुंशी बदरी प्रसाद के लिए पाँच हजार क्या बड़ी बात है? तब से इसका दुगना तो वह एक मंदिर बनवाने में लगा चुके हैं। और केवल इस आशा पर कि उनको सी.आई.ई. की पदवी मिल जाएगी, वह इसका दस गुना आज दे सकते है।

वालटर- (अमृतराय से हाथ मिलाकर) वेल, अमृतराय। तुम बड़ा चालाक है। तुम बड़ा चालाक है तुम मुंशी बदरी प्रसाद को लूटना माँगता है।

यह कहकर साहब उठ खड़े हुए। अमृतराय भी उठे। बाहर फिटन खड़ी थी दोनों उस पर बैठ गये। साईस ने घोड़े को चाबुक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगाया और देखते-देखते मुंशी बदरी प्रसाद के मकान पर जा पहुँचे। ठीक उसी वक्त जब वहाँ अमृतराय से रार बढ़ाने की बातें सोची जा रही थीं।

प्यारे पाठकगण। हम यह वर्णन करके कि इन दोनों आदमियों के पहुँचते ही वहाँ कैसी खलबली पड़ गयी, मुंशी बदरी प्रसाद ने इनका कैसा आदर किया, गुलजारीलाल, दाननाथ और मिस्टर शर्मा कैसी आँखे चुराने लगे, या साहब ने कैसे काट-छांट की बाते की और मुंशी जी को सी.आई.ई. की पदवी की किन शब्दों में आशा दिलाई आपका समय नहीं गँवाना चाहते। खुलासा यह कि अमृतराय को यहाँ से सत्रह हजार रुपया मिला। मुंशी बदरी प्रसाद ने अकेले बारह हजार दिया जो उनकी उम्मीद से बहुत ज्यादा था। वह जब यहाँ से चले तो ऐसा मालूम होता था कि मानो कोई गढ़ी जीते चले आ रहे हैं। वह जमीन भी जिसके लिए उन्होंने कमेटी में दरखास्त की थी मिल गयी और आज ही इंजीनियर ने उसको नापकर अनाथालय का नक्शा बनाना आरंभ कर दिया।

साहब और अमृतराय के चले जाने पर यहाँ यों बाते होने लगी।

झम्मनलाल- यार, हमको तो इस लौंडे ने आज पाँच सौ के रूप में डाल दिया।

गुलजारी लाल- जनाब, आप पाँच सौ को रो रही है यहाँ तो एक हजार पर पानी फिर गया। मुंशी जी तो सी.आई.ई. की पदवी पावेंगे। यहाँ तो कोई रायबहादुरी को भी नहीं पूछता।

कमला प्रसाद- बड़े शोक की बात है कि आप लोग ऐसे शुभ कार्य में सहायता देकर पछताते हैं। अमृतराय को देखिए कि उन्होंने अपना एक गाँव बेचकर दस हजार रुपया भी दिया और उस पर दौड़-धूप अलग कर रहे है।

मुंशी बदरी प्रसाद- अमृतराय बड़ा उत्साही आदमी है। मैंने आज इसको जाना। बच्चा कमला प्रसाद। तुम आज शाम को उनके यहाँ जाकर हमारी ओर से धन्यवाद दे देना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झम्मन लाल- (मुँह फेरकर) आप क्यों न प्रसन्न होंगे, आपको तो पदवी मिलेगी न?

कमला प्रसाद- (हँसकर) अगर आपका वह कवित्त तैयार हो तो जरा सुनाइए।

दाननाथ जो अब तक चुपचाप बैठे हुए थे बोले- अब आप उनकी निंदा करने की जगह उनकी प्रंशसा कीजिए।

मिस्टर शर्मा- अच्छा, जो हुआ सो हुआ, अब सभा विसर्जन कीजिए, आज यह मालूम हो गया कि अमृतराय अकेले हम सब पर भारी है।

कमला प्रसाद- आपने नहीं सुना, सत्य की सदा जय होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 6

आज से कभी मंदिर न जाऊँगी

बेचारी पूर्णा, पंडाइन, चौबाइन, मिसराइन आदि के चले जाने के बाद रोने लगी। वह सोचती थी कि हाय! अब मैं ऐसी मनहूस समझी जाती हूँ कि किसी के साथ बैठ नहीं सकती। अब लोगों को मेरी सूरत काटने दौड़ती है। अभी नहीं मालूम क्या-क्या भोगना बदा है। या नारायण, तू ही मुझ दुखिया का बेड़ा पार लगा। मुझ पर न जाने क्या कुमति सवार थी कि सिर में एक तेल डलवा लियौ। यह निगोड़े बाल न होते तो काहे को आज इतनी ?जीहत होती। इन्हीं बातों की सुधि करते-करते जब पंडाइन की यह बात याद आ गयी कि बाबू अमृतराय का रोज-रोज आना ठीक नहीं तब उसने सिर पर हाथ मारकर कहा- वह जब आप ही आप आते हैं तो मैं कैसे मना कर दूँ। मैं तो उनका दिया खाती हूँ। उनके सिवाय अब मेरी सुधि लेने वाला कौन है। उनसे कैसे कह दूँ कि तुम मत आओ। और फिर उनके आने में हरज ही क्या है। बेचारे सीधे-सादे भले मनुष्य है। कुछ नंगे नहीं, शोहदे नहीं। फिर उनके आने में क्या हरज है। जब वह और बड़े आदमियों के घर जाते हैं। तब तो लोग उनको आँखों पर बिठाते हैं। मुझ भिखारिन के दरवाजे पर आवें तो मैं कौन मुँह लेकर उनको भगा दूँ। नहीं नहीं, मुझसे ऐसा कभी न होगा। अब तो मुझ पर विपत्ति आ ही पड़ी है। जिसके जी में जो आवै कहै।

इन विचारों से छुट्टी पाकर वह अपने नियमानुसार गंगा स्नान को चली। जब से पंडित जी का देहांत हुआ था तब से वह प्रतिदिन गंगा नहाने जाया करती थी। मगर मुँह अंधेरे जाती और सूर्य निकलते लौट आती। आज इन बिन बुलाये मेहमानों के आने से देर हो गई। थोड़ी दूर चली होगी कि रास्ते में सेठानी की बहू से भेंट हो गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसका नाम रामकली था। यह बेचारी दो साल से रँडापा भोग रही थी। आयु 16 अथवा 17 साल से अधिक न होगी। वह अति सुंदरी नख-शिख से दुरुस्त थी। गात ऐसा कोमल था कि देखने वाले देखते ही रह जाते थे। जवानी की उमर मुखड़े से झलक रही थी। अगर पूर्णा पके हुए आम के समान पीली हो रही थी, तो वह गुलाब के फूल की भांति खिली हुई थी। न बाल में तेल था, न आँखो में काजल, न माँग में सेंदूर, न दाँतो पर मिस्सी। मगर आँखो मे वह चंचलता थी, चाल मे वह लचक और होठों पर वह मनभावनी लाली थी कि जिससे बनावटी श्रृंगार की जरूरत न रही थी। वह मटकती इधर-उधर ताकती, मुसकराती चली जा रही थी कि पूर्णा को देखते ही ठिठक गयी और बड़े मनोहर भाव से हँसकर बोली- आओ बहिन, आओ। तुम तो जानों बताशे पर पैर धर रही हो।

पूर्णा को यह छेड़-छाड़ की बात बुरी मालूम हुई। मगर उसने बड़ी नर्मी से जवाब दिया- क्या करूँ बहिन। मुझसे तो और तेज नहीं चला जाता।

रामकली- सुनती हूँ कल हमारी डाइन कई चुड़ैलों के साथ तुमको जलाने गयी थी। जानो मुझे सताने से अभी तक जी नहीं भरा। तुमसे क्या कहूँ बहिन, यह सब ऐसा दु:ख देती हैं कि जी चाहता है माहुर खा लूँ। अगर यही हाल रहा तो एक दिन अवश्य यही होना है। नहीं मालूम ईश्वर का क्या बिगाड़ा था कि स्वप्न में भी जीवन का सुख न प्राप्त हुआ। भला तुम तो अपने पति के साथ दो वर्ष तक रहीं भी। मैंने तो उसका मुँह भी नहीं देखा। जब तमाम औरतों को बनाव-सिंगार किये हँसी-खुशी चलते-फिरते देखती हूँ तो छाती पर साँप लोटने लगता है। विधवा क्या हो गई घर भर की लौंडी बना दी गयी। जो काम कोई न करे वह मै करूँ। उस पर रोज उठते जूते, बैठते लात। काजर मत लगाओ। किस्सी मत लगाओ। बाल मत गुँथाओ। रंगीन साड़ियाँ मत पहनों। पान मत खाओ। एक दिन एक गुलाबी साड़ी पहन ली तो चुडैल मारने उठी थी। जी में तो आया कि मर के बाल नोच लूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मगर विष का घूँट पी के रह गयी और वह तो वह, उसकी बेटियाँ और दूसरी बहुएँ मुझसे कन्नी काटती फिरती है। भोर के समय कोई मेरा मुँह नहीं देखता। अभी पड़ोस मे एक ब्याह पड़ा था। सब की सब गहने से लद-लद गाती बजाती गयी। एक मैं ही अभागिनी घर में पड़ी रोती रही। भला बहिन, अब कहाँ तक कोई छाती पर पत्थर रख ले। आखिर हम भी तो आदमी है। हमारी भी तो जवानी है। दूसरों का राग-रंग, हँसी, चुहल देख अपने मन में भी भावना होती है। जब भूख लगे और खाना न मिले तो हारकर चोरी करनी पड़ती है।

यह कहकर रामकली ने पूर्णा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुस्कराकर धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगी। बेचारी पूर्णा दिल में कुढ़ रही थी कि इसके साथ क्यों लगी। रास्ते में हजारों आदमी मिले। कोई इनकी ओर आँखे फाड़-फाड़ घूरता था, कोई इन पर बोलियाँ बोलता था। मगर पूर्णा सर को ऊपर न उठाती थी। हाँ, रामकली मुसकरा-मुसकराकर बड़ी चपलता से इधर-उधर ताकती, आँखे मिलाती और छेड़-छाड़ का जवाब देती जाती थी। पूर्णा जब रास्ते में मर्दों को खड़े देखती तो कतरा के निकल जाती मगर रामकली बरबस उनके बीच में से घुसकर निकलती थी। इसी तरह चलते-चलते दोनों नदी के तट पर पहुँची। आठ बज गया था। हजारों मर्द स्त्रियाँ, बच्चे नहा रहे थे। कोई पूजा कर रहा था। कोई सूर्य देवता को पानी दे रहा था। माली छोटी-छोटी डालियों में गुलाब, बेला, चमेली के फूल लिये नहाने वालों को दे रहे थे। चारों और जै गंगा, जै गंगा का शब्द हो रहा था। नदी बाढ़ पर थी। उस मटमैले पानी में तैरते हुए फूल अति सुंदर मालूम होते थे। रामकली को देखते ही एक पंडे ने कही- 'इधर सेठानी जी, इधर।' पंडा जी महाराज पीताम्बर पहने, तिलक मुद्रा लगाये, आसन मारे, चंदन रगड़ने में जुटे थे। रामकली ने उसके स्थान पर जाकर धोती और कमंडल रख दिया।

पंडा- (घूरकर) यह तुम्हारे साथ कौन है?

राम॰- (आँखे मटकाकर) कोई होंगी तुमसे मतलब। तुम कौन होते हो पूछने वाले?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडा- जरा नाम सुन के कान खुश कर लें।

राम०- यह मेरी सखी हैं। इनका नाम पूर्णा है।

पंडा- (हँसकर) ओहो हो। कैसा अच्छा नाम है। है भी तो पूर्ण चंद्रमा के समान। धन्य भाग्य है कि ऐसे जजमान का दर्शन हुआ।

इतने में एक दूसरा पंडा लाल-लाल आँखे निकाले, कंधे पर लठ रखे, नशे में चूर, झूमता-झामता आ पहुँचा और इन दोनों ललनाओं की ओर घूरकर बोला, 'अरे रामभरोसे, आज तेरे चंदन का रंग बहुत चोखा है।'

रामभरोसे- तेरी आँखे काहे को फूटे हैं। प्रेम की बूटी डाली है जब जा के ऐसा चोखा रंग भया।

पंडा- तेरे भाग्य को धन्य हैं यह रक्त चंदन (रामकली की तरफ देखकर) तो तूने पहले ही रगड़ा रखा था। परंतु इस मलयागिर (पूर्णा की तरफ इशारा करके) के सामने तो उसकी शोभा ही जाती रही।

पूर्णा तो यह नोक-झोंक समझ-समझ कर झेंपी जाती थी। मगर रामकली कब चूकने वाली थे। हाथ मटकाकर बोली- ऐसे करमठंढियों को थोड़े ही मलयागिर मिला करता है।

रामभरोसे- (पंडा से) अरे बौरे, तू इन बातों का मर्म क्या जाने। दोनो ही अपने-अपने गुण मे चोखे हैं। एक में सुगंध है तो दूसरे में रंग है।

पूर्णा मन में बहुत लज्जित थी कि इसके साथ कहाँ फँस गयी। अब तक वो नहा-धोके घर पहुँची होती। रामकली से बोली- बहिन, नहाना हो तो नहाओ, मुझको देर होती है। अगर तुमको देर हो तो मैं अकेले जाऊँ।

रामभरोसे- नहीं, जजमान। अभी तो बहुत सबेरा है। आनंदपूर्वक स्नान करो।

पूर्णा ने चादर उतारकर धर दी और साड़ी लेकर नहाने के लिए उतरना चाहती थी कि यकायक बाबू अमृतराय एक सादा कुर्ता पहने, खादी टोपी सर पर रखे, हाथ में नापने का फीता लिये चंद ठेकेदारों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के साथ आते दिखायी दिये। उनको देखते ही पूर्णा ने एक लंबी घूंघट निकाल ली और चाहा कि सीढ़ियों पर लंबाई-चौड़ाई नापना था क्योंकि वह एक जनाना घाट बनवा रहे थे। वह पूर्णा के निकट ही खड़े हो गये। और कागज पेंसिल पर कुछ लिखने लगे। लिखते-लिखते जब उन्होंने कदम बढ़ाया तो पैर सीढ़ी के नीचे जा पड़ा। करीब था कि वह औंधे मुँह गिरे और चोट-चपेट आ जाय कि पूर्णा ने झपटकर उनको संभाला लिया। बाबू साहब ने चौंककर देखा तो दाहिना हाथ एक सुंदरी के कोमल हाथों में है। जब तक पूर्णा अपना घूँघट बढ़ावे वह उसको पहचान गये और बोले- प्यारी, आज तुमने मेरी जान बचा ली।

पूर्णा ने इसका कुछ जवाब न दिया। इस समय न जाने क्यों उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था और आँखों में आँसू भरा आता था। 'हाय! नारायण, जो कहीं वह आज गिर पड़ते तो क्या होता...' यही उसका मन बेर-बेर कहता। 'मैं भले संयोग से आ गयी थी।' वह सिर नीचा किये गंगा की लहरों पर टकटकी लगाये यही बातें गुनती रही। जब तक बाबू साहब खड़े रहे, उसने उनकी ओर एक बेर भी न ताका। जब वह चले गए तो रामकली मुसकराती हुई आयी और बोली- बहिन, आज तुमने बाबू साहब को गिरते-गिरते बचा लिया आज से तो वह और भी तुम्हारे पैरों पर सिर रखेंगे।

पूर्णा- (कड़ी निगाहों से देखकर) रामकली ऐसी बातें न करो। आदमी आदमी के काम आता है। अगर मैंने उनको संभाल लिया तो इसमें क्या बात अनोखी हो गयी।

रामकली- ए लो। तुम तो जरा सी बात पर तिनक गयीं।

पूर्णा- अपनी-अपनी रुचि है। मुझको ऐसी बातें नहीं भाती।

रामकली- अच्छा अपराध क्षमा करो। अब सरकार से दिल्लगी न करूँगी। चलो तुलसीदल ले लो।

पूर्णा- नहीं, अब मै यहाँ न ठहरूँगी। सूरज माथें पसर आ गया।

रामकली- जब तक इधर-उधर जी बहले अच्छा है। घर पर तो जलते अंगारों के सिवाय और कुछ नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब दोनों नहाकर निकली तो फिर पंडो ने छेड़ना चाहा, मगर पूर्णा एकदम भी न रुकी। आखिर रामकली ने भी उसका साथ छोड़ना उचित न समझा। दोनों थोड़ी दूर चली होंगी कि रामकली ने कहा- क्यों बहिन, पूजा करने न चलोगी?

पूर्णा- नहीं सखी, मुझे बहुत देर हो जायगी।

राम॰-आज तुमको चलना पड़ेगा। तनिक देखो तो कैसे विहार की जगह है। अगर दो-चार दिन भी जाओ तो फिर बिना नित्य गये जी न माने।

पूर्णा- तुम जाव, मैं न जाऊँगी। जी नहीं चाहता।

राम॰- चलो चलो, बहुत इतराओ मत। दम की दम में तो लौटे आते हैं।

रास्ते में एक तंबोली की दुकान पड़ी। काठ के पटरों पर सफेद भीगे हुए कपड़े बिछे थे। उस पर भांति-भांति के पान मसालों की खूबसूरत डिबियाँ, सुगंध की शीशियाँ, दो-तीन हरे-हरे गुलदस्ते सजाकर धरे हुए थे। सामने ही दो बड़े-बड़े चौखटेदार आईने लगे हुए थे। पनवाड़ी एक सजीया जवान था। सर पर दोपल्ली टोपी चुनकर टेड़ी दे रखी थी। बदन में तंजेब का फँसा हुआ कुर्ता था। गले में सोने की तावीजें। आँखो में सुर्मा, माथे पर रोरी, ओठों पर पान की गहरी लाली। इन दोनों स्त्रियों को देखते ही बोला- सेठानी जी, पान खाती जाव।

रामकली ने चठ सर से चादर खसका दी और फिर उसको एक अनुपम भाव से ओढ़कर हँसते हुए नयनों से बोली- 'अभी प्रसाद नहीं पाया।'

पनवाड़ी- आवो। आवो। यह भी तो प्रसाद ही है। संतों के हाथ की चीज प्रसाद से बढ़कर होती है। यह आज तुम्हारे साथ कौन शक्ति है?

राम॰- यह हमारी सखी है।

तम्बोली- बहुत अच्छा जोड़ा है। धन्य् भाग्य जो दर्शन हुआ।

रामकली दुकान पर ठमक गयी और शीशे में देख-देख अपने बाल सँवारने लगी। इधर पनवाड़ी ने चाँदी के वरक लपेटे हुए बीड़े फुर्ती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से बनाये और रामकली की तरफ हाथ बढ़ाया। जब वह लेने को झुकी तो उसने अपना हाथ खींच लिया और हँसकर बोला- तुम्हारी सखी लें तो दें।

राम॰- मुँह बनवा आओ, मुँह। (पान लेकर) लो, सखी, पान खाव।

पूर्णा- मैं न खाऊँगी।

राम॰- तुम्हारी क्या कोई सास बैठी है जो कोसेगी। मेरी तो सास मना करती है। मगर मैं उस पर भी प्रतिदिन खाती हूँ।

पूर्णा- तुम्हारी आदत होगी मैं पान नहीं खाती।

राम॰- आज मेरी खातिर से खाव। तुम्हें कसम है।

रामकली ने बहुत हठ की मगर पूर्णा ने गिलौरियाँ न लीं। पान खाना उसने सदा के लिए त्याग दिया था। इस समय तक धूप बहुत तेज हो गयी थी। रामकली से बोली- किधर है तुम्हारा मंदिर? वहाँ चलते-चलते तो सांझ हो जायगी।

राम॰- अगर ऐसे दिन कटा जाता तो फिर रोना काहे का था।

पूर्णा चुप हो गयी। उसको फिर बाबू अमृतराय के पैर फिसलने का ध्यान आ गया और फिर मन में यह प्रश्न किया कि कहीं आज वह गिर पड़ते तो क्या होता। इसी सोच में थी कि निदान रामकली ने कहा- लो सखी, आ गया मंदिर।

पूर्णा ने चौंककर दाहिनी ओर जो देखा तो एक बहुत ऊँचा मंदिर दिखायी दिया। दरवाजे पर दो बड़े-बड़े पत्थर के शेर बने हुए थे। और सैंकड़ो आदमी भीतर जाने के लिए धक्कम-धक्का कर रहे थे। रामकली पूर्णा को इस मंदिर में ले गयी। अंदर जाकर क्या देखती है कि पक्का चौड़ा आँगन है जिसके सामने से एक अंधेरी और सँकरी गली देवी जी के धाम को गयी है। दाहिनी ओर एक बारादरी है जो अति उत्तम रीति पर सजी हुई है। यहाँ एक युवा पुरुष पीला रेशमी कोट पहने, सर पर खूबसूरत गुलाबी रंग की पगड़ी बाँधे, तकिया-मसनद लगाये बैठा है। पेचवान लगा हुआ है। उगालदान, पानदान और नाना प्रकार की सुंदर वस्तुओं से सारा कमरा भूषित हो रहा है। उस युवा पुरुष के सामने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक सुधर कामिनी सिंगार किये विराज रही है। उसके इधर-उधर सपरदाये बैठे हुए स्वर मिला रहे हैं। सैंकड़ो आदमी बैठे और सैंकड़ो खड़े हैं। पूर्णा ने यह रंग देखा तो चौंककर बोली- सखी, यह तो नाचघर-सा मालूम होता है। तुम कहीं भूल तो नहीं गयीं?

राम०- (मुस्कराकर) चुप। ऐसा भी कोई कहता है। यही तो देवी जी का मंदिर है। वह बरादरी में महंत जी बैठे है। देखती हो कैसा रंगीला जवान है। आज शुक्रवार है, हर शुक्र को यहाँ रामजनी का नाच होता है।

इस बीच मे एक ऊँचा आदमी आता दिखायी दिया। कोई छः फुट का कद था। गोरा-चिट्ठा, बालों में कंघी करी हुई, मुँह पान से भरे, माथे पर विभूति रमाये, गले में बड़े-बड़े दानों की रुद्राक्ष की माला पहने कंधे पर एक रेशमीं दुपट्टा रखे, बड़ी-बड़ी और लाल आँखों से इधर-उधर ताकता इन दोनों स्त्रियों के समीप आकर खड़ा हो गया। रामकली ने उसकी तरफ कटाक्ष से देखकर कहा- क्यों बाबा इन्द्रवत कुछ परशाद वरशाद नहीं बनाया?

इन्द्र- तुम्हारी खातिर सब हाजिर है। पहले चलकर नाच तो देखो। यह कंचनी काश्मीर से बुलायी गयी है। महंत जी बेढब रीझे हैं, एक हजार रुपया इनाम दे चुके हैं।

रामकली ने यह सुनते ही पूर्णा का हाथ पकड़ा और बरादरी की ओर चली। बेचारी पूर्णा जाना न चाहती थी। मगर वहाँ सबके सामने इंकार करते भी बन न पड़ता था। जाकर एक किनारे खड़ी हो गयी। सैंकड़ों औरतें जमा थीं। एक से एक सुन्दर गहने से लदी हुई। सैंकड़ों मर्द थे, एक से एक गबरू, उत्तम कपड़े पहने हुए। सब के सब एक ही में मिले जुले खड़े थे। आपस में बीलियाँ बोली जाती थीं, आँखे मिलायी जाती थीं, औरतें मर्दों में। यह मेलजोल पूर्णा को न भाया। उसका हियाव न हुआ कि भीड़ में घुसे। वह एक कोने में बाहर ही दबक गयी। मगर रामकली अन्दर घुसी और वहाँ कोई आधे घण्टे तक उसने खूब गुलछर्रे उड़ाये। जब वह निकली तो पसीने में डूबी हुई थी। तमाम कपड़े मसल गये थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा ने उसे देखते ही कहा- क्यों बहिन, पूजा कर चुकीं? अब भी घर चलोगी या नहीं?

राम॰- (मुस्कराकर) अरे, तुम बाहर खड़ी रह गयीं क्या?

जरा अन्दर चलके देखो क्या बहार है? ईश्वर जाने कंचनी गाती क्या है दिल मसोस लेती है।

पूर्णा- दर्शन भी किया या इतनी देर केवल गाना ही सुनती रहीं?

राम॰- दर्शन करने आती है मेरी बला। यहाँ तो दिल बहलाने से काम है। दस आदमी देखें दस आदमियों से हँसी दिल्लगी की, चलों मन आन हो गया। आज इन्द्रदत्त ने ऐसा उत्तम प्रसाद बनाया है कि तुमसे क्या बखान करूँ।

पूर्णा- क्या है ,चरणामृत?

राम॰- (हँसकर) हाँ, चरणामृत में बूटी मिला दी गयी है।

पूर्णा- बूटी कैसी?

राम॰- इतना भी नहीं जानती हो, बूटी भंग को कहते हैं।

पूर्णा- ऐंहै तुमने भंग पी ली।

राम॰- यही तो प्रसाद है देवी जी का। इसके पीने में क्या हर्ज है। सभी पीते हैं। कहो तो तुमको भी पिलाऊँ।

पूर्णा- नहीं बहिन, मुझे क्षमा करो।

इधर यही बातें हो रही थी कि दस-पंद्रह आदमी बारादरी से आकर इनके आस-पास खड़े हो गये।

एक- (पूर्णा की तरफ घूरकर) अरे यारों, यह तो कोई नया स्वरूप है।

दूसरा- जरा बच के चलो, बचकर।

इतने में किसी ने पूर्णा के कंधे से धीरे से एक ठोका दिया। अब वह बेचारी बड़े फेर में पड़ी। जिधर देखती है आदमी ही आदमी दिखायी देते हैं। कोई इधर से हँसता है कोई उधर से आवाजें कसता है। रामकली हँस रही है। कभी चादर को खिसकाती है। कभी दुपट्टे को संभालती है। एक आदमी ने उससे पूछा- सेठानी जी, यह कौन है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामकली- यह मेरी सखी है, जरा दर्शन कराने को लायी थी।

दूसरा- इन्हें अवश्य लाया करो। ओ हो! कैसा खुलता हुआ रंग है।

बारे किसी तरह इन आदमियों से छुटकारा हुआ। पूर्णा घर की ओर भागी और कान पकड़े कि आज से कभी मंदिर न जाऊँगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 7
कुछ और बातचीत

पूर्णा ने कान पकड़े कि अब मंदिर कभी न जाऊँगी। ऐसे मंदिरों पर दई का कोप भी नहीं पड़ता। उस दिन से वह सारे दिन घर पर ही बैठी रहती। समय काटना पहाड़ हो जाता। न किसी के यहाँ आना न जाना। न किसी से भेंट न मुलाकात। न कोई काम न धंधा। दिन कैसे कटे। पढ़ी-लिखी तो अवश्य थी, मगर पढ़े क्या। दो-चार किस्से-कहानी की पुरानी किताबें पंडित जी की संदूक में पड़ी हुई थी, मगर उनकी तरफ देखने को अब जी नहीं चाहता था। कोई ऐसा न था जो बाजार से लाती मगर वह किताबों का मोल क्या जाने। दो-एक बार जी में आया कि कोई पुस्तक प्रेमा के घर से मँगवाये। मगर फिर कुछ समझकर चुप हो गयी। बेल-बूटे बनाना उसको आते ही न थें कि उससे जी बहलाये, हाँ सीना आता था। मगर सीये किसके कपड़े। नित्य इस तरह बेकाम बैठे रहने से वह हरदम कुछ उदास-सी रहा करती। हाँ, कभी-कभी पंडाइन और चौबाइन अपने चेले-चापड़ों के साथ आकर कुछ सिखावन की बातें सुना जाती थीं। मगर जब कभी वह कहतीं कि बाबू अमृतराय का आना ठीक नहीं तो पूर्णा साफ-साफ कह देती कि मैं उनको आने से नहीं रोक सकती और न कोई ऐसा बर्ताव कर सकती हूँ जिससे वह समझें कि मेरा आना इसको बुरा लगता है। सच तो यह है कि पूर्णा के हृदय में अब अमृतराय के लिए प्रेम का अंकुर जमने लगा था। यद्यपि वह अभी तक यही समझती थी कि अमृतराय यहाँ दया की राह से आया करते हैं। मगर नहीं मालूम क्यों वह उनके आने का एक-एक दिन गिना करती और जब इतवार आता तो सबेरे ही से उनके शुभगमन की तैयारियाँ होने लगती। बिल्लो बड़े प्रेम से सारा मकान साफ करती। कुर्सियाँ और तस्वीरों पर से सात दिन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जमी हुई धूल-मिट्टी दूर करती। पूर्णा खुद भी अच्छे और साफ कपड़े पहनती। अब उसके दिल मे आप ही आप बनाव-सिंगार करने की इच्छा होती थी। मगर दिल को रोकती। जब बाबू अमृतराय आ जाते तो उसका मलिन मुख कुंदन की तरह दमकने लगता। उसकी प्यारी सूरत और भी अधिक प्यारी मालूम होने लगती। जब तक बाबू साहब रहते उसे अपना घर भरा मालूम होता। वह इसी कोशिश मे रहती कि ऐसी क्या बात करूँ जिसमें वह प्रसन्न होकर घर को जावें। बाबू साहब ऐसे हँसमुख थे कि रोते को भी एक बार हँसा देते। यहाँ वह खूब बुलबुल की तरह चहकते। कोई ऐसी बात न कहते जिससे पूर्णा दुखित हो। जब उनके चलने का समय आता तो वह कुछ उदास हो जाती। बाबू साहब इसे ताड़ जाते और पूर्णा की खातिर से कुछ देर और बैठते। इसी तरह कभी-कभी घंटों बीत जाते। जब दिया में बत्ती पड़ने की बेला आती तो बाबू साहब चले जाते। पूर्णा कुछ देर तक इधर-उधर बौखलाई हुई घूमती। जो जो बातें हुई होती, उनको मन में दोहराती। यह समय उस आनंददायक स्वप्न-सा जान पड़ता था जो आँख के खुलते ही बिलाय जाता है।

इसी तरह कई मास और बीत गये और आखिर जो बात अमृतराय के मन में थी वह पूरी हो गयी। अर्थात पूर्णा को अब मालूम होने लगा कि मेरे दिल में उनकी मुहब्बत समाती जाती है और उनका दिल भी मेरी मुहब्बत से खाली नहीं। अब पूर्णा पहले से ज्यादा उदास रहने लगी। हाय! ओ बौरे मन। क्या एक बार प्रीति लगाने से तेरा जी नहीं भरा जो तू फिर यह रोग पाल रहा है। तुझे कुछ मालूम है कि इस रोग की औषधि क्या है? जब तू यह जानता है तो फिर क्यों, किस आशा पर यह स्नेह बढ़ा रहा है और बाबू साहब! तुमको क्या कहना मंजूर है? तुम क्या करने पर आये हो? तुम्हारे जी में क्या है? क्या तुम नहीं जानते कि यह अग्नि धधकेगी तो फिर बुझाये न बुझेगी? मुझसे ऐसा कौन-सा गुण है? कहाँ की बड़ी सुंदरी हूँ जो तुम प्रेमा, प्यारी प्रेमा, को त्यागे देते हो? वह बेर-बेर मुझको कुलाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हीं बताओ, कौन मुँह लेकर उसके पास जाऊँ और तुम तो आग लगाकर दूर से तमाशा देखोगे। इसे बुझायेगा कौन? बेचारी पूर्णा इन्हीं विचारों में डूबी रहती। बहुत चाहती कि अमृतराय का खयाल न आने पावे, मगर कुछ बस न चलता।

अपने दिल का परिचय उसको एक दिन यों मिला कि बाबू अमृतराय नियत समय पर नहीं आये। थोड़ी देर तक तो वह उनकी राह देखती रही मगर जब वह अब भी न आये तब तो उसका दिल कुछ मसोसने लगा। बड़ी व्याकुलता से दौड़ी हुई दीवाजे पर आयी और आधे घंटे तक कान लगाये खड़ी रही, फिर भीतर आयी और मन मारकर बैठ गयी। चित्त की कुछ वही अवस्था होने लगी जो पंडित जी के दौरे पर जाने के वक्त हुआ करती। शंका हुई कि कहीं बीमार तो नहीं हो गये। महरी से कहा- बिल्लो, जरा देखो तो बाबू साहब का जी कैसा है? नहीं मालूम क्यों मेरा दिल बैठा जाता है। बिल्लो लपकी हुई बाबू साहब के बंगले पर पहुँची तो ज्ञात हुआ कि वह आज दो तीन नौकरों को साथ लेकर बाजार गये हुए हैं। अभी तक नहीं आये। पुराना बूढ़ा कहार आधी टाँगों तक धोती बांधे सर हिलाता हुआ आया और कहने लगा- 'बेटा बड़ा खराब जमाना आवा है। हजार का सउदा होय तो, दुई हजार का सउदा होय तो हमही लै आवत रहेन। आज खुद आप गये हैं। भला इतने बड़े आदमी का उस चाहत रहा। बाकी फिर सब अंग्रेजी जमाना आया है। अंग्रेजी पढ़-पढ़ के जउन न हो जाय तउन अचरज नहीं।' बिल्लो बूढे कहर के सर हिलाने पर हँसती हुई घर को लौटी। इधर जब से वह आयी थी पूर्णा की विचित्र दशा हो रही थी। विकल हो होकर कभी भीतर जाती, कभी बाहर आती। किसी तरह चैन ही न आता। जान पड़ता कि बिल्लो के आने में देर हो रही है कि इतने में जूते ही आवाज सुनायी दी। वह दौड़कर द्वार पर आयी और बाबू साहब को टहलते हुए पाया तो मानो उसको कोई धन मिल गया। झटपट भीतर से किवाड़ खोल दिया। कुर्सी रख दी और चौखट पर सर नीचा करके खड़ी हो गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमृतराय- बिल्लो कहीं गयी है क्या?

पूर्णा- (लजाते हुए) हाँ, आप ही के यहाँ तो गयी है।

अमृत॰- मेरे यहाँ कब गयी? क्यों कुछ जरूरत थी?

पूर्णा- आपके आने में विलंब हुआ तो मैंने शायद जी न अच्छा हो। उसको देखने के लिए भेजा।

अमृत॰- (प्यार से देखकर) बीमारी चाहे कैसी ही हो, वह मुझे यहाँ आने से नहीं रोक सकती। जरा बाजार चला गया था। वहाँ देर हो गयी।

यह कहकर उन्होंने एक दफे जोर से पुकारा, 'सुखई, अंदर आओ' और दो आदमी कमरे में दाखिल हुए। एक के हाथ मे एक संदूक था और दूसरे के हाथ में तह किये हुए कपड़े। सब सामान चौकी पर रख दिया गया। बाबू साहब बोले- पूर्णा, मुझे पूरी आशा है कि तुम दो चार मामूली चीजें लेकर मुझे कृतार्थ करोगी। (हँसकर) यह देर में आने का जुर्माना है।

पूर्णा अचम्भे में आ गई। यह क्या? यह तो फिर वही स्नेह बढ़ाने वाली बातें है और इनको खरीदने के लिए आप ही बाजार गये थे। अमृतराय, तुम्हारे दिल में जो है वह मैं जानती हूँ। मेरे दिल में जो है वह तुम भी जानते हो। मगर इसका नतीजा? इसमें संदेह नहीं कि इन चीजों की पूर्णा को बहुत जरूरत थी। पंडित जी की मोल ली हुई साड़ियाँ अब तक लंगे तंगे चली थी। मगर अब पहनने को कोई कपड़े न थे। उसने सोचा था कि अब की जब बाबू साहब के यहाँ से मासिक तनख्वाह मिलेगी तो मामूली साड़ियाँ मंगा लूँगी। उसे यह क्या मालूम था कि बीच में बनारसी और रेशमी साड़ियों का ढेर लग जाएगा। पहिले तो वह स्त्रियों की स्वाभाविक अत्यभिलाषा से इन चीजों को देखने लगी मगर फिर यह चेतकर कि मेरा इस तरह चीजों पर गिरना उचित नहीं है वह अलग हट गयी और बोली- बाबू साहब। इस अनुग्रह के लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, मगर यह भारी-भारी जोड़े मेरे किस काम के। मेरे लिए मोटी-झोरी साड़ियाँ चाहिए। मैं इन्हें पहनूंगी तो कोई क्या कहेगा।

अमृतराय- तुमने ले लिया। मेरी मेहनत ठिकाने लगी, और मैं कुछ नहीं जानता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने में बिल्लो पहुँची और कमरे में बाबू साहब को देखते ही निहाल हो गयी। जब चौकी पर दृष्टि पड़ी और इन चीजों को देखा तो बोली- क्या इनके लिए आप बाजार गये थे। बूढा कहार रो रहा था कि मेरी दस्तूरी मारी गयी।

अमृतराय- (दबी जबान से) वह सब कहार मेरे नौकर हैं। मेरे लिए बाजार से चीजें लाते हैं। तुम्हारे सरकार का मैं चाकर हूँ।

बिल्लो यह सुनकर मुसकराती हुई भीतर चली गई। पूर्णा के कान में भी भनक पड़ गयी थी। बोली- उलटी बात न कहिए। मैं तो खुद आपकी चेरियों की चेरी हूँ। इसके बाद इधर-उधर की कुछ बातें हुई। माघ-पूस के दिन थे, सरदी खूब पड़ रही थी। बाबू साहब देर तक न बैठ सके और आठ बजते-बजते वह अपने घर को सिधारे। उनके चले जाने के बाद पूर्णा ने जो संदूक खोला तो दंग रह गयी। स्त्रियों के सिंगार की सब सामग्रियाँ मौजूद थीं और जो चीज थी सुंदर और उत्तम थी। आइना, कंघी, सुगंधित तेलों की शीशियाँ, भांति-भांति के इत्र, हाथों के कंगन, गले का चंद्रहार, जड़ाऊ, एक रूपहला पानदान, लिखने-पढने के सामान से भरी एक संदूकची, किस्से-कहानी की किताबें, इनके अतिरिक्त और भी बहुत-सी चीजें बड़ी उत्तम रीति से सजाकर धरी हुई थी। कपड़ों का बेठन खोला तो अच्छी से अच्छी साड़ियाँ दिखायी दीं। शर्बती, धानी, गुलाबी, उन पर रेशम के बेल बूट बने हुए। चादरें भारी सुनहरे काम की। बिल्लो इन चीजो को देख-देख फूली न समाती थी। बोली- बहू, यह सब चीजें तुम पहनोगी तो रानी हो जाओगी- रानी।

पूर्णा- (गिरी हुई आवाज में) कुछ भंग खा गयी हो क्या बिल्लो। मैं यह चीजें पहनूँगी तो जीती बचूँगी। चौबाइन और सेठानी ताने दे देकर जान ले लेगी।

बिल्लो- ताने क्या देंगी, कोई दिल्लगी है। इसमें उनके बाप का क्या इजारा। कोई उनसे मांगने जाता है।

पूर्णा ने महरी को आश्चर्य की आँखो से दंखा। यही बिल्लो है जो अभी दो घंटे पहले चौबाइन और पंडाइन से सम्मति करती थी और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे बेर-बेर पहनने-ओढ़ने से बर्जा करती थी। यकायक यह क्या काया-पलट हो गयी। बोली- कुछ संसार के कहने की भी तो लाज है।

बिल्लो- मैं यह थोड़े ही कहती हूँ कि हरदम यह चीजें पहना करो। जब बाबू साहब आवें थोड़ी देर के लिए पहन लिया।

पूर्णा (लजाकर)- यह सिंगार करके मुझसे उनके सामने क्योंकर निकला जायगा। तुम्हें याद है एक बेर प्रेमा ने मेरे बाल गूँध दिये थे। तुमसे क्या कहूँ। उस दिन वह मेरी तरफ ऐसा ताकते थे जैसे कोई किसी पर जादू करे। नहीं मालूम क्या बात है कि उसी दिन से वह जब कभी मेरी ओर देखते हैं तो मेरी छाती-धड़-धड़ करने लगती है। मुझसे जान-बूझकर फिर ऐसी भूल न होगी।

बिल्लो- बहू, उनकी मरजी ऐसी ही है तो क्या करोगी, इन्हीं चीजों के लिए कल वह बाजार गये थे। सैंकड़ो नौकर-चाकर हैं मगर इन्हें आप जाकर जाये। तुम इनको न पहनोगी तो वह अपने दिल में क्या कहेंगे।

पूर्णा- (आँखो में आँसू भरकर) बिल्लो, बाबू अमृतराय नहीं मालूम क्या करने वाले हैं? मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ? वह मुझसे दिन-दिन अधिक प्रेम बढ़ाते जाते हैं और मैं अपने दिल को क्या कहूँ, तुमसे कहते लज्जा आती है। वह अब मेरे कहने में नहीं रहा। मोहल्ले वाले अलग बदनाम कर रहे हैं। न जाने ईश्वर को क्या करना मंजूर है।

बिल्लो ने इसका कुछ जवाब न दिया। पूर्णा ने भी उस दिन खाना न बनाया। साँझ ही से जाकर चारपाई पर लेट रही। दूसरे दिन सुबह को उठकर उसने वह किताबें पढ़ना शुरू की, जो बाबू साहब लाये थे। ज्यों-ज्यों वह पढ़ती उसको ऐसा मालूम होता कि कोई मेरी ही दुःख की कहानी कह रहा है। इनके पढ़ने में जो जी लगा तो इतवार का दिन आया। दिन निकलते ही बिल्लो ने हँसकर कहा- आज बाबू साहब के आने का दिन है।

पूर्णा- (अनजान बनकर) फिर?

बिल्लो- आज तुमको जरूर गहने पहनने पड़ेंगे।

पूर्णा- (दबी आवाज से) आज तो मेरे सर में पीड़ा हो रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्लो- नौज, तुम्हारे बैरी का सर दर्द करे। इस बहाने से पीछा न छूटेगा।

पूर्णा- और जो किसी ने मुझे ताना दिया तो तू जानना।

बिल्लो- ताना कौन राँड देगी।

सबेरे ही से बिल्लो ने पूर्णा का बनाव-सिंगार करना शुरू किया। महीनों से सर न मला गया था। आज सुगंधित मसाले से मला गया, तेल डाला गया, कंघी की गयी, बाल गूँथे गये और जब तीसरे पहर को पूर्णा ने गुलाबी कुर्ती पहनकर उस रेशमी काम की शर्बती सारी पहनी, गले मे हार और हाथों में कंगन सजाये तो सुंदरता की मूर्ति मालूम होने लगी। आज तक कभी उसने ऐसे रत्न जड़ित गहने और बहुमूल्य कपड़े न पहने थे और न कभी ऐसी सुघर मालूम हुई थी। वह अपने मुखारविंद को आप देख-देख कुछ प्रसन्न भी होती थी, कुछ लजाती भी थी और कुछ शोक भी करती थी। जब साँझ हुई तो पूर्णा कुछ उदास हो गयी। जिस पर भी उसकी आँखे दरवाजे पर लगी हुई थीं और वह चौंककर ताकती थी कि कहीं अमृतराय तो नहीं आ गये। पाँच बजते-बजते और दिनों से सबेरे बाबू अमृतराय आये। कमरे में बैठे, बिल्लो से कुशलानंद पूछा और ललचायी हुई आँखो से अंदर के दरवाजे की तरफ ताकने लगे। मगर वहाँ पूर्णा न थीं, कोई दस मिनट तक तो उन्होंने चुपचाप उसकी राह देखी, मगर जब अब भी न दिखायी दी तो बिल्लो से पूछा- क्यों महरी, आज तुम्हारी सरकार कहाँ है?

बिल्लो- (मुस्कराकर) घर ही में तो है।

अमृत॰- तो आयी क्यों नहीं। क्या आज कुछ नाराज है क्या?

बिल्लो- (हँसकर) उनका मन जाने।

अमृत॰- जरा जाकर लिवा आओ। अगर नाराज हों तो चलकर मनाऊँ।

यह सुनकर बिल्लो हँसती हुई अंदर गई और पूर्णा से बोली- बहू, उठोगी या वह आप ही मनाने आते है।

पूर्णा- बिल्लो, तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, जाकर कह दो, बीमार है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्लो- बीमारी का बहाना करोगी तो वह डाक्टर को लेने चले जायेंगे।

पूर्णा- अच्छा, कह दो, सो रही है।

बिल्लो- तो क्या वह जगाने न आएंगे?

पूर्णा- अच्छा बिल्लो, तुम ही केई बहाना कर दो जिससे मुझे जाना न पड़े।

बिल्लो- मैं जाकर कहे देती हूँ कि वह आपको बुलाती है।

पूर्णा को कोई बहाना न मिला। वह उठी और शर्म से सर झुकाये, घूँघट निकाले, बदन को चुराती, लजाती, बलखाती, एक गिलौरीदान लिये दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई अमृतराय ने देखा तो अचम्भे में आ गये। आँखे चौंधिया गयीं। एक मिनट तक तो वह इस तरह ताकते रहे जैसे कोई लड़के खिलौने को देखे। इसके बाद मुस्कराकर बोले- ईश्वर, तू धन्य है।

पूर्णा- (लजाती हुई) आप कुशल से थे?

अमृत॰- (तिरछी निगाहों से देखकर) अब तक तो कुशल से था, मगर अब खैरियत नहीं नजर आती।

पूर्णा समझ गयी, अमृतराय की रंगीली बातों का आनंद लेते-लेते वह बोलने में निपुण हो गयी थी। बोली- अपने किये का क्या इलाज?

अमृत॰- क्या किसी को अपनी जान से बैर है।

पूर्णा ने लजाकर मुँह फेर लिया। बाबू साहब हँसने लगे और पूर्णा की तरफ प्यार की निगाहों से देखा। उसकी रसिक बातें उनको बहुत भाई, कुछ काल तक और ऐसी ही रस भरी बातें होती रहीं। पूर्णा को इस बात की सुधि भी न थी कि मेरा इस तरह बोलना चालना मेरे लिए उचित नहीं है। उसको इस वक्त न पंडाइन का डर था, न पड़ोसियों का भय। बातों ही बातों में उसने मुसकराकर अमृतराय से पूछा- आपको आजकल प्रेमा का कुछ समाचार मिला है?

अमृत॰- नहीं पूर्णा, मुझे इधर उनकी कुछ खबर नहीं मिली। हाँ, इतना जानता हूँ कि बाबू दाननाथ से ब्याह की बातचीत हो रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा- बाबू दाननाथ तो आपके मित्र है?

अमृत०- मित्र भी हैं और प्रेमा के योग्य भी है।

पूर्णा- यह तो मैं न मानूंगी। उनका जोड़ है तो आप ही से है। हाँ, आपका ब्याह भी तो कहीं ठहरा था?

अमृत०- हाँ, कुछ बातचीत हो रही थी।

पूर्णा- कब तक होने की आशा है?

अमृत०- देखें अब कब भाग्य जागता है। मैं तो बहुत जल्दी मचा रहा हूँ।

पूर्णा- तो क्या उधर ही से खिंचाव है। आश्चर्य की बात है।

अमृत०- नहीं पूर्णा, मै जरा भाग्यहीन हूँ। अभी तक सिवाय बातचीत होने के और कोई बात तय नहीं हुई।

पूर्णा- (मुसकराकर) मुझे अवश्य नेवता दीजिएगा।

अमृत०- तुम्हारे ही हाथों में तो सब कुछ है। अगर तुम चाहो तो मेरे सर सेहरा बहुत जल्द बँध जाए।

पूर्णा भौंचक होकर अमृतराय की ओर देखने लगी। उनका आशय अब की बार भी वह न समझी। बोली- मेरी तरफ से आप निश्चित रहिए। मुझसे जहाँ तक हो सकेगा उठा न रखूँगी।

अमृत०- इन बातों को याद रखना, पूर्णा, ऐसा न हो भूल जाओ तो मेरे सब अरमान मिट्टी में मिल जाएं।

यह कहकर बाबू अमृतराय उठे और चलते समय पूर्णा की ओर देखा। उसकी आँखे डबडबायी हुई थी, मानो विनय कर रही थी कि जरा देर और बैठिए। मगर अमृतराय को कोई जरूरी काम था धीरे से उठ खड़े हुए और बोले- जी तो नहीं चाहता कि यहाँ से जाऊँ। मगर आज कुछ काम ही ऐसा आ पड़ा। यह कहा और चल दिये। पूर्णा खड़ी रोती रह गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 8

तुम सचमुच जादूगर हो

नौ बजे रात का समय था। पूर्णा अंधेरे कमरे में चारपाई पर लेटी हुई करवटें बदल रही है और सोच रही है आखिर वह मुझसे क्या चाहते हैं? मैं तो उनसे कह चुकी कि जहाँ तक मुझसे हो सकेगा आपका कार्य सिद्ध करने में कोई बात उठा न रखूँगी। फिर वह मुझसे कितना प्रेम बढ़ाते हैं। क्यों मेरे सर पर पाप की गठरी लादते हैं मैं उनकी इस मोहनी सूरत को देखकर बेबस हुई जाती हूँ।

मैं कैसे दिल को समझाऊँ? वह तो प्रेम रस पीकर मतवाला हो रहा है। ऐसा कौन होगा जो उनकी जादूभरी बातें सुनकर रीझ न जाय? हाय कैसा कोमल स्वभाव है। आँखे कैसी रस से भरी हैं। मानो हृदय में चुभी जाती है।

आज वह और दिनों से अधिक प्रसन्न थे। कैसा रह रहकर मेरी और ताकते थे। आज उन्होंने मुझे दो-तीन बार 'प्यारी पूर्णा' कहा। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करने वाले हैं? नारायण। वह मुझसे क्या चाहते हैं। इस मोहब्बत का अंत क्या होगा।

यही सोचते-सोचते जब उसका ध्यान परिणाम की ओर गया तो मारे शर्म के पसीना आ गया। आप ही आप बोल उठी।

न...न...। मुझसे ऐसा न होगा। अगर यह व्यवहार उनका बढ़ता गया तो मेरे लिए सिवाय जान दे देने के और कोई उपाय नहीं है। मैं जरूर जहर खा लूँगी। नही-नहीं, मैं भी कैसी पागल हो गयी हूँ। क्या वह कोई ऐसे वैसे आदमी हैं। ऐसा सज्जन पुरुष तो संसार में न होगा। मगर फिर यह प्रेम मुझसे क्यों लगाते हैं। क्या मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं। बाबू साहब, ईश्वर के लिए ऐसा न करना। मैं तुम्हारी परीक्षा में पूरी न उतरूँगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा इसी उधेड़-बुन मे पड़ी थी कि नींद आ गयी। सबेरा हुआ। अभी नहाने जाने की तैयारी कर रही थी कि बाबू अमृतराय के आदमी ने आकर बिल्लो को जोर से पुकारा और उसे एक बंद लिफाफा और एक छोटी-सी संदूकची देकर अपनी राह ली। बिल्लो ने तुरंत आकर पूर्णा को यह चीजें दिखायी।

पूर्णा ने काँपते हुए हाथों से खत लिया। खोला तो यह लिखा था-

"प्राणप्यारी से अधिक प्यारी पूर्णा।

जिस दिन से मैंने तुमको पहले पहल देखा था, उसी दिन से तुम्हारे रसीले नैनों के तीर का घायल हो रहा हूँ और अब घाव ऐसा दुखदायी हो गया है कि सहा नहीं जाता। मैंने इस प्रेम की आग को बहुत दबाया। मगर अब वह जलन असहय हो गयी है। पूर्णा, विश्वास मानो, मैं तुमको सच्चे दिल से प्यार करता हूँ। तुम मेरे हृदय कमल के कोष की मालिक हो। उठते-बैठते तुम्हारा मुसकराता हुआ चित्र आँखों के सामने फिरा करता है। क्या तुम मुझ पर दया न करोगी? मुझ पर तरस न खाओगी? प्यारी पूर्णा। मेरी विनय मान जाओ। मुझको अपना दास, अपना सेवक बना लो। मैं तुमसे कोई अनुचित बात नहीं चाहता। नारायण, कदापि नहीं, मैं तुमसे शास्त्रीय रीति पर विवाह करना चाहता हूँ। ऐसा विवाह तुमको अनोखा मालूम होगा। तुम समझोगी, यह धोखे की बात है। मगर सत्य मानो, अब इस देश में ऐसे विवाह कहीं-कहीं होने लगे हैं। मैं तुम्हारे विरह में मर जाना पसंद करूँगा, मगर तुमको धोखा न दूंगा।

'पूर्णा। नहीं मत करो। मेरी पिछली बातों को याद करो। अभी कल ही जब मैंने कहा कि 'तुम चाहो तो मेरे सर बहुत जल्द सेहरा बँध सकता है।' तब तुमने कहा था कि 'मैं भर शक्ति कोई बात उठा न रखूँगी।' अब अपना वादा पूरा करो। देखो मुकर मत जाना।'

'इस पत्र के साथ मैं एक जहाऊ कंगन भेजता हूँ। शाम को मैं तुम्हारे दर्शन को आऊँगा। अगर यह कंगन तुम्हारी कलाई पर दिखाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिया तो समझ जाऊँगा कि मेरी विनय मान ली गयी। अगर नहीं तो फिर तुम्हें मुँह न दिखाऊँगा।'

तुम्हारी सेवा का अभिलाषी
अमृतराय।"

पूर्णा ने बड़े गौर से इस खत को पढ़ा और शोक के अथाह समुद्र में गोते खाने लगी। अब यह गुल खिला। महापुरुष ने वहाँ बैठकर यह पाखंड रचा। इस धूर्तपन को देखो कि मुझसे बेर-बेर कहते थे कि तुम्हारे ही ऊपर मेरा विवाह ठीक करने का बोझ है, मैं बौरी क्या जानूँ कि इनके मन में क्या बात समायी है। मुझसे विवाह का नाम लेते उनको लाज नहीं होती। अगर सुहागिन बनना भाग में बदा होता तो विधवा काहे लियो होती। मैं अब इनको क्या जवाब दूँ। अगर किसी दूसरे आदमी ने यह गाली लिखी होती तो उसका कभी मुँह न देखती। मैं क्या सखी प्रेमा से अच्छी हूँ? क्या उनसे सुंदर हूँ? क्या उनसे गुणवती हूँ? फिर यह क्या समझकर ऐसी बाते लिखते हैं? विवाह करेंगे। मैं समझ गयी जैसा विवाह होगा। क्या मुझे इतनी-भी समझ नहीं? यह सब उनकी धूर्तपन है। वह मुझे अपने घर रखना चाहते हैं। मगर ऐसा मुझसे कदापि न होगा। मैं तो इतना ही चाहती हूँ कि कभी-कभी उनकी मोहनी मूरत का दर्शन पाया करूँ। कभी-कभी उनकी रसीली बतियाँ सुना करूँ और उनका कुशल आनंद, सुख समाचार पाया करूँ। बस, उनकी पत्नी बनने के योग्य मै नहीं हूँ। क्या हुआ अगर हृदय में उनकी सूरत जम गयी है। मै इसी घर में उनका ध्यान करते-करते जान दे दूँगी। पर मोह के बस के आकर मुझसे ऐसा भारी पाप न किया जाएगा। मगर इसमें उन बेचारे का दोष नहीं है। वह भी अपने दिल से हारे हुए हैं। नहीं मालूम क्यों मुझ अभागिनी में उनका प्रेम लग गया। इस शहर में ऐसा कौन रईस है जो उनको लड़की देने में अपनी बड़ाई न समझे। मगर ईश्वर को न जाने क्या मंजूर था कि उनकी प्रीति मुझसे लगा दी। हाय! आज की साँझ को वह आएंगे। मेरी कलाई पर कंगन न देखेंगे तो दिल में क्या कहेंगे? कहीं आना-जाना त्याग दें तो मैं बिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मारे मर जाऊँ। अगर उनका चित्त जरा भी मेरी ओर से मोटा हुआ, तो अवश्य जहर खा लूँगी। अगर उनके मन में जरा भी माख आया, जरा भी निगाह बदली, तो मेरा जीना कठिन है।

बिल्लो पूर्णा के मुखड़े का चढ़ाव-उतार बड़े गौर से देख रही थी। जब वह खत पढ़ चुकी तो उसने पूछा- क्या लिखा है बहू?

पूर्णा- (मलिन स्वर में) क्या बताऊँ क्या लिखा है?

बिल्लो- क्यों कुशल तो है?

पूर्णा- हाँ, सब कुशल ही है। बाबू साहब ने आज नया स्वाँग रचा।

बिल्लो- (अचंभे से) वह क्या?

पूर्णा- लिखते हैं कि मुझसे...

उससे और कुछ न कहा गया। बिल्लो समझ गयी। मगर वहीं तक पहुँची जहाँ तक उसकी बुद्धि ने मदद की। वह अमृतराय की बढ़ती हुई मुहब्बत को देख-देखकर दिल में समझे बैठी हुई थी कि वह एक न एक दिन पूर्णा को अपने घर अवश्य डालेंगे। पूर्णा उनको प्यार करती है, उन पर जान देती है। वह पहले बहुत हिचकिचायगी मगर अंत में मान ही जायगी। उसने सैंकड़ों रईसों को देखा था कि नाइनों कहारियो, महराजिनों को घर डाल लिया था। अब की भी ऐसा ही होगा। उसे इसमें कोई बात अनोखी नहीं मालूम होती थी कि बाबू साहब का प्रेम सच्चा है मगर बेचारे सिवाय इसके और कर ही क्या सकते हैं कि पूर्णा को घर डाल लें। देखना चाहिए कि बहू मानती है या नहीं। अगर मान गयीं तो जब तक जियेंगे, सुख भोगेंगी। मैं भी उनकी सेवा में एक टुकड़ा रोटी पाया करूँगी और जो कहीं इंकार किया तो किसी का निबाह न होगा। बाबू साहब ही का सहारा ठहरा। जब वही मुँह मोड़ लेंगे तो फिर कौन किसको पूछता है।

इस तरह ऊँच-नीच सोचकर उसने पूर्णा से पूछा- तुम क्या जवाब दोगी?

पूर्णा- जवाब ऐसी बातों का भी भला कहीं जवाब होता है। भला विधवाओं का कहीं ब्याह हुआ है और वह भी ब्राह्मण का क्षत्रिय से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस तरह की चन्द कहानियाँ मैंने उन किताबो में पढ़ीं जो वह मुझे दे गये हैं। मगर ऐसी बात कहीं सैतुक नहीं देखने आयी।

बिल्लो समझी थी कि बाबू साहब उसको घर डालने वाले हैं। जब ब्याह का नाम सुना तो चकराकर बोली- क्या ब्याह करने को कहते हैं?

पूर्णा- हाँ।

बिल्लो- तुमसे?

पूर्णा- यही तो आश्चर्य है।

बिल्लो- अचराज सा अचरज हैं भला ऐसी कहीं भया है। बालक पक गये मगर ऐसा ब्याह नहीं देखा।

पूर्णा- बिल्लो, यह सब बहाना है। उनका मतलब मैं समझ गयी।

बिल्लो- वह तो खुली बात है।

पूर्णा- ऐसा मुझसे न होगा। मैं जान दे दूँगी पर ऐसा न करूँगी।

बिल्लो- बहू उनका इसमें कुछ दोष नहीं है। वह बेचारे भी अपने दिल से हारे हुए हैं। क्या करें?

पूर्णा- हाँ बिल्लो, उनको नहीं मालूम क्यों मुझसे कुछ मुहब्बत हो गयी है और मेरे दिल का हाल तो तुमसे छिपा नहीं। अगर वह मेरी जान माँगते तो मैं अभी दे देती। ईश्वर जानता है, उनके जरा से इशारे पर मैं अपने को निछावर कर सकती हूँ।

मगर जो बात वे चाहते हैं मुझसे न होगी। उसके सोचती हूँ तो मेरा कलेजा काँपने लगता है।

बिल्लो- हाँ, बात तो ऐसा ही है मुदा...

पूर्णा- मगर क्या, भलेमानुसों में ऐसा कभी होता ही नहीं। हाँ, नीच जातियों में सगाई, डोला सब कुछ आता है।

बिल्लो- बहू यह तो सच है। मगर तुम इंकार करोगी तो उनका दिल टूट जायेगा।

पूर्णा- यही डर मार डालता है। मगर इंकार न करूँ तो क्या करूँ। यह तो मैं भी जानती हूँ कि वह झूठ-सच ब्याह कर लेंगे। ब्याह क्या कर लेंगे। ब्याह क्या करेंगे, ब्याह का नाम करेंगे। मगर सोचो तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुनिया क्या कहेगी। लोग अभी से बदनाम कर रहे हैं, तो न जाने और क्या-क्या आक्षेप लगायेंगे। मैं सखी प्रेमा को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहूँगी। बस यही एक उपाय है कि जान दे दूँ, न रह बाँस न बजें बाँसुरी। उनको दो-चार दिन तक रंज रहेगा, आखिर भूल जाऐंगे। मेरी तो इज्जत बच जाएगी।

बिल्लो- (बात पलटकर) इस सन्दूकचे में क्या है?

पूर्णा- खोलकर देखो।

बिल्लो ने जो उसे खोला तो एक कीमती कंगन हरी मखमल में लपेटकर धरा था और सन्दूक में संदल की सुगंध आ रही थी। बिल्लो ने उसको निकाल लिया और चाहा की पूर्णा ने हाथ खींच लिया और आँखों में आँसू भरकर बोली- मत बिल्लो, इसे मत पहनाओ। सन्दूक में बंद करके रख दो।

बिल्लो- जरा पहनो तो देखो कैसा अच्छा मालूम होता है।

पूर्णा- कैसे पहनूँ। यह तो इस बात का सूचक हो जाएगा कि उनकी बात मंजूर है।

बिल्लो- क्या यह भी इस चिट्ठी में लिखा है?

पूर्णा- हाँ, लिखा है कि मैं आज शाम को आऊँगा और अगर कलाई पर कंगन देखूँगा तो समझ जाऊँगा कि मेरी बात मंजूर है।

बिल्लो- क्या आज ही शाम को आएंगे?

पूर्णा- हाँ।

यह कहकर पूर्णा ने सिर नीचा कर लिया। नहाने कौन जाता है। खाने पीने की किसको सुध है। दोपहर तक चुपचाप बैठी सोचा की। मगर दिल ने कोई बात निर्णय न की हाँ, ज्यों-ज्यों साँझ का समय निकट आया था त्यों-त्यों उसका दिल धड़कता जाता था कि उनके सामने कैसे जाऊँगी। वह मेरी कलाई पर कंगन न देखेंगे तो क्या कहेंगे? कहीं रूठकर चले न जायँ? वह कहीं रिसिया गये तो उनको कैसे मनाऊँगी? मगर तबियत का कायदा है कि जब कोई बात उसको अति लौलीन करने वाली होती है तो थोड़ी देर के बाद वह उसे भगाने लगती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा से अब सोचा भी न जाता था। माथे पर हाथ धरे मौन साधे चिन्ता की चित्र बनी दीवार की ओर ताक रही थी। बिल्लो भी मन मारे बैठी हुई थी। तीन बजे होंगे कि यकायक बाबू अमृतराय की मानूस आवाज दरवाजे पर बिल्लो पुकारते सुनायी दी। बिल्लो चट बाहर दौड़ी और पूर्णा जल्दी से अपनी कोठरी में घुस गयी और दरवाजा भेड़ लिया। उसका दिल भर आया और वह किवाड़ से चिमटकर फूट-फूटकर रोने लगी। उधर बाबू साहब बहुत बेचैन थे। बिल्लो ज्योंही बाहर निकली कि उन्होंने उसकी तरफ आस-भरी आँखों से देखा। मगर जब उसके चेहरे पर खुशी का कोई चिह्न न दिखायी दिया तो वह उदास हो गये और दबी आवाज में बोली- महरी, तुम्हारी उदासी देखकर मेरा दिल बैठा जाता है।

बिल्लो ने इसका उत्तर कुछ न दिया।

अमृतराय का माथा ठनका कि जरूर कुछ गड़बड़ हो गयी। शायद बिगड़ गयी। डरते-डरते बिल्लो से पूछा- आज हमारा आदमी आया था?

बिल्लो- हाँ आया था।

अमृत॰- कुछ दे गया?

बिल्लो- दे क्यों नहीं गया।

अमृत॰- तो क्या हुआ? उसको पहना?

बिल्लो- हाँ, पहना अरे आँख भर के देखा तो हुई नहीं। तब से बैठी रो रही है। न खाने उठी, न गंगा जी गयी।

अमृत॰- कुछ कहा भी। क्या बहुत खफा है?

बिल्लो- कहतीं क्या? तभी से आँसू का तार नहीं टूटा।

अमृतराय समझ गये कि मेरी चाल बुरी पड़ी। अभी मुझे कुछ दिन और धीरज रखना चाहिए था। वह जरूर बिगड़ गयीं। अब क्या करूँ? क्या अपना-सा मुँह ले के लौट जाऊँ? या एक दफा फिर मुलाकात कर लूँ तब लौट जाऊँ। कैसे लौटूँ, लौटा जायगा? हाय! अब न लौटा जायगा। पूर्णा तू देखने में बहुत सीधी और भोली है, परन्तु तेरा हृदय बहुत कठोर है। तूने मेरी बातों का विश्वास नहीं माना तू समझती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तुझसे कपट कर रहा हूँ। ईश्वर के लिए अपने मन से यह शंका निकाल डाल। मैं धीरे-धीरे तेरे मोह में कैसा जकड़ गया हूँ कि अब तेरे बिना जीना कठिन है। प्यारी जब मैंने तुझसे पहले बातचीत की थी तो मुझे इसकी कोई आशा न थी कि तुम्हारी मीठी बातों और तुम्हारी मन्द मुस्कान का जादू मुझ पर ऐसा चल जायगा मगर वह जादू चल गया और अब सिवाय तुम्हारे उसे और कौन उतार सकता है। नहीं, मैं इस दरवाजे से कदापि नहीं हिलूँगा। तुम नाराज होगी, झल्लाओगी। मगर कभी न कभी मुझ पर तरस आ ही जायगा। बस अब यही करना उचित है। मगर देखो प्यारी, ऐसा न करना कि मुझसे बात करना छोड़ दो। नहीं तो मेरा कहीं ठिकाना नहीं। क्या तुम हमसे सचमुच नाराज हो। हाय क्या तुम पहरों से इसलिए रो रही हो कि मेरी बातों ने तुमको दुःख दिया।

यह बातें सोचते-सोचते बाबू साहब की आँखों में आँसू भर आये और उन्होंने गद्‌गद् स्वर में बिल्लो से कहा- महरी, हो सके तो जरा उनसे मेरी मुलाकात करा दो। कह दो एक दम के लिए मिल जायें। मुझ पर इतनी कृपा करो।

महरी ने जो उनकी आँखें लाल देखीं तो दौड़ी हुई घर में आयी पूर्णा के कमरे में किवाड़ खटखटाकर बोली- बहू, क्या गजब करती हो, बाहर निकलो, बेचारे खड़े रो रहे हैं।

पूर्णा ने इरादा कर लिया था कि मैं उनके सामने कदापि न जाऊँगी। वह महरी से बातचीत करके आप ही चले जाएंगे। मगर जब सुना कि रो रहे हैं तो प्रतिज्ञा टूट गयी। बोली- तुमने जा के क्या कह दिया?

महरी- मैंने तो कुछ भी नहीं कहा।

पूर्णा से अब न रहा गया। चट किवाड़ खोल दिये और काँपती हुई आवाज से बोली- सच बतलाओ बिल्लो, क्या बहुत रो रहे हैं?

महरी- नारायण जाने, दोनों आँखें लाल टेसू हो गयी हैं। बेचारे बैठे तक नहीं। उनको रोते देखकर मेरा भी दिल भर आया।

इतने में बाबू अमृतराय ने पुकार कर कहा- बिल्लो, मैं जाता हूँ। अपनी सरकार से कह दो अपराध क्षमा करें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा ने आवाज सुनी। वह एक ऐसे आदमी की आवाज थी जो निराशा के समुद्र में डूबता हो। पूर्णा को ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके हृदय को किसी ने छेद दिया। आँखों से आँसू की झड़ी लग गयी। बिल्लों ने कहा- बहू, हाथ जोड़ती हूँ, चली चलो जिसमें उनकी भी खातिरी हो जाए।

यह कहकर उसने आप से उठती हुई पूर्णा का हाथ पकड़कर उठाया और वह घूँघट निकालकर, आँसू पोंछती हुई, मर्दाने कमरे की तरफ चली। बिल्लो ने देखा कि उसके हाथों में कंगन नहीं है। चट सन्दूकची उठा लायी और पूर्णा का हाथ पकड़कर चाहती थी कि कंगन पहना दे। मगर पूर्णा ने हाथ झटककर छुड़ा लिया और दम की दम में बैठक के भीतर दरवाजे पर आके खड़ी रो रही थी। उसकी दोनों आँखें लाल थी और ताजे आँसुओ की रेखाएँ गालों पर बनी हुई थी। पूर्णा ने घूँघट उठाकर प्रेम-रस से भरी हुई आँखों से उनकी ओर ताका। दोनों की आँखें चार हुई। अमृतराय बेबस होकर बढ़े। सिसकती हुई पूर्णा का हाथ पकड़ लिया और बड़ी दीनता से बोले- पूर्णा, ईश्वर के लिए मुझ पर दया करो।

उनके मुँह से और कुछ न निकला। करुणा से गला बँध गया और वह सर नीचा किये हुए जवाब के इंतजार में खड़ा हो गये। बेचारी पूर्णा का धैर्य उसके हाथ से छूट गया। उसने रोते-रोते अपना सर अमृतराय के कंधे पर रख दिया। कुछ कहना चाहा मगर मुँह से आवाज न निकली। अमृतराय ताड़ गये कि अब देवी प्रसन्न हो गयी। उन्होंने आँखों के इशारे से बिल्लो से कंगन मँगवाया। पूर्णा को धीरे-से कुर्सी पर बिठा दिया। वह जरा भी न झिझकी। उसके हाथों में कंगन पहनाये, पूर्णा ने जरा भी हाथ न खींचा। तब अमृतराय न साहस करके उसके हाथों को चूम लिया और उनकी आँखें प्रेम से मग्न होकर जगमगाने लगीं। रोती हुई पूर्णा ने मोहब्बत-भरी निगाहों से उनकी ओर देखा और बोली- प्यारे अमृतराय तुम सचमुच जादूगर हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 9

विवाह हो गया

यह आँखों देखी बात है कि बहुत करके झूठी और बे-सिर पैर की बातें आप ही आप फैल जाया करती है। तो भला जिस बात में सच्चाई नाम-मात्र भी मिली हो उसको फैलते कितनी देर लगती है। चारों ओर यही चर्चा थी कि अमृतराय उस विधवा ब्राह्मणी के घर बहुत आया-जाया करता है। सारे शहर के लोग कसम खाने पर उद्यत थे कि इन दोनों में कुछ साँठ-गाँठ जरूर है। कुछ दिनों से पंडाइन और चौबाइन आदि ने भी पूर्णा के बनाव-चुनाव पर नाक-भौं चढ़ाना छोड़ दिया था। क्योंकि उनके विचार में अब वह ऐसे बन्धनों की भागी थी। जो लोग विद्वान थे और हिन्दुस्तान के दूसरे देशों के हाल जानते थे उनको इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं यह दोनों नियोग न कर लें। हजारों आदमी इस घात मे थे कि अगर कभी रात को अमृतराय पूर्णा की ओर जाते पकड़े जायँ तो फिर लौटकर घर न जाने पावें। अगर कोई अभी तक अमृतराय की नीयत की सफाई पर विश्वास रखता था तो वह प्रेमा थी। वह बेचारी विराहग्नि में जलते-जलते काँटा हो गई थी, मगर अभी तक उनकी मुहब्बत उसके दिल में वैसी ही बनी हुई थी। उसके दिल में कोई बैठा हुआ कह रहा था कि तेरा विवाह उनसे अवश्य होगा। इसी आशा पर उसके जीवन का आधार था। वह उन लोगों में थी जो एक ही बार दिल का सौदा चुकाते हैं।

आज पूर्णा से वचन लेकर बाबू साहब बंगले पर पहुँचने भी न पाये थे कि यह खबर एक कान से दूसरे कान फैलने लगी और शाम होते-होते सारे शहर में यही बात गूँजने लगी। जो कोई सुनता उसे पहले तो विश्वास न आता। क्या इतने मान-मर्यादा के ईसाई हो गये हैं, बस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी शंका मिट जाती। वह उनको गालियाँ देता, कोसता। रात तो किसी तरह कटी। सवेरा होते ही मुंशी बदरी प्रसाद के मकान पर सारे नगर के पंडित, विद्वान धनाढ़्य और प्रतिष्ठित लोग एकत्र हुए और इसका विचार होने लगा कि यह शादी कैसे रोकी जाय।

पंडित भृगुदत्त- विधवा विवाह वर्जित है कोई हमसे शास्त्रार्थ कर ले। वेद-पुराण में कहीं ऐसा अधिकार कोई दिखा दे तो हम आज पंडिताई करना छोड़ दें।

इस पर बहुत से आदमी चिल्लाये, हाँ, हाँ, जरूर शास्त्रार्थ हो।

शास्त्रार्थ का नाम सुनते ही इधर-उधर से सैंकड़ों पंडित विद्यार्थी बगलों में पोथियाँ दबाये, सिर उठाये, अंगोछा कंधे पर रखे, मुँह में तमाकू भरे, इकट्ठे हो गये और झक-झक होने लगी कि जरूर शास्त्रार्थ हो। पहले यह श्लोक पूछा जाय। उसका यह उत्तर दें तो फिर यह प्रश्न किया जावे। अगर उत्तर देने में वह लोग साहित्य या व्याकरण में जरा भी चूके तो जीत हमारे हाथ हो जाय। सैंकड़ों कठमुल्ले गँवार भी इसी मण्डली में मिलकर कोलाहल मचा रहे थे। मुंशी बदरी प्रसाद ने जब इनको शास्त्रार्थ करने पर उतारु देखा तो बोले- किससे करोगे शास्त्रार्थ? मान लो वह शास्त्रार्थ न करें तब?

सेठ धूनीमल- बिना शास्त्रार्थ किये विवाह कर लेगें (धोती सम्हाल कर) थाने में रपट कर दूँगा।

ठाकुर जोरावर सिंह- (मूछों पर ताव देकर) कोई ठट्ठा है ब्याह करना, सिर काट डालूँगा। लहू की नदी बह जायगी।

राव साहब- बारता की बारात काट डाली जायगी।

इतने में सैंकड़ों आदमी और आ डटे और आग में ईधन लगाने लगे।

एक- जरूर से जरूर सिर गंजा कर दिया जाए।

दूसरा- घर में आग लगा देंगे। सब बारात जल-भुन जायगी।

तीसरा- पहले उस यात्री का गला घोंट देंगे।

इधर तो यह हरबोंग मचा हुआ था, उधर दीवानखाने में बहुत से वकील और मुखतार रमझल्ला मचा रहे थे। इस विवाह को खास विरुद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साबित करने के लिए बड़ा उद्योग किया जा रहा था। बड़ी तेजी से मोटी-मोटी पुस्तकों के वरक उलटे जा रहे थे। बरसों की पुरानी-धुरानी नजीरें पढ़ी जा रही थी कि कहीं से कोई दाँव-पकड़ निकल आवे। मगर कई घण्टे तक सर खपाने पर कुछ न हो सका। आखिर यह सम्मति हुई कि पहले ठाकुर जोरावर सिंह अमृतराय का धमकावें। अगर इस पर भी वह न मानें तो जिस दिन बारात निकले सड़क पर मारपीट की जाय। इस प्रस्ताव के बाद न मानें तो विसर्जन हुई। बाबू अमृतराय ब्याह की तैयारियों में लगे हुए थे कि ठाकुर जोरावर सिंह का पत्र पहुँचा। उसमें लिखा था-

'बाबू अमृतराय को ठाकुर जोरावर सिंह का सलाम-बंदगी बहुत-बहुत तरह से पहुँचे। आगे हमने सुना है कि आप किसी विधवा ब्राह्मणी से विवाह करने वाले हैं। हम आपसे कहे देते हैं कि भूलकर भी ऐसा न कीजिएगा। नहीं तो आप जाने और आपका काम।'

जोरावर सिंह एक धनाढ़य और प्रतिष्ठित आदमी होने के उपरान्त उस शहर के लठैतों और बाँके आदमियों का सरदार था और कई बेर बड़े-बड़ों को नीचा दिखा चुका था। उसकी धमकी ऐसी न थी कि अमृतराय पर उसका कुछ असर न पड़ता। चिट्ठी को देखते ही उनके चेहरे का रंग उड़ गया। सोचने लगे कि ऐसी कौन-सी चाल चलूँ कि इसको अपना आदमी बना लूँ कि इतने में दूसरी चिट्ठी पहुँची। यह गुमनाम थी और इसका आशय भी पहली चिट्ठी से मिलता था। इसके बाद शाम होते-होते सैंकड़ो गुमनाम चिट्ठियाँ आयीं। कोई कहता था कि अगर फिर ब्याह का नाम लिया तो घर में आग लगा देंगे। कोई सर काटने की धमकी देता था। कोई पेट में छुरी भोंकने के लिए तैयार था। और कोई मूँछ के बाल उखाड़ने के लिए चुटकियाँ गर्म कर रहा था। अमृतराय यह तो जानते थे कि शहर वाले विरोध अवश्य करेंगे मगर उनको इस तरह की राड़ का गुमान भी न था। इन धमकियों ने जरा देर के लिए उन्हें भय में डाल दिया। अपने से अधिक खटका उनको पूर्णा के बारे में था कि कहीं यही सब दुष्ट उसे कोई हानि न पहुँचावें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसी दम कपड़े पहिन, पैरगाड़ी पर सवार होकर चटपट मजिस्ट्रेट की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे पूरा-पूरा वृत्तान्त कहा। बाबू साहब का अंग्रेजों में बहुत मान था। इसलिए नहीं कि वह खुशामदी थे या अफसरों की पूजा किया करते थे किन्तु इसलिए कि वह अपनी मर्यादा रखना आप जानते थे। साहब ने उनका बड़ा आदर किया। उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनी। सामाजिक सुधार की आवश्यकता को माना और पुलिस के सुपरिण्टेंडेंट को लिखा कि आप अमृतराय की रक्षा के वास्ते एक गारद रवाना कीजिए और खबर लेते रहिए कि मारपीट, खून-खराबा न हो जाय। साँझ होते-होते तीस सिपाहियों का एक गारद बाबू साहब के मकान पर पहुँच गया, जिनमें से पाँच बलवान आदमी पूर्णा के मकान की हिफाजत करने के लिए भेजे गये।

शहर वालों ने जब देखा कि बाबू साहब ऐसा प्रबन्ध कर रहे हैं तो और भी झल्लाये। मुंशी बदरी प्रसाद अपने सहायकों को लेकर मजिस्ट्रेट के पास पहुँचे और दुहाई मचाई कि अगर वह विवाह रोक न दिया गया तो शहर में बड़ा उपद्रव होगा और बलवा हो जाने का डर है। मगर साहब समझ गये कि यह लोग मिल-जुलकर अमृतराय को हानि पहुँचाना चाहते हैं। मुंशी जी से कहा कि सरकार किसी आदमी की शादी-विवाह में विघ्न डालना नियम के विरुद्ध है। जब तक कि उस काम से किसी दूसरे मनुष्य को कोई दुःख न हो। यह टका-सा जवाब पाकर मुंशी जी बहुत लज्जित हुए। वहाँ से जल-भुनकर मकान पर आये और अपने सहायकों के साथ बैठकर फैसला किया कि ज्योंही बारात निकले, उसी दम पचास आदमी उस पर टूट पड़ें। पुलिस वालों की भी खबर लें और अमृतराय की भी हड्डी-पसली तोड़कर धर दें।

बाबू अमृतराय के लिए यह समय बहुत नाजुक था। मगर वह देश का हितैषी तन-मन-धन से इस सुधार के काम में लगा हुआ था। विवाह का दिन आज से एक सप्ताह पीछे नियत किया गया। क्योंकि ज्यादा विलम्ब करना उचित न था और यह सात दिन बाबू साहब ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसी हैरानी में काटे कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। प्रतिदिन वह दो कांस्टेबिलों के साथ पिस्तौलों की जोड़ी लगाये दो बेर पूर्णा के मकान पर आते। वह बेचारी मारे डर के मरी जाती थी। वह अपने को बार-बार कोसती कि मैंने क्यों उनको आशा दिलाकर यह जोखिम मोल ली। अगर इन दुष्टों ने कहीं उन्हें कोई हानि पहुँचाई तो वह मेरी ही नादानी का फल होगा। यद्यपि उसकी रक्षा के लिए कई सिपाही नियत थे मगर रात-रात भर उसकी आँखों में नींद न आती। पत्ता भी खड़कता तो चौंककर उठ बैठती। जब बाबू साहब सबेरे आकर उसको ढारस देते तो जाकर उसके जान में जान आती।

अमृतराय ने चिट्ठियाँ तो इधर-उधर भेज ही दी थीं। विवाह के तीन-चार दिन पहले से मेहमान आने लगे। कोई मुम्बई से आता था, कोई मदरास से, कोई पंजाब से और कोई बंगाल से। बनारस में सामाजिक सुधार के विरोधियों का बड़ा जोर था और सारे भारतवर्ष के रिफार्मरों के जी में आग लगी हुई थी कि चाहे जो हो, बनारस में सुधार के चमत्कार फैलाने का ऐसा अपूर्व समय हाथ से न जाने देना चाहिए, वह इतनी दूर-दूर से इसलिए आते थे कि सब काशी की भूमि में रिफार्म की पताका अवश्य गाड़ दें। वह जानते थे कि अगर इस शहर में यह विवाह हो तो फिर इस सूबें के दूसरे शहरों के रिफार्मरों के लिए रास्ता खुल जायगा। अमृतराय मेहमानों की आव-भगत में लगे हुए थे। और उनके उत्साही चेले साफ-सुथरे कपड़े पहने स्टेशन पर जा-जाकर मेहमानों को आदरपूर्वक लाते और उन्हें सजे हुए कमरों में ठहराते थे। विवाह के दिन तक यहाँ कोई डेढ़ सौ मेहमान जमा हो गये। अगर कोई मनुष्य सारे आर्यावर्त की सभ्यता, स्वतंत्रता, उदारता और देशभक्ति को एकत्रित देखना चाहता था तो इस समय बाबू अमृतराय के मकान पर देख सकता था। बनारस के पुरानी लकीर पीटने वाले लोग इन तैयारियों और ऐसे प्रतिष्ठित मेहमानों को देख-देख दाँतों उंगली दबाते। मुंशी बदरीप्रसाद और उनके सहायकों ने कई बेर धूम-धाम से जलसे किये हर बेर यही बात तय हुई कि चाहे जो मारपीट जरूर की जाय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवाह के पहले शाम को बाबू अमृतराय अपने साथियों को लेकर पूर्णा के मकान पर पहुँचे और वहाँ उनको बारातियों के आदर-सम्मान का प्रबंध करने के लिए ठहरा दिया। इसके बाद पूर्णा के पास गये। इनको देखते ही उसकी आँखों में आँसू भर आये।

अमृत०- (गले से लगाकर) प्यारी पूर्णा, डरो मत। ईश्वर चाहेगा तो बैरी हमारा बाल भी बाँका न करा सकें। कल जो बारात यहाँ आयेगी वैसी आज तक इस शहर मे किसी के दरवाजे पर न आयी होगी।

पूर्णा- मगर मैं क्या करूँ। मुझे तो मालूम होता है कि कल जरूर मारपीट होगी। चारों ओर से यह खबर सुन-सुन मेरा जी आधा हो रहा है। इस वक्त भी मुंशी जी के यहाँ लोग जमा हैं।

अमृत०- प्यारी तुम इन बातों को जरा भी ध्यान में न लाओ। मुंशी जी के यहाँ तो ऐसे जलसे महीनों से हो रहे हैं और सदा हुआ करेंगे। इसका क्या डर। दिल को मजबूत रखो। बस, यह रात बीच में है। कल प्यारी पूर्णा मेरे घर पर होगी। आह! वह मेरे लिए कैसे आनन्द का समय होगा।

पूर्णा यह सुनकर अपना डर भूल गयी। बाबू साहब को प्यारी की निगाहों से देखा और जब चलने लगे तो उनके गले से लिपटकर बोली- तुमको मेरी कसम, इन दुष्टों से बचे रहना।

अमृतराय ने उसे छाती से लगा लिया और समझा-बुझाकर अपने मकान को रवाना हुए।

पहर रात गये, पूर्णा के मकान पर, कई पंडित रेशमी बाना सजाये, गले में फूलों का हार डाले आये विधिपूर्वक लक्ष्मी की पूजा करने लगे। पूर्णा सोलहों सिंगार किये बैठी हुई थी। चारों तरफ गैस की रोशनी से दिन के समान प्रकाश हो रहा था। कांस्टेबिल दरवाजे पर टहल रहे थे। दरवाजे का मैदान साफ किया जा रहा था और शामियाना खड़ा किया जा रहा था। कुर्सियाँ लगायी जा रही थीं, फर्श बिछाया गया, गमले सजाये गये। सारी रात इन्हीं तैयारियों में कटी और सबेरा होते ही बारात अमृतराय के घर से चली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारात क्या थी सभ्यता और स्वाधीनता की चलती-फिरती तस्वीर थी। न बाजे का धड़-धड़ पड़-पड़, न बिगुलों की धों-धों पों-पों, न पालकियों का झुर्मट, न सजे हुए घोड़ों की चिल्लापों, न मस्त हाथियों का रेल-पेल, न सोंटे बल्लम वालों की कतार, न फुलवाड़ी, न बगीचे, बल्कि भले मानुषों की एक मंडली थी जो धीरे-धीरे कदम बढ़ाती चली जा रही थी। दोनों तरफ जंगी पुलिस के आदमी वर्दियाँ डाँटे सोंटे लिये खड़े थे। सड़क के इधर-उधर झुंड के झुंड आदमी लम्बी-लम्बी लाठियाँ लिये एकत्र थे और बारात की ओर देख-देख दाँत पीसते थे। मगर पुलिस का वह रोब था कि किसी को चूँ करने का भी साहस नहीं होता था। बारातियों से पचास कदम की दूरी पर रिजर्व पुलिस के सवार हथियारों से लैस, घोड़ों पर रान पटरी जमाये, भाले चमकाते और घोड़ों को उछालते चले जाते थे। तिस पर भी सबको यह खटका लगा हुआ था कि कहीं पुलिस के भय का यह तिलिस्म टूट न जाय। यद्यपि बारातियों के चेहरे से घबराहट लेशमात्र भी न पाई जाती थी तथापि दिल सबके धड़क रहे थे। जरा भी सटपट होती तो सबके कान खड़े हो जाते। एक बेर दुष्टों ने सचमुच धावा कर ही दिया। चारों ओर हलचल मच गयी। मगर उसी दम पुलिस ने भी डबल मार्च किया और दम की दम मे कई फसादियों की मुशकें कस लीं। फिर किसी को उपद्रव मचाने का साहस न हुआ। बारे किसी तरह घंटे भर में बारात पूर्णा के मकान पर पहुँची। यहाँ पहले से ही बारातियों के शुभागमन का सामान किया गया था। आँगन में फर्श लगा हुआ था। कुर्सियाँ धरी हुई थीं ओर बीचों-बीच में कई पूज्य ब्राह्मण हवन कुण्ड के किनारे बैठकर आहुति दे रहे थे। हवन की सुगन्ध चारों ओर उड़ रही थी। उस पर मंत्रों के मीठे-मीठे मध्यम और मनोहर स्वर जब कान में आते तो दिल आप ही उछलने लगता। जब सब बाराती बैठ गये तब उनके माथे पर केसर और चन्दन मला गया। उनके गलों में हार डाले गये और बाबू अमृतराय पर सब आदमियों ने पुष्पों की वर्षा की। इसके पीछे घर मकान के भीतर गया और वहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधिपूर्वक विवाह हुआ। न गीत गाये गये, न गाली-गलौज की नौबत आयी, न नेगचार का उधम मचा।

भीतर तो शादी हो रही थी, बाहर हजारों आदमी लाठियाँ और सोंटे लिए गुल मचा रहे थे। पुलिस वाले उनको रोके हुए मकान के चौगिर्द खड़े थे। इसी बची में पुलिस का कप्तान भी आ पहुँचा। उसने आते ही हुक्म दिया कि भीड़ हटा दी जाय। और उसी दम पुलिस वालों ने सोंटों से मार-मारकर इस भीड़ को हटाना शुरू किया। जंगी पुलिस ने डराने के लिए बन्दूकों की दो-चार बाढ़े हवा में फायर कर दी। अब क्या था, चारों ओर भगदड़ मच गयी। लोग एक पर एक गिरने लगे। मगर ठीक उसी समय ठाकुर जोरावर सिंह बाँकी पगिया बांधे, राजपूती बाना सजे, दोहरी पिस्तौल लगाये दिखायी दिया। उसकी मूँछें खड़ी थी। आँखों से अंगारे उड़ रहे थे। उसको देखते ही वह लोग जो छितिर-बितिर हो रहे थे फिर इकट्ठा होने लगे। जैसे सरदार को देखकर भागती हुई सेना दम पकड़ ले। देखते ही देखते हजार आदमी से अधिक एकत्र हो गये और तलवार के धनी ठाकुर ने एक बार कड़ककर कहा- 'जै दुर्गा जी की, वहीं सारे दिलों में मानों बिजली कौंध गयी, जोश भड़क उठा। तेवरियों पर बल पड़ गये और सब के सब नद की तरह उमड़ते हुए आगे को बढ़े। जंगी पुलिस वाले भी संगीने चढ़ाये, साफा बांधे, डटे खड़े थे। चारों ओर भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। धड़का लगा हुआ था कि अब कोई दम में लहू की नदी बहाना चाहती है। कप्तान ने जब इस बाढ़ को अपने ऊपर आते देखा तो अपने सिपाहियों को ललकारा और बड़े जीवट से मैदान में आकर सवारों को उभारने लगा कि यकायक पिस्तौल की आवाज आयी और कप्तान की टोपी जमीन पर गिर पड़ी मगर घाव ओछा लगा। कप्तान ने देख लिया था कि यह पिस्तौल जोरावर सिंह ने सर की है। उसने भी चट अपनी बन्दूक संभाली ओर निशाने का लगना था कि धाँय से आवाज हुई ओर जोरावर सिंह चारों खाने चित्त जमीन पर आ गिरा। उसके गिरते ही सबके हियाव छूट गये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे भेड़ों की भांति भागने लगे। जिसकी जिधर सींग समाई चल निकला। कोई आधे घण्टे में वहाँ चिड़िया का पूत भी न दिखायी दिया।

बाहर तो यह उपद्रव मचा था, भीतर दुलहा-दुलहिन मारे डर के सूखे जाते थे। बाबू अमृतराय जी दम-दम की खबर मँगाते और थर-थर काँपती हुई पूर्णा को ढारस देते। वह बेचारी रो रही थी कि मुझ अभागिनी के लिए माथा पिटौवल हो रही है कि इतने में बन्दूक छूटी। या नारायण अब किसकी जान गई। अमृतराय घबराकर उठे कि जरा बाहर जाकर देखें। मगर पूर्णा से हाथ न छुड़ा सके। इतने में एक आदमी ने फिर आकर कहा- बाबू साहब ठाकुर ढेर हो गये। कप्तान ने गोली मार दी।

आधे घण्टे में मैदान साफ हो गया और अब यहाँ से बारात की बिदाई की ठहरी। पूर्णा और बिल्लो एक सेज-गाड़ी में बिठाई गई और जिस सज-धज से बारात आयी थी उसी तरह वापस हुई। अब की किसी को सर उठाने का साहस नहीं हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि इधर-उधर झुंड आदमी जमा थे और इस मंडली को क्रोध की निगाहों से देख रहे थे। कभी-कभी मनचला जवान एकाध पत्थर भी चला देता था। कभी तालियाँ बजायी जाती थीं। मुँह चिढ़ाया जाता था। मगर इन शरारतों से ऐसे दिल के पोढ़े आदमियों की गम्भीरता में क्या विघ्न पड़ सकता था। कोई आधे घण्टे में बारात ठिकाने पर पहुँची। दुलहिन उतारी गयी ओर बारातियों की जान में जान आयी। अमृतराय की खुशी का क्या पूछना। वह दौड़-दौड़ सबसे हाथ मिलाते फिरते थे। बाँछें खिली जाती थीं। ज्योंही दुलहिन उस कमरे में पहुँची जो स्वयं आप ही दुलहिन की तरह सजा हुआ था तो अमृतराय ने आकर कहा- प्यारी, लो हम कुशल से पहुँच गये। ऐं, तुम तो रो रही हो... यह कहते हुए उन्होंने रुमाल से उसके आँसू पोंछे और उसे गले से लगाया।

प्रेम रस की मोती पूर्णा ने अमृतराय का हाथ पकड़ लिया और बोली- आप तो आज ऐसे प्रसन्नचित हैं, मानो कहीं राज मिल गया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
...College of Education Bantalab Raipur, Jammu. No. 4527 ...3.2003

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमृत॰- (लिपटाकर) कोई झूठ है जिसे ऐसी रानी मिले उसे राज की क्या परवाह?

आज का दिन आनन्द में कटा। दूसरे दिन बारातियों ने बिदा होने की आज्ञा माँगी। मगर अमृतराय की यह सलाह हुई कि लाला धनुषधारी लाल कम से कम एक बार सबको अपने व्याख्यान से कृतज्ञ करें यह सलाह सबको पसंद आयी। अमृतराय ने अपने बगीचे में एक बड़ा शामियान खड़ा करवाया और बड़े उत्सव से सभा हुई। वह धुआँ-धार व्याख्यान हुए कि सामाजिक सुधार का गौरव सबके दिलों में बैठ गया। फिर तो दो जलसे और भी हुए और दूने धूम-धाम के साथ। सारा शहर टूटा पड़ता था। सैंकड़ो आदमियों का जनेऊ टूट गया। इस उत्सव के बाद दो विधवा विवाह और हुए। दोनों दूल्हे अमृतराय के उत्साही सहायकों में थे और दुलहिनों में से एक पूर्णा के साथ गंगा नहाने वाली रामकली थी। चौथे दिन सब नेवतहरी बिदा हुए। पूर्णा बहुत कन्नी काटती फिरी, मगर बारातियों के आग्रह से मजबूर होकर उनसे मुलाकात करनी ही पड़ी और लाला धनुषधारी लाल ने तो तीन दिन उसे बराबर स्त्री-धर्म की शिक्षा दी।

शादी के चौथे दिन बाद पूर्णा बैठी हुई थी कि एक औरत ने आकर उसे एक बंद लिफाफा दिया। पढ़ा तो प्रेमा का प्रेम-पत्र था। उसने उसे मुबारकबादी दी थी और बाबू अमृतराय की वह तसवीर जो बरसों से उसके गले का हार हो रही थी, पूर्णा के लिए भेज दी थी। उस खत की आखिरी सतरें यह थीं---

'सखी, तुम बड़ी भाग्यवती हो। ईश्वर सदा तुम्हारा सोहाग कायम रखें। तुम्हारे पति की तसवीर तुम्हारे पास भेजती हूँ। इसे मेरी यादगार समझना। तुम जानती हो कि मैं इसको जान से ज्यादा प्यारी समझती रही। मगर अब मैं इस योग्य नहीं कि इसे अपने पास रख सकूँ। अब यह तुमको मुबारक हो। प्यारी, मुझे भूलना मत। अपने प्यारे पति को मेरी ओर से धन्यवाद देना।

तुम्हारी अभागिनी सखी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रेमा'

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अफसोस आज के पन्द्रहवें दिन बेचारी प्रेमा बाबू दाननाथ के गले बाँध दी गयी। बड़े धूम-धाम से बारात निकली। हजारों रुपया लुटा दिया गया। कई दिन तक सारा शहर मुंशी बदरी प्रसाद के दरवाजे पर नाच देखता रहा। लाखों का वारा-न्यारा हो गया। ब्याह के तीसरे ही दिन मुंशी जी परलोक को सिधारे। ईश्वर उनको स्वर्गवास दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 10
विरोधियों का विरोध

मेहमानों के विदा हो जाने के बाद यह आशा की जाती थी कि विरोधी लोग अब सिर न उठायेंगे। विशेष इसलिए कि ठाकुर जोरावार सिंह और मुंशी बदरी प्रसाद के मर जाने से उनका बल बहुत कम हो गया था। मगर यह आशा पूरी न हुई। एक सप्ताह भी न गुजरने पाया था कि अभी और सूचित से बैठने भी न पाये थे कि फिर यही दाँत किल-किल शुरू हो गयी।

अमृतराय कमरे में बैठे हुए एक पत्र पढ़ रहे थे कि महराज चुपके से आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। अमृतराय ने सर उठाकर उसको देखा तो मुसकराकर बोले- कैसे चले महाराज?

महराज- हजूर, जान बकसी होय तो कहूँ।

अमृत॰- शौक से कहो।

महराज- ऐसा न हो कि आप रिसहे हो जायँ।

अमृत॰- बात तो कहो।

महराज- हजूर, डर लगता है।

अमृत॰- क्या तनख्वाह बढ़वाना चाहते हो?

महराज- नाहीं सरकार

अमृत॰- फिर क्या चाहते हो?

महराज- हजूर, हमारा इस्तीफा ले लिया जाय।

अमृत॰- क्या नौकरी छोड़ोगे?

महराज- हाँ सरकार। अब हमसे काम नहीं होता।

अमृत॰- क्यों, अभी तो मजबूत हो। जी चाहे तो कुछ दिन आराम कर लो। मगर नौकरी क्यों छोड़ो।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

महराज- नाहीं सरकार, अब हम घर को जाइब।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमृत०- अगर तुमको यहाँ कोई तकलीफ हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर तनख्वाह कहीं और इसके ज्यादा मिलने की आशा हो तो वैसा कहो।

महराज- हजूर, तनख्वाह जो आप देते हैं कोई क्या माई का लाल देगा।

अमृतराय- फिर समझ में नहीं आता कि क्यों नौकरी छोड़ना चाहते हो?

महराज- अब सरकार, मैं आपसे क्या कहूँ। यहाँ तो यह बातें हो रही थीं उधर चम्मन व रम्मन कहार और भगेलू व दुक्खी बारी आपस में बातें कर रहे थे।

भगेलू- चलो, चलो जल्दी। नहीं तो कचहरी की बेला आ जैहै।

चम्मन- आगे-आगे तुम चलो।

भगेलू- हमसे आगूँ न चला जैहै।

चम्मन- तब कौन आगूँ चलै?

भगेलू- हम केका बताई।

रम्मन- कोई न चलै आगूँ तो हम चलित हैं।

दुक्खी- तैं आगे एक बात कहित है। न कोई आगूँ चलै न कोई पीछूँ।

चम्मन- फिर कैसे चला जाय?

भगेलू- सब साथ-साथ चलैं।

चम्मन- तुम्हार कपार।

भगेलू- साथ चले मा कौन हरज है?

मम्मन- तब सरकार से बतियाये कौन?

भगेलू- दुक्खी का खूब बतियाब आवत है।

दुक्खी- अरे राम रे! मैं उनके ताई न जैहूँ। उनका देख के मोका मुतास हो आवत है।

भगेलू- अच्छा, कोऊ न चलै तो हम आगूँ चलित हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सबै के सब चले। जब बरामदे में पहुँचे तो भगेलू रुक गया।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मम्मन- ठाढ़े काहे हो गयो? चले चलौ।

भगेलू- अब हम न जाबै। हमारा तो छाती धड़त है।

अमृतराय ने जो बरामदे में इनको साँय-साँय बातें करते सुना तो कमरे से बाहर निकल आये और हँसकर पूछा- कैसे चले, भगेलू?

भगेलू का हियाव छूट गया। सिर नीचा करके बोला- हजूर, यह सब कहार आपसे कुछ कहने आये है।

अमृतराय- क्या कहते हैं? यह सब तो बोलते ही नहीं।

भगेलू- (कहारों से) तुमको जौन कुछ कहना होय सरकार से कहो।

कहार भगेलू के इस तरह निकल जाने पर दिल में बहुत झल्लाये। चम्मन ने जरा तीखे होकर कहा- तुम काहे नाहीं कहत हौ? तुम्हार मुँह में जीभ नहीं है?

अमृतराय- हम समझ गये। शायद तुम लोग इनाम माँगने आये हो। कहारों से अब सिवाय हाँ कहने के और कुछ न बन पड़ा। अमृतराय ने उसी दम पाँच रुपया भगेलू के हाथ पर रख दिया। जब यह सब फिर अपनी काठरी में आये तो यों बातें करने लगे-

चम्मन- भगेलुआ बड़ा बोदा है।

रम्मन- अस रीस लागत रहा कि खाय भरे का देई।

दुक्खी- वहाँ जाय के ठकुरासोहाती करै लागा।

भगेलू- हमसे तो उनके सामने कुछ कहै न गवा।

दुक्खी- तब काहे को यहाँ से आगे-आगे गया रह्यो।

इतने में सुखई कहार लकड़ी टेकता खाँसता हुआ आ पहुँचा और इनको जमा देखकर बोला- का भवा? सरकार का कहेन?

दुक्खी- सरकार के सामने जाय कै सब गूँगे हो गये। कोई के मुँह से बात न निकली।

भगेलू- सुखई दादा तुम नियाव करो, जब सरकार हँसकर इनाम दे लागे तब कैसे कहा जात कि हम नौकरी छोड़न आये हैं।

सुखई- हम तो तुमसे पहले कह दीन कि यहाँ नौकरी छोड़ी के सब जने पछतैहो। अस भला मानुस कहूँ न मिलो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगेलू- दादा, तुम बात लाख रुपया की कहत हो।

चम्मन- एमा कौन झूठ हैं। अस मनई कहाँ मिले।

रम्मन- आज दस बरस रहत भये मुदा आधी बात कबहूँ नाहीं कहेन।

भगेलू- रीस तो उनके देह में छू नहीं गै। जब बात करत है हँसकर।

मम्मन- भैया, हमसे कोऊ कहत कि तुम बीस कलदार लेव और हमारे यहाँ चल के काम करो तो हम सराकर का छोड़ के कहूँ न जाइत। मुद्रा बिरादरी की बात ठहरी। हुक्का-पानी बन्द होई गवा तो फिर केह के द्वारे जैब।

रम्मन- यही डर तो जान मारे डालत है।

चम्मन- चौधरी कह गये हैं कि आज इनकेर काम न छोड़ देहों तो टाट बाहर कर दीन जैही।

सुखई- हम एक बेर कह दीन कि पछतौहो। जस मन में आवे करो।

आठ बजे रात को जब बाबू अमृतराय सैर करके आये तो कोई टमटम थाने वाला न था। चारों ओर घूम-घूम कर पुकारा। मगर किसी की आहट न पायी। महाराज, कहार, साईस सभी चल दिये। यहाँ तक कि जो साईस उनके साथ था वह भी न जाने कहाँ लोप हो गया। समझ गये कि दुष्टों ने छल किया। घोड़े को आप ही खोलने लगे कि सुखई कहार आता दिखाई दिया। उससे पूछा- यह सब के सब कहाँ चले गये?

सुखई- (खाँसकर) सब छोड़ गये। अब काम न करेंगे।

अमृतराय- तुम्हें कुछ मालूम है इन सभों ने क्यों छोड़ दिया?

सुखई- मालूम काहे नाहीं, उनके बिरादरी वाले कहते हैं इनके यहाँ काम मत करो। अमृतराय राय की समझ में पूरी बात आ गयी कि विरोधियों ने अपना कोई और बस न चलते देखकर अब यह ढंग रचा है। अन्दर गये तो क्या देखते हैं कि पूर्णा बैठी खाना पका रही है और बिल्लो इधर-उधर दौड़ रही है। नौकरों पर दाँत पीसकर रह गये। पूर्णा से बोले- आज तुमको बड़ा कष्ट उठाना पड़ा।

पूर्णा- (हँसकर) इसे आप कष्ट कहते हैं। यह तो मेरा सौभाग्य है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्नी के अधरों पर मन्द मुसकान और आँखों में प्रेम देखकर बाबू साहब के चढ़े हुए तेवर बदल गये। भड़कता हुआ क्रोध ठंडा पड़ गया और जैसे नाग सूँबी बाजे का शब्द सुनकर थिरकने लगता है और मतवाला हो जाता उसी भांति उस घड़ी अमृतराय का चित्त भी किलोलें करने लगा। आव देखा न ताव। कोट पतलून, जूते पहने हुए रसोई में बेधड़क घुस गये। पूर्णा हाँ, हाँ करती रही। मगर कौन सुनता है और उसे गले से लगाकर बोले- मैं तुमको यह न करने दूँगा।

पूर्णा भी पति के नशे में बेसुध होकर बोली- मैं न मानूँगी।

अमृत॰- अगर हाथों में छाले पड़े तो मैं जुरमाना ले लूँगा।

पूर्णा- मैं उन छालों को फूल समझूँगी, जुरमाना क्यों देने लगी।

अमृत॰- और जो सिर में धमक-अमक हुई तो तुम जानना।

पूर्णा- वाह! ऐसे सस्ते न छूटोगे। चन्दन रगड़ना पड़ेगा।

अमृत॰- चन्दन की रगड़ाई क्या मिलेगी।

पूर्णा- वाह! (हँसकर) भरपेट भोजन करा दूँगी।

अमृत॰- कुछ और न मिलेगा?

पूर्णा- ठंडा पानी भी पी लेना।

अमृत॰- (रिसियाकर) कुछ और मिलना चाहिए।

पूर्णा- बस, अब कुछ न मिलेगा।

यहाँ अभी यही बातें हो रही थीं कि बाबू प्राणनाथ और बाबू जीवननाथ आये। यह दोनों काश्मीरी थे और कालिज में शिक्षा पाते थे। अमृतराय के पक्षपातियों में ऐसा उत्साही और कोई न था जैसे यह दोनों युवक थे। बाबू साहब का अब तक जो अर्थ सिद्ध हुआ था, वह इन्हीं परोपकारियों के परिश्रम का फल था। और वे दोनों केवल जबानी बकवास लगाने वाले नहीं थे। वरन बाबू साहब की तरह वह दोनों भी सुधार का कुछ-कुछ कर्तव्य कर चुके थे। यही दोनों वीर थे जिन्होंने सहस्रों रुकावटों और बाधाओं को हटाकर विधवाओं से ब्याह किया था। पूर्णा की सखी रामकली न अपनी मरजी से प्राणनाथ के साथ विवाह करना स्वीकार किया था। और लक्ष्मी के माँ-बाप जो अगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के बड़े प्रतिष्ठित रईस थे, जीवननाथ से उसका विवाह करने के लिए बनारस आये थे। ये दोनों अलग-अलग मकान में रहते थे।

बाबू अमृतराय उनके आने की खबर पाते ही बाहर निकल आये और मुसकराकर पूछा- क्यों, क्या खबर है?

जीवननाथ- यह आपके यहाँ सन्नाटा कैसा?

अमृत॰- कुछ न पूछो, भाई।

जीवन॰- आखिर वे दरजन-भर नौकर कहाँ समा गये?

अमृत॰- सब जहन्नुम चले गये। जालिमों ने उन पर बिरादरी का दबाव डालकर यहाँ से निकलवा दिया।

प्राणनाथ ने ठट्ठा लगाकर कहा- लीजिए यहाँ भी वह ढंग है।

अमृतराय- क्या तुम लोगों के यहाँ भी यही हाल है।

प्राणनाथ- जनाब, इससे भी बदतर। कहारी सब छोड़ भागे। जिस कुएँ से पानी आता था वहाँ कई बदमाश लठ लिए बैठे हैं कि कोई पानी भरने आये तो उसकी गर्दन झाड़ें।

जीवननाथ- अजी, वह तो कहो कुशल होयी कि पहले से पुलिस का प्रबन्ध कर लिया नहीं तो इस वक्त शायद अस्पताल में होते।

अमृतराय- आखिर अब क्या किया जाए। नौकरों बिना कैसे काम चलेगा?

प्राणनाथ- मेरी तो राय है कि आप ही ठाकुर बनिए और आप ही चाकर।

जीवननाथ- तुम तो मोटे-ताजे हो। कुएं से दस-बीस कलसे पानी खींच ला सकते हो।

प्राणनाथ- और कौन कहे कि आप बर्तन-भाँडे नहीं माँज सकते।

अमृत॰- अजी अब ऐसे कंगाल भी नहीं हो गये हैं। दो नौकर अभी हैं, जब तक इनसे थोड़ा-बहुत काम लेंगे। आज इलाके पर लिख भेजता हूँ वहाँ दो-चार नौकर आ जायँगे।

जीवन॰- यह तो आपने अपना इंतजाम किया। हमारा काम कैसे चले।

अमृत॰- बस आज ही यहाँ उठ आओ, चटपट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन०- यह तो ठीक नहीं। और फिर यहाँ इतनी जगह कहाँ है?

अमृत०- वह दिल से राजी हैं। कई बेर कह चुकी हैं कि अकेले जी घबराता है। यह खबर सुनकर फूली न समायेंगी।

जीवन०- अच्छा अपने यहाँ तो टोह लूँ।

प्राण०- आप भी आदमी हैं या घनचक्कर। यहाँ टोह लूँ वहाँ टोह लूँ। भलमानसी चाहो तो बग्घी जोतकर ले चलों। दोनों प्राणियों को यहाँ लाकर बैठा दो। नहीं तो जाव टोह लिया करो।

अमृत०- और क्या, ठीक तो कहते हैं। रात ज्यादा जायगी तो फिर कुछ बनाये न बनेगी।

जीवन०- अच्छा जैसी आपकी मरजी।

दोनों युवक अस्तबल में गये। घोड़ा खोला और गाड़ी जोतकर ले गये। इधर अमृतराय ने आकर पूर्णा से यह समाचार कहा। वह सुनते ही प्रसन्न हो गई और इन मेहमानों के लिए खाना बनाने लगी। बाबू साहब ने सुखई की मदद से दो कमरे साफ कराये। उनमें मेज, कुर्सियाँ और दूसरी जरूरत की चीजें रखवा दीं। कोई नौ बजे होंगे कि सवारियाँ आ पहुँचीं। पूर्णा उनसे बड़े प्यार से गले मिली और थोड़ी ही देर में तीनों सखियाँ बुलबुल की तरह चहकने लगीं। रामकली पहले जरा झेंपी। मगर पूर्णा की दो-चार बातों न उसका हियाव भी खोल दिया।

थोड़ी देर में भोजन तैयार हो गया। और तीनों आदमी रसोई पर गये। इधर चार-पाँच बरस से अमृतराय दाल-भात खाना भूल गये थे। कश्मीरी बावरची तरह-तरह के सालना, अनेक प्रकार के मांस खिलाया करता था और यद्यपि जल्दी में पूर्णा सिवाय सादे खानों के और कुछ न बना सकी थी, मगर सबने इसकी बड़ी प्रशंसा की। जीवननाथ और प्राणनाथ दोनों काश्मीरी ही थे,, मगर वह भी कहते थे कि रोटी-दाल ऐसी स्वादिष्ट हमने कभी नहीं खाई।

रात तो इस तरह कटी। दूसर दिन पूर्णा ने बिल्लो से कहा कि जरा बाजार से सौदा लाओ तो आज मेहमानों को अच्छी-अच्छी चीजें खिलाऊँ। बिल्लो ने आकर सुखई से हुक्म लगाया। और सुखई एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टोकरा लेकर बाजार चले। वह आज कोई तीस बरस से एक ही बनिये से सौदा करते थे। बनिया एक ही चालाक था। बुढ़ऊ को खूब दस्तूरी देता मगर सौदा रुपये में बारह आने से कभी अधिक न देता। इसी तरह इस घूरे साहु ने सब रईसों को फँसा रखा था। सुखई ने उसकी दुकान पर पहुँचते ही टोकरा पटक दिया और तिपाई पर बैठकर बोला- लाव घूरे, कुछ सौदा सुलुफ तो दो मगर देरी न लगे।

और हर बेर तो घूरे हँसकर सुखई को तमाखू पिलाता और तुरन्त उसके हुक्म की तामील करने लगता। मगर आज उसने उसको और बड़ी रुखाई से देखकर कहा- आगे जाव। हमारे यहाँ सौदा नहीं है।

सुखई- जरा आदमी देख के बात करो। हमें पहचानते नहीं क्या?

घूरे- आगे जाव। बहुत टें-टें न करो।

सुखई- कुछ भाँग-वाँग तो नहीं खा गये क्या? अरे हम सुखई हैं।

घूरे- अजी तुम लाट हो तो क्या? चलो अपना रास्ता देखो।

सुखई- क्या तुम जानते हो हमें दूसरी दुकान पर दस्तूरी न मिलेगी? अभी तुम्हरे सामने दो आने रुपया लेकर दिखा देता हूँ।

घूरे- तुम सीधे से जाओगे कि नहीं? दुकान से हटकर बात करो। बेचारा सुखई साहु की इस रुखाई पर आश्चर्य करता हुआ दूसरी दुकान पर गया। वहाँ भी यही जवाब मिला। तीसरी दुकान पर पहुँचा। यहाँ भी वही धुतकार मिली। फिर तो उसने सारा-बाजार छान डाला। मगर कहीं सौदा न मिला। किसी ने उसे दुकान पर खड़ा तक होने न दिया। आखिर झक मारकर-सा मुँह लिये लौट आया और सब समाचार कहा। मगर नमक-मसाले बिना कैसे काम चले। बिल्लो ने कहा, अब की मैं जाती हूँ। देखूँ कैसे कोई सौदा नहीं देता। मगर वह ज्योंही बाहर निकली कि एक आदमी उसे इधर-उधर टहलता दिखायी दिया। बिल्लो को देखते ही वह उसके साथ हो लिया और जिस-जिस दुकान पर बिल्लो गई वह भी परछाई की तरह साथ लगा रहा। आखिर बिल्लो भी बहुत दौड़-धूप कर हाथ झुलाते लौट आयी। बेचारी पूर्णा ने हारकर सादे पकवान बनाकर धर दिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबू अमृतराय ने जब देखा कि द्रोही लोग इसी तरह पीछे पड़े तो उसी दम लाला धनुषधारी लाल को तार दिया कि आप हमारे यहाँ पाँच होशियार खिदमतगार भेज दीजिए। लाला साहब पहले ही समझे हुए थे कि बनारस में दुष्ट लोग जितना ऊधम मचायें थोड़ा हैं। तार पाते ही उन्होंने अपने-अपने होटल के पाँच नौकरों को बनारस रवाना किया। जिनमें एक काश्मीरी महराज भी थी। दूसरे दिन यह सब आ पहुँचे। सब के सब पंजाबी थे, जो न तो बिरादरी के गुलाम थे और न जिनको टाट बाहर किये जाने का खटका था। विरोधियों ने उसके भी कान भरने चाहे। मगर कुछ दाँव न चला। सौदा भी लखनऊ से इतना मँगा लिया जो कई महीनों को काफी था।

जब लोगों ने देखा इन शरारतों से अमृतराय को कुछ हानि पहुँची तो और ही चाल चले। उनके मुवक्किलों को बहकाना शुरू किया कि वह तो ईसाई हो गये हैं। साहबों के संग बैठकर खाते हैं। उनको किसी जानवर के मांस से विचार नहीं है। एक विधवा ब्राह्मणी से विवाह कर लिया है। उनका मुँह देखना, उनसे बातचीत करना भी शास्त्र के विरुद्ध है। मुवक्किलों में बहुधा करके देहातों के राजपूत ठाकुर और भुंइहार थे जो यहाता अविद्या की कालकोठरी में पड़े हुए थे या नये जमाने के चमत्कार ने उन्हें चौंधिया दिया था। उन्होंने जब यह सब ऊट-पटाँग बातें सुनी तब वे बहुत बिगड़े, बहुत झल्लाये और उसी दम कसम खाई की अब चाहे जो हो इस अधर्मी को कभी मुकदमा न देंगे। राम-राम इसको वेद शास्त्र का तनिक विचार नहीं भाया कि चट एक राँड को घर में बैठा लिया। छी-छी अपना लोक-परलोक दोनों बिगाड़ दिया। ऐसा ही था तो हिन्दू के घर में काहे को जन्म लिया था। किसी चोर-चंडाल के घर जनमे होते। बाप-दादे का नाम मिटा दिया। ऐसी ही बातें कोई दो सप्ताह तक उने मुवक्किलों में फैलीं। जिसका परिणाम यह हुआ कि बाबू अमृतराय का रंग फीका पड़ने लगा। जहाँ मारे मुकदमों के साँस लेने का अवकाश न मिलता था। वहाँ अब दिन-भर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने की नौबत आ गयी। यहाँ तक कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीसरा सप्ताह कोरा बीत गया और उनको एक भी अच्छा मुकदमा न मिला।

जज साहब एक बंगाली बाबू थे। अमृतराय के परिश्रम और तीव्रता, उत्साह और चपलता से जज साहब की आँखों में उन्होंने बड़ी प्रशंसा दे रखी थी। वह अमृतराय की बढ़ती हुई वकालत को देख-देख समझ गये थे कि थोड़ी ही दिनों मे यह सब वकीलों का सभापति हो जाएगा। मगर जब तीन हफ्ते से उनकी सूरत न दिखायी दी तब उनको आश्चर्य हुआ। सरिश्तेदार से पूछा कि आजकल बाबू अमृतराय कहाँ हैं। सरिश्तेदार साहब जाति के मुसलमान और बड़े सच्चे, साफ आदमी थे। उन्होंने सारा ब्योरा जो सुना था कह सुनाया। जज साहब सुनते ही समझ गये कि बेचारे अमृतराय सामाजिक कामों में अग्रण्य बनने का फल भोग रहे हैं। दूसरे दिन उन्होंने खुद अमृतराय को इजलास पर बुलवाया और देहाती जमींदारी के सामने उनसे बहुत देर तक इधर-उधर की बातें की। अमृतराय भी हँस-हँस उनकी बातों का जवाब दिया किये। इस बीच में कई वकीलों और बैरिस्टर जज साहब को दिखाने के लिए कागज पत्र लाये मगर साहब ने किसी के ओर ध्यान नहीं दिया। जब वह चले तो साहब ने कुर्सी से उठकर हाथ मिलाया और जरा जोर से बोले- बहुत अच्छा, बाबू साहब जैसा आप बोलता है, इस मुकदमे मे वैसा ही होगा।

आज जब कचहरी बरखास्त हुई तो उन जमींदारों में जिनके मुकदमे आज पेश थे, यों गलेचौर होने लगी।

ठाकुर साहब- (पगड़ी बांधे, मूछें खड़ी किये, मोटा-सा लद्द हाथ में लिये) आज जज साहब अमृतराय से खुब-खुब बतियात रहे।

मिश्र जी- (सिर घुटाये, टीका लगाये, मुँह में तम्बाकू दबाये और कन्धे पर अंगोछा रखे) खूब बतियावत रहा मानो कोउ अपने मित्र से बतियावै।

ठाकुर- अमृतराय कस हँस-हँस मुड़ी हिलावत रहा।

मिश्र जी- बड़े आदमियन का सब जगह आदर होत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठाकुर- जब लो दोनों बतियात रहै तब तलुक कउ वकील आये बाकी साहेब कोउ की ओर तनिक नाहीं ताकिन।

मिश्र जी- हम कहे देइत है तुमार मुकदमा उनहीं के राय से चले। सुनत रहयो कि नाहीं जब अमृतराय चले लागे तो जज साहब कहेन कि इस मुकदमे में वैसा ही होगा।

ठाकुर- सुना काहे नहीं, बाकी फिर काव करी।

मिश्र जी- इतना तो हम कहित हैं कि अस वकिल पिरथी भर में नाहीं ना।

ठाकुर- कस बहस करत हैं मानो जिहवा पर सरस्वती बैठी होय। उनकर बराबरी करैया आज कोई नाहीं है।

मिश्र जी- मुदा ईसाई होइ गया। रांड से ब्याह किहेसि।

ठाकुर- एतनै तो बीच परा है। अगर उनका वकील किहे होईत तो बाजी बद के जीत जाईत।

इसी तरह दोनों में बातें हुई और दीया में बाती पड़ते-पड़ते दोनों अमृतराय के पास गये और उनसे मुकदमें की कुल फरयाद बयान की। बाबू साहब ने पहले ही समझ लिया था कि इस मुकदमें में कुछ जान नहीं है। तिस पर उन्होंने मुकदमा ले लिया और दूसरे दिन एसी योग्यता से बहस की कि दूसरी ओर के वकील-मुख्तियार खड़े मुँह ताकते रह गये। आखिर जीत का सेहरा भी उन्हीं के सिर रहा। जज साहब उनकी बकतृया पर एसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने हँसकर धन्यवाद दिया और हाथ मिलया। बस अब क्या था। एक तो अमृतराय यों ही प्रसिद्ध थे, उस पर जज साहब का यह बर्ताव और भी सोने पर सुहागा हो गया। वह बँगले पर पहुँचकर चैन से बैठने भी न पाये थे, कि मुवक्किलों के दल के दल आने लगे और दस बजे रात तक यही ताता लगा रहा। दूसरे दिन से उनकी वकालत पहले से भी अधिक चमक उठी।

द्रोहियों ने जब देखा कि हमारी चाल भी उलटी पड़ी तो और भी दाँत पीसने लगे। अब मुंशी बदरी प्रसाद तो थे ही नहीं कि उन्हें सीधी चालें बताते। और न ठाकुर थे कि कुछ बाहुबल का चमत्कार दिखाते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबू कमला प्रसाद अपने पिता के सामने से ही इन बातों से अलग हो गये थे। इसलिये द्रोहियों ने अपना और कुछ बस न देखकर पंडित भृगुदत्त का द्वार खटखटाया उनसे हाथ जोड़कर कहा कि महाराज! कृपा-सिन्धु! अब भारतवर्ष में महा उत्पात और घोर पाप हो रहा है। अब आप ही चाहो तो उसका उद्धार हो सकता है। सिवाय आपके इस नौका को पार लगाने वाला इस संसार में कोई नहीं है। महाराज! अगर इस समय पूरा बल न लगाया तो फिर इस नगर के वासी कहीं मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहेंगे। कृपा के परनाले और धर्म के पोखरा ने जब अपने जजमानों को ऐसी दीनता से स्तुति करते देखा तो दाँत निकालकर बोले- आप लोग जौन है तैन घबरायें मत। आप देखा करें कि भृगुदत्त क्या करते हैं।

सेठ धूनीमल- महाराज! कुछ ऐसा यतन कीजिये कि इस दुष्ट का सत्यानाश् हो जाय! कोई नाम लै वाला न बचे।

कई आदमी- हाँ महाराज! इस घड़ी तो यही चाहिये।

भृगुदत्त- यही चाहिये तो यही लेना। सर्वथा नाश न कर दूँ तो ब्राह्मण नहीं। आज के सातवें दिन उसका नाश हो जायेगा।

सेठ जी- व्यय जो लगे बेखटके कोठी से मँगा लेना।

भृगुदत्त- इसके कहने की कोई आवश्यकता नहीं। केवल पाँच सौ ब्राह्मण का प्रतिदिन भोजन होगा।

बाबू दीनानाथ- तो कहिये तो कोई हलवाई लगा दिया जाए। राधे हलवाई पेड़े और लड्डू बहुत अच्छे बनाता है।

भृगुदत्त- जो पूजा मैं कराऊँगा उसमें पेड़ा खाना वर्जित है। अधिक इमरती का सेवन हो उतना ही कार्य सिद्ध हो जाता है।

इस पर पंड़ित जी के एक चेले ने कहा- गुरु जी! आज तो आप ने न्याय का पाठ देते समय कहा था कि पेड़े के साथ दही मिला दिया जाए तो उसमें कोई दोष नहीं रहता।

भृगुदत्त- (हँसकर) हाँ-हाँ अब स्मरण हुआ। मनु जी ने इस श्लोक में इस बात का प्रमाण दिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीनानाथ- (मुसकराकर) महाराज! चेला तो बड़ा तीव्र है।

सेठ जी- यह अपने गुरु जी से बाजी ले जायेगा।

भृगुदत्त- अब की इसने एक यज्ञ में दो सेर पूरियाँ खायीं। उस दिन से मैंने इसका नाम अंतिम परीक्षा में लिख दिया।

चेला- मैं अपने मन से थोड़ा ही उठा। अगर जजमान हाथ जोड़कर उठा न देते तो अभी सेर भर और खा के उठता।

दीनानाथ- क्यों न हो पट्ठे! जैसे गुरु वैसे चेला!

सेठ जी- महाराज, अब हमको आज्ञा दीजिए। आज हलवाई आ जाएगा। मुनीम जी भी उसके साथ लगे रहेंगे। जो सौ दो सौ का काम लगे मुनीम जी से फरमा देना। मगर बात तब है कि आप भी इस विषय में जान लड़ा दें।

पंडित जी ने सिर का कद्दू हिलाकर कहा- इसमें आप कोई खटका न समझिये। एक सप्ताह में अगर दुष्ट का नाश न हो जाए तो भृगुदत्त नहीं। अब आपको पूजन की विधि भी बता ही दूँ। सुनिए तांत्रिक विद्या में एक मंत्र एसा भी है जिसके जागने से बैरी की आयु क्षीण होती है। अगर दस आदमी प्रति दिवस उसका पाठ करें तो आयु में दो पहर की हानि होगी। अगर सौ आदमी पाठ करें तो दस दिन की हानि होगी।

यदि पाँच सौ पाठ नित्य हों तो हर दिन पाँच वर्ष आयु घटती है।

सेठ जी- महाराज, आपने इस घड़ी एसी बात कही कि हमारा चोला मस्त हो गया।

दीनानाथ- कृपा-सिन्धु, आप धन्य हो! आप धन्य हो!

बहुत से आदमी- एक बार बोलो- पंडित भृगुदत्त की जय!

बहुत से आदमी- एक बार बोलो- दुष्टों की छै! छै!!

इस तरह कोलाहल मचाते हुए लोग अपने-अपने घरों को लौटे। उसी दिन राधे हलवाई पंडित जी के मकान पर जा डटा। पूजा-पाठ होने लगे। पाँच सौ भुक्कड़ एकत्र हो गये और दोनों जून माल उड़ाने लगे। धीरे-धीरे पाँच सौ से एक हजार नम्बर पहुँचा पूजा-पाठ कौन करता है। सबेरे से भोजन का प्रबन्ध करते-करते दोपहर हो जाता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और दोपहर से भंग-बूटी छानते रात हो जाती थी। हाँ पंडित भृगुदत्त दास का नाम पूरे शहर में उजागर हो रहा था। चारों ओर उनकी बड़ाई गाई जा रही थी। सात दिन यही अंधा-धुंध मचा रहा। यह सब कुछ हुआ। मगर बाबू अमृतराय का बाल बाँका न हो सका। कहीं चमार के सरापे डागर मिलते हैं। ऐसे आँख के अंधे और गाँठ के पुरे न फँसे तो भृगुदत्त जैसे गुगो को चखौतिया कौन करायें। सेठ जी के आदमी तिल-तिल पर अमृतराय के मकान पर दौड़ते थे कि देखें कुछ जंत्र-मंत्र का फल हुआ कि नहीं। मगर सात दिन के बीतने पर कुछ फल हुआ तो यही कि अमृतराय की वकालत सदा से बढ़कर चमकी हुई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 11
एक स्त्री के दो पुरुष नहीं हो सकते

प्रेमा का ब्याह हुए दो महीने से अधिक बीत चुके हैं मगर अभी तक उसकी अवस्था वही है जो कुँवारेपन में थी। वह हरदम उदास और मलिन रहती है। उसका मुख पीला पड़ गया। आँखें बैठी हुई, सर के बाल बिखरे, उसके दिल में अभी तक बाबू अमृतराय की मुहब्बत बनी हुई है। उनकी मूर्ति हरदम उसकी आँखों के सामने नाचा करती है। वह बहुत चाहती है कि उनकी सूरत हृदय से निकाल दे मगर उसका कुछ बस नहीं चलता। यद्यपि बाबू दाननाथ उससे सच्चा प्रेम रखते हैं और बड़े सुन्दर हँसमुख, मिलनसार मनुष्य हैं। मगर प्रेमा का दिल उनसे नहीं मिलता। वह उनसे प्रेम-भाव दिखाने में कोई बात उठा नहीं रखती। जब वह मौजूद होते हैं तो वह हँसती भी है। बातचीत भी करती है। प्रेम भी जताती है। मगर जब वह चले जाते हैं तब उसके मुख पर फिर उदासी छा जाती है। उसकी सूरत फिर वियोगिन की-सी हो जाती है। अपने मैके में उसे रोने की कोई रोक-टोक न थी। जब चाहती और जब तक चाहती, रोया करती थी। मगर यहाँ रो भी नहीं सकती। या रोती भी तो छिपकर। उसकी बूढ़ी सास उसे पान की तरह फेरा करती है। केवल इसलिए नहीं कि वह उसको पास और दबाव मानती है बल्कि इसलिए कि वह अपने साथ बहुत-सा दहेज लायी है। उसने सारी गृहस्थी पतोहू के ऊपर छोड़ रखी है और हरदम ईश्वर से विनय किया करती है कि पोता खिलाने के दिन जल्द आयें।

बेचारी प्रेमा की अवस्था बहुत ही शोचनीय और करुणा के योग्य है। वह हँसती है तो उसकी हँसी में रोना मिला होता है। वह बातचीत करती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो ऐसा जान पड़ता है कि अपने दुःख की कहानी कह रही है। बनाव-सिंगार से उसकी तनिक भी रुचि नहीं है। अगर कभी सास के कहने-सुनने से कुछ सजावट करती भी है तो उस पर नहीं खुलता। ऐसा मालूम होता है कि इसकी कोमल गात में जो मोहिन थी वह रूठकर कहीं और चली गयी। वह बहुधा अपने ही कमरे में बैठी रहती है। हाँ, कभी-कभी गाकर दिल बहलाती है। मगर उसका गाना इसलिए नहीं होता कि उससे चित्त को आनन्द प्राप्त हो। बल्कि वह मधुर स्वरों में विलाप और विषाद के राग गाया करती है।

बाबू दाननाथ इतना तो शादी करने के पहले ही जानते थे कि प्रेमा अमृतराय पर जान देती है। मगर उन्होंने समझा था कि उसकी प्रीति साधारण होगी। जब मैं उसको ब्याह कर लाऊँगा, उससे स्नेह बढ़ाऊँगा, उस पर अपने को निछावर करूँगा तो उसके दिल से पिछली बातें मिट जाएंगी और फिर हमारी बड़े आनन्द से कटेगी। इसलिए उन्होंने एक महीने के लगभग प्रेमा के उदास और मलिन रहने की कुछ परवाह न की। मगर उनको क्या मालूम था कि स्नेह का वह पौधा जो प्रेम-रस से सींच-सींचकर परवान चढ़ाया गया है महीने-दो महीने में कदापि नहीं मुरझा सकता। उन्होंने दूसरे महीने भर भी इस बात पर ध्यान न दिया। मगर जब अब भी प्रेमा के मुख से उदासी की घटा फटते न दिखायी दी तब उनको दुःख होने लगा। प्रेम और ईर्ष्या का चोली-दामन का साथ है। दाननाथ सच्चा प्रेम देखते थे। मगर सच्चे प्रेम के बदले में सच्चा प्रेम चाहते भी थे। एक दिन वह मालूम से सबेर मकान पर आये और प्रेमा के कमरे में गये तो देखा कि वह सर झुकाये हुए बैठी है। इनको देखते ही उसने सर उठाया और चोट आँचल से आँसू पोंछ उठ खड़ी हुई और बोली- मुझे आज न मालूम क्यों लाला जी की याद आ गयी थी। मैं बड़ी देर से रो रही हूँ।

दाननाथ ने उसको देखते ही समझ लिया था कि अमृतराय के वियोग में आँसू बहाये जा रहे हैं। इस पर प्रेमा ने जो यों हवा बतलायी तो उनके बदन में आग लग गयी। तीखी चितवनों से देखकर बोले-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी आँखें हैं और तुम्हारे आँसू, जितना रोया जाय रो लो। मगर मेरी आँखों में धूल मत झोंको।

प्रेमा इस कठोर वचन को सुनकर चौंक पड़ी और बिना कुछ उत्तर दिये पति की ओर डबडबाई हुई आँखों से ताकने लगी। दाननाथ ने फिर कहा- क्या ताकती हो, प्रेमा? मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूँ, जैसा तुम समझती हो। मैंने भी आदमी देखे हैं और मैं भी आदमी पहचानता हूँ। मैं तुम्हारी एक-एक बात को गौर से देखता हूँ मगर जितना ही देखता हूँ उतना ही चित्त को दु:ख होता है। क्योंकि तुम्हारा बर्ताव मेरे साथ फीका है। यद्यपि तुमको यह सुनना अच्छा न मालूम होगा मगर हारकर कहना पड़ता है कि तुमको मुझसे लेश-मात्र भी प्रेम नहीं है। मैंने अब तक इस विषय में जबान खोलने का साहस नहीं किया था और ईश्वर जानता है कि तुमसे किस कदर मुहब्बत करता हूँ। मगर मुहब्बत सब कुछ सह सकती है, रुखाई नहीं सह सकती और वह भी कैसी रुखाई जो किसी दूसरे पुरुष के वियोग में उत्पन्न हुई हो। ऐसा कौन बेहया, निर्लज्ज आदमी होगा जो यह देखे कि उसकी पत्नी किसी दूसरे के लिए वियोगिन बनी हुई है और उसका लहू उबलने न लगे और उसके हृदय में क्रोध कि ज्वाला धधक न उठे। क्या तुम नहीं जानती हो कि धर्मशास्त्र के अनुसार स्त्री अपने पति के सिवाय किसी दूसरे मनुष्य की ओर कुदृष्टि से देखने से भी पाप की भीगी हो जाती है और उसका पतिव्रत भंग हो जाता है।

प्रेमा तुम एक बहुत ऊँचे घराने की बेटी हो और जिस घराने की तुम बहू हो वह भी इस शहर में किसी से हेठा नहीं। क्या तुम्हारे लिए यह शर्म की बात नहीं है कि तुम एक बाजारों की घूमने वाली राँड ब्राह्मणी के तुल्य भी न समझी जाओ और वह कौन है जिसने तुम्हारा ऐसा निरादर किया? वही अमृतराय, जिसके लिए तुम आठों पहर मोती पिरोया करती हो। अगर उस दुष्ट के हृदय में तुम्हारा कुछ भी प्रेम होता तो वह तुम्हारे पिता के बार-बार कहने पर भी तुमको इस तरह धता न बताता। कैसे खेद की बात है। इन्हीं आँखों ने उसे तुम्हारी तसवीर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पैरों से रौंदते हुए देखा है। क्या तुमको मेरी बातों का विश्वास नहीं आता? क्या अमृतराय के कर्तव्य से नहीं विदित होता है की उनको तुम्हारी रत्ती-भर भी परवाह नहीं हैं क्या उन्होंने डंके की चोट पर नहीं साबित कर दिया कि वह तुमको तुच्छ समझते हैं? माना कि कोई दिन ऐसा था कि वह विवाह करने की अभिलाषा रखते थे। पर अब तो वह बात नहीं रही। अब वह अमृतराय है जिसकी बदचलनी की सारे शहर में धूम मची हुई है। मगर शोक और अति-शोक की बात है कि तुम उसके लिए आँसू बहा-बहाकर अपने मेरे खानदान के माथे कालिख का टीका लगाती हो।

दाननाथ मारे क्रोध के काँप रहे थे। चेहरा तमतमाया हुआ था। आँखों से चिंगारी निकल रही थी। बेचारी प्रेमा सिर नीचा किये हुए खड़ी रो रही थी। पति की एक-एक बात उसके कलेजे के पार हुई जाती थी। आखिर न रहा गया। दाननाथ के पैरों पर गिर पड़ी और उन्हें गर्म-गर्म आँसू की बूंदों से भिगो दिया। दाननाथ ने पैर खसका लिया। प्रेमा को चारपाई पर बैठा दिया ओर बोले- प्रेमा, रोओ मत। तुम्हारे रोने से मेरे दिल पर चोट लगती है। मैं तुमको रुलाना नहीं चाहता। परन्तु उन बातों को कहे बिना रह भी नहीं सकता। अगर यह दिल में रह गई तो नतीजा बुरा पैदा करेगी। कान खोलकर सुनो। मैं तुमको प्राण से अधिक प्यार करता हूँ। तुमको आराम पहुँचाने के लिए हाजिर हूँ। मगर तुमको सिवाय अपने किसी दूसरे का ख्याल करते नहीं देख सकता। अब तक न जाने कैसे-कैसे मैंने दिल को समझाया। मगर अब वह मेरे बस का नहीं। अब वह यह जलन नहीं सह सकता। मैं तुमको चेताये देता हूँ कि यह रोना-धोना छोड़ो। यदि इस चेताने पर भी तुम मेरी बात न मानो तो फिर मुझे दोष मत देना। बस इतना कहे देता हूँ कि स्त्री के दो पति कदापि जीते नहीं रह सकते।

यह कहते हुए बाबू दाननाथ क्रोध में भरे बाहर चले आये। बेचारी प्रेमा को ऐसा मालूम हुआ कि मानो किसी ने कलेजे में छुरी मार दी। उसको आज तक किसी ने भूलकर भी कड़ी बात नहीं सुनायी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी भावज कभी-कभी ताने दिया करती थी मगर वह ऐसा न होते थे। वह घंटों रोती रही। इसके बाद उसने पति की सारी बातों पर विचार करना शुरु किया और उसके कानों में यह शब्द गूँजने लगे- एक स्त्री के दो पति कदापि जीते नहीं रह सकते।

इनका क्या मतलब है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय - 12
शोकदायक घटना

पूर्णा, रामकली और लक्ष्मी तीनों बड़े आनन्द से हित-मिलकर रहने लगी। उनका समय अब बातचीत, हँसी-दिल्लगी में कट जाता। चिन्ता की परछाई भी न दिखायी देती। पूर्णा दो-तीन महीने में निखर कर ऐसी कोमलांगी हो गयी थी कि पहिचानी न जाती थी। रामकली भी खूब रंग-रूप निकाले थी। उसका निखार और यौवन पूर्णा को भी मात करता था। उसकी आँखों में अब चंचलता और मुख पर वह चपलता न थी जो पहले दिखायी देती थी। बल्कि अब वह अति सुकुमार कामिनी हो गयी थी। अच्छे संग में बैठते-बैठते उसकी चाल-ढाल में गम्भीरता और धैर्य आ गया था। अब वह गंगा स्नान और मन्दिर का नाम भी न लेती। अगर कभी-कभी पूर्णा उसको छेड़ने के लिए पिछली बातें याद दिलाती तो वह नाक-भौं चढ़ा लेती, रूठ जाती। मगर इन तीनों में लक्ष्मी का रूप निराला था। वह बड़े घर में पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला था और उसका बड़ी उत्तम रीति पर शिक्षा दी थी। उसका कोमल गत, उसकी मनोहर वाणी, उसे अपनी सखियों में रानी की पदवी दिलाती थी। वह गाने-बजाने में निपुण थी और अपनी सखियों को यह गुण सिखाया करती थी। इसी तरह पूर्णा को अनेक प्रकार के व्यंजन बनाने का व्यसन था। बेचारी रामकली के हाथों में यह सब गुण न थे। हाँ, वह हँसौड़ी थी और अपनी रसीली बातों से सखियों को हँसाया करती थी।

एक दिन शाम को तीनों सखियाँ बैठी बातचीत कर रही थी कि पूर्णा ने मुसकराकर रामकली से पूछा- क्यों रम्मन, आजकल मन्दिर पूजा करने नहीं जाती हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामकली ने झेंपकर जवाब दिया- अब वहाँ जाने को जी नहीं चाहता। लक्ष्मी रामकली का सब वृत्तान्त सुन चुकी थी। वह बोली- हाँ बुआ, अब तो हँसने-बोलने का सामान घर पर ही मौजूद है।

रामकली- (तिनककर) तुमसे कौन बोलता है, जो लगी जहर उगलने। बहिन, इनको मना कर दो, यह हमारी बातों में न बोला करें। नहीं तो अभी कुछ कह बैठूँगी तो रोती फिरेंगी।

पूर्णा- मत लछिमी (लक्ष्मी) सखी को मत छेड़ो।

लक्ष्मी- (मुसकराकर) मैंने कुछ झूठ थोड़े ही कहा था जो इनको ऐसा कडुआ मालूम हुआ।

रामकली- जैसी आप है वैसी सबको समझती है।

पूर्णा- लछिमी, तुम हमारी सखी को बहुत दिक किया करती हो। तुम्हारी बाल से वह मन्दिर में जाती थी।

लक्ष्मी- जब मैं कहती हूँ तो रोती काहे को है।

पूर्णा- अब यह बात उनको अच्छी नहीं लगती तो तुम काहे को कहती हो। खबरदार, अब फिर मन्दिर का नाम मत लेना।

लक्ष्मी- अच्छा रम्मन, हमें एक बात दो तो, हम फिर तुम्हें कभी न छेड़े-महन्त जी ने मंत्र देते समय तुम्हारे कान में क्या कहा? हमारा माथा छुए जो झूठ बोले।

रामकली- (चिटककर) सुना लछिमी, हमसे शरारत करोगी तो ठीक न होगा। मैं जितना ही तरह देती हूँ, तुम उतनी ही सर चढ़ी जाती हो।

पूर्णा- ऐं तो बतला क्यों नहीं देती, इसमें क्या हर्ज है?

रामकली- कुछ कहा होगा, तुम कौन होती हो पूछने वाली? बड़ी आयीं वहाँ से सीता बन के।

पूर्णा- अच्छा भाई, मत बताओ, बिगड़ती काहे को हो?

लक्ष्मी- बताने की बात ही नहीं बतला कैसे दें।

रामकली- कोई बात भी हो कि यों ही बतला दूँ।

पूर्णा- अच्छा यह बात जाने दो। बताओ उस तंबोली ने तुम्हें पान खिलाते समय क्या कहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामकली- फिर छेड़खानी की सूझी। मैं भी पते की बात कह दूँगी तो लजा जाओगी।

लक्ष्मी- तुम्हें हमारी कसम सखी, जरूर कहो। यह हम लोगों की बातें तो पूछ लेती है, अपनी बातें एक नहीं कहतीं।

रामकली- क्यों सखी, कहूँ? कहती हूँ, बिगड़ना मत।

पूर्णा- कहो, साँच को आँच क्या।

रामकली- उस दिन घाट पर तुमने किसे छाती से लिपटा लिया था।

पूर्णा- तुम्हारा सर।

लक्ष्मी- समझ गयी। बाबू अमृतराय होंगे। क्यों है न?

यह तीनों सखियाँ इसी तरह हँस-बोल रहीं थीं कि एक बूढ़ी औरत ने आकर पूर्णा को आशीर्वाद दिया और उसके हाथ में एक खत रख दिया। पूर्णा ने अक्षर पहिचाने, प्रेमा का पत्र था। उसमें यह लिखा था-

"प्यारी पूर्णा तुमसे भेंट करने को बहुत जी चाहता है। मगर यहाँ घर से बाहर पाँव निकालने की मजाल नहीं। इसलिए यह खत लिखती हूँ। मुझे तुमसे एक अति आवश्यक बात करनी है। जो पत्र में नहीं लिख सकती हूँ। अगर तुम बिल्लो को इस पत्र का जवाब देकर भेजो तो जबानी कह दूँगी। देखो देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। आठ बजे के पहले बिल्लो यहाँ अवश्य आ जाए।

तुम्हारी सखी
प्रेमा"

पत्र पढ़ते ही पूर्णा का चित्त व्याकुल हो गया। चेहरे का रंग उड़ गया और अनेक प्रकार की शंकाएँ लगी। या नारायण अब क्या होने वाला है। लिखती है देखो देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। क्या बात है।

अभी तक वह कचहरी से नहीं लौटे। रोज तो अब तक आ जाया करते थे। इनकी यही बात तो हमको अच्छी नहीं लगती।

लक्ष्मी और रामकली ने जब उसको ऐसा व्याकुल देखा तो घबराकर बोलीं- क्या बहिन, कुशल तो है? इस पत्र में क्या लिखा है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा- क्या बताऊँ क्या लिखा है। रामकली, तुम जरा कमरे में जा के झाँको तो आये या नहीं अभी।

रामकली ने आकर कहा- अभी नहीं आये।

लक्ष्मी- अभी कैसे आयेंगे? आज तो तीन आदमी व्याख्यान देने गये हैं।

इसी घबराहट में आठ बजा। पूर्णा ने प्रेमा के पत्र का जवाब लिखा और बिल्लो को देकर प्रेमा को घर भेज दिया। आधा घंटा भी न बीता था कि बिल्लो लौट आयी। रंग उड़ा हुआ। बदहवास और घबरायी हुई। पूर्णा ने उसे देखते ही घबराकर पूछा- कहो बिल्लो, कुशल कहो।

बिल्लो (माथा ठोंककर) क्या कहूँ, बहू कहते नहीं बनता। न जाने अभी क्या होने वाला है।

पूर्णा- क्या कहा? कुछ चिट्ठी-पत्री तो नहीं दिया?

बिल्लो- चिट्ठी कहाँ से देती? हमको अन्दर बुलाते डरती थीं। देखते ही रोने लगी और कहा- बिल्लो, मैं क्या करूँ, मेरा जी यहाँ बिलकुल नहीं लगता। मैं पिछली बातें याद करके रोया करती हूँ। वह (दाननाथ) जब कभी मुझे रोते देख लेते हैं तो बहुत झल्लाते हैं। एक दिन मुझे बहुत जली-कटी सुनायी और चलते-समय धमकाकर कहा- एक औरत के दो चाहने वाले कदापि जीते नहीं रह सकते। यह कहकर बिल्लो चुप हो गयी। पूर्णा के समझ में पूरी बात न आयी। उसने कहा- चुप क्यों हो गयी? जल्दी कहो, मेरा दम रुका हुआ है।

बिल्लो- इतना कहकर वह रोने लगी। फिर मुझको नजदीक बुला के कान में कहा- बिल्लो, उसी दिन से मैं उनके तेवर बदले हुए देखती हूँ। वह तीन आदमियों के साथ लेकर रोज शाम को न जाने कहाँ जाते हैं। आज मैंने छिपकर उनकी बातचीत सुन ली। बारह बजे रात को जब अमृतराय पर चोट करने की सलाह हुई है। जब से मैंने यह सुना है, हाथों के तोते उड़े हुए हैं। मुझ अभागिनी के कारण न जाने कौन-कौन दुःख उठायेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्लो की जबानी यह बातें सुनकर पूर्णा के पैरों तले से मिट्टी निकल गयी। दाननाथ की तसवीर भयानक रूप धारण किये उसकी आँखों के सामने आकर खड़ी हो गयी।

वह उसी दम दौड़ती हुई बैठक में पहुँची। बाबू अमृतराय का वहाँ पता न था। उसने अपना माथा ठोंक बिल्लो से कहा- तुम जाकर आदमियों को कह दो। फाटक पर खड़े हो जाएँ और खुद उसी जगह एक कुर्सी पर बैठकर गुनने लगी कि अब उनको कैसे खबर करूँ कि इतने में गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनायी दी। पूर्णा का दिल बड़े जोर से धड़-धड़ करने लगा। वह लपक कर दरवाजे पर आयी और काँपती हुई आवाज से पुकार कर बोली- इतनी देर कहाँ लगायी? जल्दी आते क्यों नहीं?

अमृतराय जल्दी से उतरे और कमरे के अन्दर कदम रखते ही पूर्णा ऐसे लिपट गयी मानो उन्हें किसी के वार से बचा रही है और बोली- इतनी जल्दी क्यों आये, अभी तो बहुत सवेरा है।

अमृतराय- प्यारी, क्षमा करो। आज जरा देर हो गयी।

पूर्णा- चलिए रहने दीजिए। आप तो जाकर सैर-सपाटे करते हैं। यहाँ दूसरों की जान हलकान होती है।

अमृतराय- क्या बतायें, आज बात ऐसी आ पड़ी कि रुकना पड़ा। आज माफ करो। फिर ऐसी देर न होगी।

यह कहकर वह कपड़े उतारने लगे। मगर पूर्णा वही खड़ी रही जैसे कोई चौंकी हुई हिरणी। उसकी आँखें दरवाजे की तरफ लगी थीं। अचानक उसको किसी मनुष्य की परछाई दरवाजे के सामने दिखायी पड़ी। और वह बिजली की राह चमककर दरवाजा रोककर खड़ी हो गयी। देखा तो कहार था। जूता खोलने आ रहा था। बाबू साहब ने ध्यान से देखा तो पूर्णा कुछ घबरायी हुई दिखायी दी। बोले- प्यारी, आज तुम कुछ घबरायी हुई हो।

पूर्णा- सामने वाला दरवाजा बन्द करा दो।

अमृतराय- गरमी हो रही है। हवा रुक जाएगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा- यहाँ न बैठने दूँगी। ऊपर चलो।

अमृतराय- क्यों बात क्या है? डरने की कोई वजह नहीं।

पूर्णा- मेरा जी यहाँ नहीं लगता। ऊपर चलो। वहाँ चाँदनी में खूब ठंडी हवा आ रही होगी।

अमृतराय मन में बहुत सी बातें सोचते-सोचते पूर्णा के साथ कोठे पर गये। खुली हुई छत थी। कुर्सियाँ धरी हुई थी। नौ बजे रात का समय, चैत्र के दिन, चाँदनी खूब छिटकी हुई, मन्द-मन्द शीतल वायु चल रही थी। बगीचे के हरे-भरे वृक्ष धीरे-धीरे झूम-झूमकर अति शोभायमान हो रहे थे। जान पड़ता था कि आकाश ने ओस की पतली हलकी चादर सब चीजों पर डाल दी है। दूर-दूर के धुंधले-धुंधले पेड़ ऐसे मनोहर मालूम होते हैं मानो वह देवताओं के रमण करने के स्थान हैं। या वह उस तपोवन के वृक्ष हैं जिनकी छाया में शकुन्तला और उसकी सखियाँ भ्रमण किया करती थीं और जहाँ उस सुन्दरी ने अपने जान के आधार राजा दुष्यन्त को कमल के पत्ते पर प्रेम-पाती लिखी थी।

पूर्णा और अमृतराय कुर्सियों पर बैठ गये। ऐसे सुखदाय एकांत में चन्द्रमा की किरणों ने उनके दिलों पर आक्रमण करना शुरु किया। अमृतराय ने पूर्णा के रसीले अधर चूमकर कहा- आज कैसी सुहावनी चाँदनी है।

पूर्णा- मेरा जी इस घड़ी चाहता है कि मैं चिड़िया होती।

अमृतराय- तो क्या करतीं।

पूर्णा- तो उड़कर उन दूर वाले पेड़ों पर जा बैठती।

अमृतराय- अहा हा! देखा लक्ष्मी कैसा अलाप रही है।

पूर्णा- लक्ष्मी का-सा गाना मैंने कहीं नहीं सुना। कोयल की तरह कूकती है। सुनो कौन गीत है। सुना मोरी सुधि जनि बिसरैहो, महराज।

अमृतराय- जी चाहता है, उसे यहीं बुला लूँ।

पूर्णा- नहीं। यहाँ गाते लजायेगी। सुनो। इतनी विनय मैं तुमसे करत हौं दिन-दिन स्नेह बढ़ैयो महराज।

अमृतराय- हाय जी बेचैन हुआ जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णा- जैसे कोई कलेजे में बैठा चुटकियाँ ले रहा हो। कान लगाओ, कुछ सुना, कहती है। मैं मधुमाती अरज करत हूँ नित दिन पत्तियाँ पठैयो, महराज।

अमृतराय- कोई प्रेम-रस की मोती अपने सजन से कह रही है।

पूर्णा- कहती है नित दिन पत्तियाँ पठैयो, महराज हाय बेचारी प्रेम में डूबी हुई है।

अमृतराय- चुप हो गयी। अब वह सन्नटा कैसा मनोहर मालूम होता है।

पूर्णा- प्रेमा भी बहुत अच्छा गाती थी। मगर नहीं।

प्रेमा का नाम जबान पर आते ही पूर्णा यकायक चौंक पड़ी और अमृतराय के गले में हाथ डालकर बोली- क्यों प्यारे तुम उन गड़बड़ी के दिनों में हमारे घर जाते थे तो अपने साथ क्या ले जाया करते थे।

अमृतराय- (आश्चर्य से) क्यों? किसलिए पूछती हो?

पूर्णा- यों ही ध्यान आ गया।

अमृतराय- अंग्रेजी तमंचा था। उसे पिस्तौल कहते हैं।

पूर्णा- भला किसी आदमी के पिस्तौल की गोली लगे तो क्या हो।

अमृतराय- तुरंत मर जाए।

पूर्णा- मैं चलाना सीखूँ तो आ जाए।

अमृतराय- तुम पिस्तौल चलाना सीखकर क्या करोगी? (मुसकराकर) क्या नैनों की कटारी कुछ कम है? इस दम यही जी चाहता है कि तुमको कलेजा में रख लूँ।

पूर्णा- (हाथ जोड़कर) मेरा तुमसे यही विनय है- मेरा सुधि जनि बिसरैहो, महाराज।

यह कहते-कहते पूर्णा की आँखों में नीर भर आया। अमृतराय। अमृतराय भी गद्‌गद्‌ स्वर हो गये और उसको खूब भेंच-भेंच प्यार किया, इतने में बिल्लो ने आकर कहा- चलिए रसोई तैयार है।

अमृतराय तो उधर भोजन पाने गये और पूर्णा ने इनकी अलमारी खोलकर पिस्तौल निकाल ली और उसे उलट-पुलट कर गौर से देखने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब अमृतराय अपने दोनों मित्रों के साथ भोजन खाकर लौटे और पूर्णा को पिस्तौल लिये देखा तो जीवननाथ ने मुसकराकर पूछा- क्यों भाभी, आज किसका शिकार होगा?

पूर्णा- इसे कैसे छोड़ते हैं, मेरे तो समझ में ही नहीं आता।

जीवननाथ- लाओ मैं बता दूँ।

यह कहकर जीवननाथ ने पिस्तौल हाथ में ली। उसमें गोली भरी और बरामदे में आये और एक पेड़ के तने में निशाना लगाकर दो-तीन फायर किये। अब पूर्णा ने पिस्तौल हाथ में ली। गोली भरी और निशाना लगाकर दागा, मगर ठीक न पड़ा। दूसरा फायर फिर किया। अब की निशाना ठीक बैठा। तीसरा फायर किया। वह भी ठीक। पिस्तौल रख दी और मुसकराते हुए अन्दर चली गयी। अमृतराय ने पिस्तौल उठा लिया और जीवननाथ से बोले- कुछ समझ में नहीं आता कि आज इनको पिस्तौल की धुन क्यों सवार है।

जीवननाथ- पिस्तौल रखी देख के छोड़ने को जी चाहा होगा।

अमृतराय- नहीं, आज जब से मैं आया हूँ, कुछ घबराया हुआ देख रहा हूँ।

जीवननाथ- आपने कुछ पूछा नहीं।

अमृतराय- पूछा तो बहुत मगर जब कुछ बतलायें भी, हूँ-हाँ कर के टाल गई।

जीवननाथ- किसी किताब में पिस्तौल की लड़ाई पढ़ी होगी। और क्या?

प्राणनाथ- यही मैं भी समझता हूँ।

जीवननाथ- सिवाय इसके और हो ही क्या सकता है?

कुछ देर तक तीनों आदमी बैठे गप-शप करते रहे। जब दस बजने को आये तो लोग अपने-अपने कमरों में विश्राम करने चले गये। बाबू साहब भी लेटे। दिन-भर के थके थे। अखबार पढ़ते-पढ़ते सो गये। मगर बेचारी पूर्णा की आँखों में नींद कहाँ? वह चार बजे तक एक कहानी पढ़ती रही। जब तमाम सोता पड़ गया और चारों तरफ सन्नाटा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छा गया तो उसे अकेले डर मालूम होने लगा। डरते ही डरते उठी और चारों तरफ के दरवाजे बन्द कर लिये। मगर जवानी की नींद, बहुत रोकने पर भी एक झपकी आ ही गयी। आधी घड़ी भी न बीती थी कि भय में सोने के कारण उसे एक अति भंयकर स्वप्न दिखायी दिया। चौंककर उठ बैठी, हाथ-पाँव थर-थर काँपने लगे। दिल में धड़कन होने लगी। पति का हाथ पकड़कर चाहती थी कि जगा दे। मगर फिर यह समझकर कि इनकी प्यारी नींद उचट जाएगी तो तकलीफ होगी, उनका हाथ छोड़ दिया। अब इस समय उसकी जो अवस्था है वर्णन नहीं की जा सकती। चेहरा पीला हो रहा है, डरी हुई निगाहों से इधर-उधर ताक रही है, पत्ता भी खड़खड़ाता है ता चौंक पड़ती है। कभी अमृतराय के सिरहाने खड़ी होती है, कभी पैताने। लैम्प की धुंधली रोशनी में वह सन्नाटा और भी भयानक मालूम हो रहा है। तसवीरें जो दीवारों से लटक रही हैं, इस समय उसको घूरते हुए मालूम होती हैं। उसके सब रोंगटे खड़े हैं। पिस्तौल हाथ में लिये घबरा-घबरा कर घड़ी की तरफ देख रही है। यकायक उसको ऐसा मालूम हुआ कि कमरे की छत दबी जाती है। फिर घड़ी की सुइयों को देखा। एक बज गया था इतने में ही उसको कई आदमियों के पाँव की आहट मालूम हुई। कलेजा बांसों उछालने लगा। उसने पिस्तौल सम्हाली। वह समझ गयी कि जिन लोगों के आने का खटका था वह आ गये। तब भी उसको विश्वास था कि इस बन्द कमरे में कोई न आ सकेगा। वह कान लगाये पैरों की आहट ले रही थी कि अकस्मात दरवाजे पर बड़े जोर से धक्का लगा और जब तक वह बाबू अमृतराय को जगाये कि मजबूत किवाड़ आप ही आप खुल गये और कई आदमी धड़धड़ाते हुए अन्दर घुस आये। पूर्णा ने पिस्तौल सर की। तड़ाके की आवाज हुई। कोई धम्म से गिर पड़ा, फिर कुछ खट-खट होने लगा। दो आवाजें पिस्तौल के छुटने की और हुई। फिर धमाका हुआ। इतने में बाबू अमृतराय चिल्लाये। दौड़ो-दौड़ो, चोर, चोर। इस आवाज के सुनते ही दो आदमी उनकी तरफ लपके। मगर इतने में दरवाजे पर लालटेन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी नजर आयी और प्राणनाथ और जीवननाथ हाथों में सोटे लिए आ पहुँचे। चोर भागने लगे, मगर दो के दोनों पकड़ लिए गये। जब लालटेनें लेकर जमीन पर देखा तो दो लाशे दिखायी दीं। एक तो पूर्णा की लाश थी और दूसरी एक मर्द की। यकायक प्राणनाथ ने चिल्लाकर कहा- अरे यह तो बाबू दाननाथ हैं।

बाबू अमृतराय ने एक ठंडी साँस भरकर कहा- आज जब मैंने उसके हाथ में पिस्तौल देखा तभी से दिल में एक खटका-सा लगा हुआ था। मगर, हाय क्या जानता था कि ऐसी आपत्ति आने वाली है।

प्राणनाथ- दाननाथ तो आपके मित्रों में थे।

अमृतराय- मित्रों में जब थे तब थे। अब तो शत्रु हैं।

पूर्णा को दुनिया से उठे दो वर्ष बीत गया है। साँझ का समय है। शीतल-सुगंधित चित्त को हर्ष देने वाली हवा चल रही है। सूर्य की विदा होने वाली किरणें खिड़की से बाबू अमृतराय के सजे हुए कमरे में जाती हैं और पूर्णा के पूरे कद की तसवीर के पैरों को चूम-चूम कर चली जाती हैं। उनकी लाली से सारा कमरा सुनहरा हो रहा है। रामकली और लक्ष्मी के मुखड़े इस समय मारे आनन्द के गुलाब की तरह खिले हुए हैं। दोनों गहने-पाते से लौस हैं और जब वह खिड़की से बाहर निकलती हैं और सुनहरी किरणें उनके गुलाब-से मुखड़ों पर पड़ती है तो जान पड़ता है कि सूर्य आप बलैया ले रहा है। वह रह-रहकर ऐसी चितवनों से ताकती हैं जैसी किसी की रही हैं। यकायक रामकली ने खुश होकर कहा- सुखी वह देखो आ गये। उनके कपड़े कैसे सुन्दर मालूम पड़ते हैं।

एक अति सुन्दर फिटन चम-चम करती हुई फाटक के अंदर दाखिल होती है और बँगले के बरामदे में आकर रुकती है। बाबू अमृतराय उसमें से उतरते हैं। मगर अकेले नहीं। उनका एक हाथ प्रेमा के हाथ में है। यद्यपि बाबू साहब का सुन्दर चेहरा कुछ पीला हो रहा है। मगर होंठों पर हलकी-सी मुसकराहट झलक रही है और माथे पर केशर का टीका और गले में खूबसूरत हार और शोभा बढ़ा रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमा सुन्दरता की मूरत और जवानी की तसवीर हो रही है। जब हमने उसको पिछली बार देखा था तो चिन्ता और दुर्बलता के चिह्न मुखड़े से पाये जाते थे। मगर कुछ और ही यौवन है। मुखड़ा कुन्दन के समान दमक रहा है। बदन गदराया हुआ है। बोटी-बोटी नाच रही है। उसकी चंचलता देखकर आश्चर्य होता है कि क्या वही पीली मुँह और उलझे बाल वाली रोगिन है। उसकी आँखों में इस समय एक घड़े का नशा समाया हुआ है। गुलाबी जमीन की हरे किनारे वाली साड़ी और ऊदे रंग की कलोइयों पर चुनी हुई जाकेट उस पर खिल रही है। उस पर गोरी-गारी कलाइयों में जड़ाऊँ कड़े बालों में गुँथे हुए गुलाब के फूल, माथे पर लाल रोरी की गोल-बिंदी और पाँव में जरदोज के काम के सुन्दर में सुहागा हो रहे हैं। इस ढंग के सिंगार से बाबू साहब को विशेष करके लगाव है क्योंकि पूर्णा देवी की तसवीर भी ऐसी ही कपड़े पहिने दिखायी देती है और उसे देखकर कोई मुश्किल से कह सकता है कि प्रेमा ही की सूरत आइने में उतरकर ऐसा यौवन नहीं दिखा रही हैं।

अमृतराय ने प्रेमा को एक मखमली कुर्सी पर बिठा दिया और मुसकराकर बोले- प्यारी प्रेमा आज मेरी जिन्दगी का सबसे मुबारक दिन है।

प्रेमा ने पूर्णा की तसवीर की तरफ मलिन चितवनों से देखकर कहा- हमारी जिन्दगी का क्यों नहीं कहते?

प्रेमा ने यह कहा था कि उसकी नजर एक लाल चीज पर जा पड़ी जो पूर्णा की तसवीर के नीचे एक खूबसूरत दीवारगीर पर धरी हुई थी। उसने लपककर उसे उठा लिया। और ऊपर का रेशमी गिलाफ हटाकर देखा तो पिस्तौल था।

बाबू अमृतराय ने गिरी हुई आवाज में कहा- यह प्यारी पूर्णा की निशानी है, इसी से उसने मेरी जान बचायी थी।

यह कहते-कहते उनकी आवाज काँपने लगी।

प्रेमा ने यह सुनकर उस पिस्तौल को चूम लिया और फिर बड़ी लिहाज के साथ उसी जगह पर रख दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने में दूसरी फिटन दाखिल होती है। और उसमें से तीन युवक हँसते हुए उतरते हैं। तीनों का हम पहचानते हैं।

एक तो बाबू जीवननाथ हैं, दूसरे बाबू प्राणनाथ और तीसरे प्रेमा के भाई बाबू कमला प्रसाद हैं।

कमला प्रसाद को देखते ही प्रेमा कुर्सी से उठ खड़ी हुई, जल्दी से घूँघट निकालकर सिर झुका लिया।

कमला प्रसाद ने बहिन को मुसकराकर छाती से लगा लिया और बोले- मैं तुमको सच्चे दिल से मुबारकबाद देता हूँ।

दोनों युवकों ने गुल मचाकर कहा- जलसा कराइये जलसा, यों पीछा न छूटेगा।

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....4527......
Dated.....19/3/2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुंशी प्रेमचंद का नाम धनपत राय था। मुंशी जी का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस के पास लमही नामक गांव में हुआ था। उन्होंने मध्यम वर्ग परिवार में जन्म लेने के कारण अभाव और असुविधाओं के बीच जन-जीवन को बहुत ही गहराई से देखा और अपना जीवन साहित्य के प्रति समर्पित कर दिया। उन्हें एक महान उपन्यासकार, कथाकार और बहुत सी उपाधियों से सम्मानित किया गया। 8 अक्टूबर सन् 1936 को मुंशी जी का बीमारी के कारण निधन हो गया।

प्रस्तुत उपन्यास 'प्रेमा' द्वारा मुंशी प्रेमचंद ने समाज में विधवा पुनर्विवाह के विषय पर चोट की है। इस उपन्यास में समाज सुधारक बाबू अमृतराय और प्रेमा के अथाह प्रेम को प्रस्तुत किया गया है। जो कि समाज की कुरीतियों के कारण अधूरा रहता है और इसी के चलते समाज से विमुख होकर बाबू अमृतराय एक विधवा से विवाह कर समाज के सामने एक नयी रीति को उजागर करते हैं।

www.maplepress.co.in
ISBN: 978-93-89225-21-1
maple press
₹ 95

e-book available

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant